इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को
मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

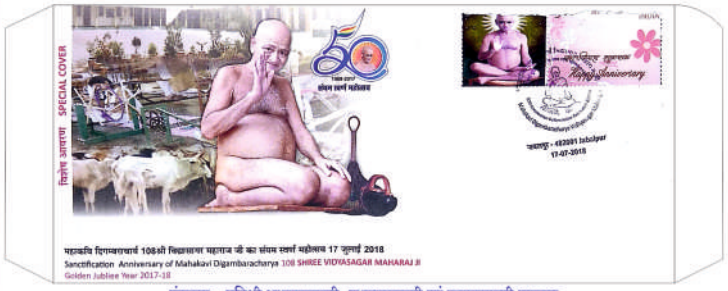

महाकवि दिगम्बराचार्य 108श्री विद्यासागर महाराज जी का संयम स्वर्ण महोत्सव 17 जुलाई 2018
Sanctification Anniversary of Mahakavi Digambaracharya 108 SHREE VIDYASAGAR MAHARAJ JI
Golden Jubilee Year 2017-18

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जून 2023	
16	शुक्रवार	त्रयोदशी	कृत्तिका
17	शनिवार	चतुर्दशी	रोहिणी
18	रविवार	अमावस	मृगशिरा
19	सोमवार	प्रतिपदा	आर्द्रा
20	मंगलवार	द्वितीया	पुनर्वस
21	बुधवार	तृतीया	पुष्य
22	गुरुवार	चतुर्थी	आश्लेषा
23	शुक्रवार	पंचमी	मघा दि/रा
24	शनिवार	षष्ठी	मघा
25	रविवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी
26	सोमवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी
27	मंगलवार	नवमी	सौम्य
28	बुधवार	दशमी	चित्रा
29	गुरुवार	एकादशी	स्वाती
30	शुक्रवार	द्वादशी	विशाखा
		जुलाई 2023	
1	शनिवार	त्रयोदशी	अनुराधा
2	रविवार	चतुर्दशी	ज्येष्ठा
3	सोमवार	पूर्णिमा	मूल
4	मंगलवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ़
5	बुधवार	द्वितीया/तृतीया	श्रवण
6	गुरुवार	चतुर्थी	धनिष्ठा
7	शुक्रवार	पंचमी	शतभिषा
8	शनिवार	षष्ठी	पूर्वाभाद्रपद
9	रविवार	सप्तमी	उत्तराभाद्रपद
10	सोमवार	अष्टमी	रेवती
11	मंगलवार	नवमी	अश्विनी
12	बुधवार	दशमी	भरणी
13	गुरुवार	एकादशी	कृत्तिका
14	शुक्रवार	द्वादशी	रोहिणी
15	शनिवार	त्रयोदशी	मृगशिरा

तीर्थंकर कल्याणक

24 जून: भगवान महावीरस्वामीजी गर्भ कल्याणक
25 जून: भगवान नेमिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
5 जुलाई: भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी गर्भ कल्याणक
12 जुलाई: भगवान कुंथुनाथ जी गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 जून: रोहिणी व्रत
23 जून: ऋषि पंचमी
25 जून: णमोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
26 जून: अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
02 जुलाई: रविव्रत प्रारंभ, चातुर्मास कलश स्थापना, चतुर्मास प्रारंभ, कर्म निर्जरा व्रत
03 जुलाई: अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
04 जुलाई: युग परिवर्तन दिवस, वीर शासन जयंती
05 जुलाई: रत्नावली, एकावली, द्विकावली
09 जुलाई: 16,23,30 रविव्रत
14 जुलाई: रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

17 जून: 05/42 बजे से 16/25 बजे तक
25 जून: 10/11 बजे से 29/44 बजे तक
30 जून: 16/10 बजे से 29/45 बजे तक
02 जुलाई: 13/18 बजे से 29/46 बजे तक
09 जुलाई: 05/48 बजे से 19/29 बजे तक
11 जुलाई: 05/49 बजे से 19/04 बजे तक
12 जुलाई: 19/43 बजे से 29/50 बजे तक

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: जून-21,28 जुलाई-10 मलमास
मशीनरी प्रारंभ : जून-14,21,28 जुलाई-6,10
वाहन खरीदने: जून-14,21,29 जुलाई-7,10,15
संपत्ति क्रय: जून-22,23,29,30
नवीन वस्त्राभूषण: जून-21,28,29,30 जुलाई-14

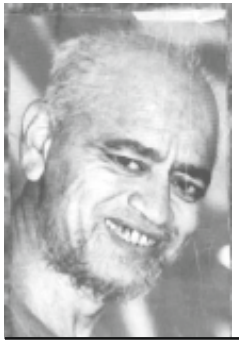

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 290 • जून 2023

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- श्री धवल का रचनाकाल 08
- हरिजन मंदिर प्रवेश के सम्बंध में मेरा स्पष्टीकरण 10
- जल्लीकट्टू पशु क्रूरता का अमानवीय त्यौहार 17
- आहारदान की महान परम्परा 19
- आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्धार 22
- बाबा की सीख- दो भवन क्यों 31
- मन की शुद्धि के लिये आवश्यक कार्य 50
- पंडित प्रवर डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य 52
- नवागढ़ पुराक्षेत्र का सर्वेक्षण एवं अन्वेषण 54
- **वरिष्ठ नागरिक:** वसीयत के अभाव में उत्तराधिकार का फैसला 57
- प्रथम ऋतु स्राव में विलम्ब (प्रायमरी ऐमेनोरिया) 59

बाल कहानी

- धर्मदेवी का दान 62

कविता

- शिरपुर नगरिया 15
- अरे आँख खोलो अंधरो नही 18
- सहज में मिलाये 30
- बालयती मनहर काया 56
- पर्वत पर्वत जंगल जंगल 32
- पंथ मुक्त हो तीर्थ 51

कहानी

- कमला की कहानी 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 16
चलो देखें यात्रा : 32 • आगम दर्शन :33• माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35
• कैरियर गाइड : 36 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये: 42 •दिशा बोध : 43
हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत माह भारत के उच्चतम न्यायालय में समलैंगिक विवाह पर बहस चल रही थी सब कुछ ठीक नहीं है यह अनुभव किया जा रहा था। प्रकृति विरूद्ध निष्फल वासना को मात्र बढ़ावा देने के पक्ष में तर्क तो प्रस्तुत किये जा सकते हैं किन्तु यह चिंतन भी आवश्यक है कि प्रेम देह से नहीं आत्मा से किया जाता है विवाह का अर्थ काम पुरुषार्थ से है। काम पुरुषार्थ संतान उत्पत्ति के लिये होता है। संतान के माध्यम से ही समाज सेवा राष्ट्र रक्षा मानवता धर्म का विस्तार संभव है। पुरुषार्थ शून्य कार्य को आवारा की तरह तिरस्करणीय माना जाता है । अब देखना है न्यायालय किस तरह निर्णय देते हैं जिससे कि भारतीय संस्कृति का सम्मान संरक्षित हो सकेगा।

अभिषेक जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, अयोध्या प्रसाद गोयलीय का लेख कायरता घोर पाप है संस्कार सागर के मई 2023 के अंक में पढ़ा अयोध्या प्रसाद गोयलीय कभी भारतीय ज्ञानपीठ के सम्पादक रहा करते थे। आपके साहित्य में गंभीरता, विषय वस्तु की रोचकता सहज प्राप्त होती है। कथा साहित्य में जहाँ आपने कीर्तिमान स्थापित किया वहीं आपकी शेर शायरी उर्दु साहित्य में धूम मची रही है। ''जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैंठ'' जैसी कालजयी रचनायें स्मृति पटल पर आये बिना रहती नही हैं विद्वान लेखक ने समाज में व्याप्त कायरता को पाप घोषित करते हुये अन्याय के प्रति दो दो हाथ करने के लिये आह्वान किया है। कायरता ही व्यक्ति को आत्मघात के घिनौने कृत्य तक ले जाती है । कायरता ही असत्य संभाषण कराती है। कायरता विषय कषाय के पोषण का आधार बनती है । कायरता घोर पाप है इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति जो वाइडन ने अपनी उम्मीदवारी सुनिश्चित कर दी है उनकी उम्र वर्तमान 80 वर्ष है। उम्र प्रभु भजन, आत्म चिंतन तथा जीवन मृत्यु के सच को समझने की है मानव सेवा के सूत्रों को जनमानस तक पहुँचाने और प्रसारित करने का श्रेष्ठ कार्य इसी उम्र में ही किया जा सकता है । भारत के महान शान्तिदूत ने युद्ध नहीं विश्व को बुद्ध दिया है परन्तु जो वाइडन इस उम्र में यदि पुनः राष्ट्रपति चुने जाते हैं तो चीन, रूस, अफगान आदि अनेक देशों से प्रतिशोध की भावना से भरे रहेंगे उनकी इस उम्र में विश्व उनसे क्रोध विरोध की नहीं क्षमा की अपेक्षा रखता है । परन्तु उनकी राष्ट्रपति की उम्मीदवारी संघर्ष और हिंसा को ही आमंत्रण देती नजर आ रही है।

श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के मई अंक मे प्रकाशित कहानी महत्वाकांक्षी योग्यता पर करारा प्रहार करती नजर आ रही है हैं। योग्यता को श्रेष्ठ मानकर प्रशंसा और सम्मान की असंतुलित अपेक्षा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ असमान व्यवहार की प्रेरणा ही देती है । परिवार के विवेकशील मुखिया को महत्वाकांक्षी यशस्वी सदस्य की भूमिका को कभी प्रोत्साहन नहीं देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि महत्वाकांक्षी सदस्य अन्य सदस्यों के आर्थिक सामाजिक मानसिक विकास में कभी सोच भी नहीं सकता है वह तो मात्र अपने विकास के बारे में चिंतन करता है अपनी ही कार्योपलब्धि को ही गिनाता रहता है। जिससे अन्य सदस्यों का भावनात्मक दमन होता है। कहानी की कथावस्तु प्रभावी और मर्मस्पर्शी है। कथावस्तु में पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही स्वाभाविक और सुबोध है ऐसी कहानी परिवार रचना को व्यवस्थित करने में बहुत सहयोगी होगी।

श्रीमती अनीता जैन, सागर

भक्ति तरंग जिन महिमा

नित पीज्यौ धीधारी, जिनवानि सुधासम जानके ।। टेक ।।
वीरमुखारविंदतैं प्रगटी, जन्मजरागत टारी ।
गौतमादिगुरु-उरघट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ।।1।। नित.।।
सलिल समान कलिलमलगंजन बुधमनरंजनहारी ।
भंजन विभ्रमधूलि प्रभंजन, मिथ्याजलदनिवारी ।।2।। नित.।।
कल्यानकतरू उपवनधरिनी, तरनी भवजलतारी ।
बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्तिनसैनी सारी ।।3।। नित.।।
स्वपरस्वरूप प्रकाशनको यह, भानु कला अविकारी ।
मुनिमन-कुमुदिनि-मोदन-शशिभा, शम-सुखसुमनसुबारी ।।4।। नित.।।
जाको सेवत बेवत निजपद, नशत अविद्या सारी ।
तीनलोकपति पूजत जाको, जान त्रिजगहितकारी ।।5।। नित.।।
कोटि जीभसौं महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी ।
दौल अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारनहारी ।।6।। नित.।।

हे बुद्धिमान ! हे बुद्धि के धारक ! जिनवाणी को अमृत-समान जान करके तुम उसका नित्य प्रति आस्वादन करो, उस अमृत का पान करो।

वह जिनवाणी भगवान महावीर के श्रीमुख से निकली हुई है। खिरी हुई है। वह जन्म, बुढ़ापा व रोग को टालने वाली, दूर करने वाली है। वह जिनवाणी गौतम आदि मुनिजनों के हृदय में धारण की हुई-समाई हुई है, सर्वोत्कृष्ट है , रूचिकर है और मोक्ष-सुख को प्रदान करने वाली है। उस अमृत-समान जिनवाणी का नित्य आस्वादन करो।

यह जिनवाणी जल के समान पापरूपी मैल को धोने वाली, बुधजनों के, विवेकीजनों के चित्त को हरने वाली है, विभ्रमरूपी धूल का नाशन करने वाली है।

मिथ्यात्वरूपी बादलों का निवारण करने वाली है, उनको हटाने वाली है। उस अमृत-समान जिनवाणी का नित्य आस्वादन करो।

वह ज्ञान कल्याणक रूपी वृक्ष के उद्यान/बगीचे को धारण करने वाली है और भव-समुद्र से पार ले जाने के लिये, तारने के लिये नौका के समान है। समस्त बंधनो को विवेक की उत्कृष्ट छैनी से काट देने वाली है और वह मोक्ष-महल में जाने के लिये सीढ़ी है। उसको संभालो। उस अमृत-समान जिनवाणी का नित्य अस्वादन करो।

दौलतराम कहते हैं कि यह जिनवाणी पतितजनों का उद्धार करने वाली है। वज्रधारी इन्द्र की करोड़ों जिह्वा भी उस जिनवाणी की महिमा का वर्णन करने में असमर्थ हैं। उसका अल्पमति किस भांति वर्णन कर सकते हैं अर्थात नहीं कर सकते। उस अमृत-समान जिनवाणी का नित्य आस्वादन करो।

संस्कार प्रवाह

लेप में छल

प्रेम और विश्वास की नाजुक कलियों को रौंदते हुये पुलिस और दहशत के साये में लेप का दूसरा चरण पूर्ण हुआ अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति में गंभीर फेर बदल करने के बाद भी वे भूल गये कि श्वेताम्बर पक्ष को लेप करने का अधिकार तो सुप्रीम कोर्ट ने दिया परन्तु अंतरीक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति के चरित्र और स्वरूप को बदलने का अधिकार नहीं दिया था। अंतरीक्ष पार्श्वनाथ के चरित्र स्वरूप बदलकर श्वेताम्बर पक्ष ने गंभीर अपराध किया है। 20 मार्च को हुये समझौते को तोड़कर मैत्री के पवित्र रास्ते को बन्द कर दिया है। दो संतो ने जिस समझौते पर हस्ताक्षर किये उस सद्भावना पूर्ण दस्तावेज को कट्टर वादिता के तीखे नाखूनों से नोंच फाड़कर डस्टबिन का जो श्वेताम्बर पंथ के दकियानूसी सोच रखने वाले संत सेठियों ने प्रयास किया है वह प्रयास सत्य अहिंसा को स्वीकारने वाले महान साधक कभी अभिनंदनीय नहीं मान सकेंगे क्योंकि धर्म और मानवता का आधार सरल सत्य व्यवहार ही होता है अपनी सत्यधर्म की रक्षा के लिये कई महापुरुषों ने जंगलो की खाक छानी और बहुत संघर्ष किया पर अपने सत्य वचन की रक्षा के लिये प्राणों का दान दे दिया। और आज कुछ महावीर वीतरागी तीर्थंकर का दंभ भरने वाले कंदोरा कचौटा के पक्षपाती कट्टरवादी पंथवादी मूर्ती पूजक 20 मार्च 2023 के किये हुये समझौते को हंसी मजाक समझ कर तोड़ देने में अपनी चतुराई का परिचय दे रहे हैं वे भूल रहे हैं कि अदालती न्याय से कहीं बढ़कर पारलौकिक न्याय भी होता है। पारलौकिक ईश्वरीय न्याय को भुला देना मात्र छल कपट के परदे से सत्य को ढंक देने के सिवाय और कुछ नहीं होता है।

अंतरीक्ष पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ती को भले ही बुद्धिबल धन बल छल बल से मूल स्वरूप दिगम्बर स्वरूप छिपाने का प्रयास किया जाये परन्तु लौकिक अदालती न्याय के सिवाय कई ऐसे अमोघ तथ्य हैं जो चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि अंतरीक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ दिगम्बर था इसे तो परिवर्तित किया गया हैं 5 तथ्य आज छल बल के परदे से झाँक कर सत्य प्रगट कर ही देते हैं।

1. पूरे शिरपुर का कोई भी श्वेताम्बर मूल निवासी नहीं है।
2. ध्वाजारोहण करने का अधिकार मात्र दिगम्बर को प्राप्त है।
3. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ वसती मंदिर शिरपुर में 16 वेदियाँ है जिनमें से 15 वेदियाँ दिगम्बर की हैं तो फिर आपको सोचना है फिर वह मंदिर श्वेताम्बर कैसे हो सकता है।
4. मंदिर की मांडोवर पर दिगम्बर मूर्तियों की नक्कासी कह रही है कि यह मंदिर दिगम्बर पंथ का है।
5. सर्वे रिर्पोट 30.2.1902 पृ. पुरातत्व विभाग इम्पीरियल गजेटियर आक्सफोर्ड भाग 7 पृष्ठ 97 एवं भाग 43 पेज 39 पर देखने पर पता लगता है अंतरीक्ष पार्श्वनाथ मंदिर दिगम्बर जैनियों के स्वामित्व का है।

तथ्य जब पुकार कर घोषित कर रहे हों तब एक मात्र मूर्ती अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की श्वेताम्बरीय कैसे हो सकती है ? लेप के आवरण अगर हट जायें तो अंतरीक्ष पार्श्वनाथ का सत्य दर्शन अवश्य होगा।

श्री धवल का रचनाकाल

❊ लेखक- श्री प्रफुल्लकुमार मोदी, एम.ए.एल.एल.बी. ❊

षट्खंडागम पुस्तक 1 की प्रस्तावना में मेरे पिता श्री प्रो. डॉक्टर हीरालाल जी ने विशेष खोजबीन पूर्वक धवला टीका की अन्तिम प्रशस्ति का पाठ संशोधन करके यह निर्णय किया है कि उस प्रशस्ति में कार्तिक शुक्ल 13 शंक संवत् 738 का उल्लेख है। किन्तु अनेकान्त की वर्ष 7 किरण 11-12 (जून-जुलाई 1944) के अंक में बा. ज्योतिप्रसाद जैन का श्रीधवल समय शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें उक्त प्रशस्ति के पाठ में कुछ दूसरे प्रकार से संशोधन करके यह प्रतिपादित किया गया है कि उस प्रशस्ति में विक्रम संवत् 838 कार्तिक शुक्ल 13 का उल्लेख है। इस लेख में प्रस्तुत अनेक बातें ऐतिहातसिक दृष्टि से विशेष चिन्तनीय हैं। किन्तु उनकी चिन्ता करना तब तक निष्फल है जब तक कि यह सिद्ध न हो जाये कि विक्रम सं. 838 भी धवला की समाप्ति के लिये संभव माना जा सकता है।

उक्त प्रशस्ति के उपलक्ष्य अशुद्ध पाठ के कारण संवत् आदि के सम्बंध में भले ही मतभेद और संशय हों, किन्तु इस बात में कोई संशय व मतभेद नहीं है कि उसमें राजा जगत्तुंगदेव का उल्लेख है। राष्ट्रकूट वंश के जगत्तुंग उपाधिचारी अनेक राजाओं में सबसे प्रथम गोविन्द तृतीय पाये जाते हैं जिनके शक संवत् 716 से लगाकर 735 तक के ताम्रपत्र मिले हैं। इनके पिता ध्रुवराज का राज्यकाल शक संवत् 714 तक पाया जाता है, और ध्रुव से पूर्ववर्ती राजा गोविन्द द्वितीय का अन्तिम उल्लेख शक संवत् 701 का मिलता है। किन्तु इस बात का अभी तक निर्णय नहीं हो सका कि गोविन्द द्वितीय का राज्यकाल कब समाप्त हुआ और ध्रुव का कब प्रारंभ हुआ। जिनसेनकृत हरिवंशपुराण की प्रशस्ति उल्लेख है कि शक संवत् 705 में दक्षिण में कृष्ण के पुत्र श्रीवल्लभ का राज्य था। राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण प्रथम के ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द द्वितीय की उपाधि श्रीवल्लभ पाई जाती है और अपने पिता के पश्चात राज्यारोहणकाल शक संवत् 694 के लगभग सिद्ध होता है। सर भंडारकर ने अपने दक्षिण के इतिहास में जिनसेन का उक्त उल्लेख इन्हीं के सम्बंध में स्वीकार किया है, और विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने अपने भारत के प्राचीन राजवंश में यही मत स्वीकार किया है। इस प्रकार विक्रम सं. 838 शक सं. 703 में तो जगत्तुंग ही नहीं, किन्तु उनके पिता ध्रुवराज का भी राज्य नहीं पाया जाता। बा. ज्योतिप्रासद जी का यह कथन सर्वथा असत्य है कि धूलिया के ताम्रपट से '' इसमें तो संदेह नहीं कि गोविन्द द्वितीय की मृत्यु 779-80 में हो चुकी थी। और राष्ट्रकूट राज्य का अधिपति श्रीवल्लभ कलिवल्लभ धारावर्ष, आदि उपाधिधारी ध्रुवराज निरूपम था।'' अर्थात् धूलिया के ताम्रपत्रों में यह

स्पष्ट उल्लेख है कि उस समय अर्थात् शक संवत् 701 में गोविन्द द्वितीय का राज्य था। डॉ. अल्तेकर ने यह अवश्य बतलाया है कि श्रीवल्लभ उपाधि ध्रुवराज की भी पाई जाती है और वह भी कृष्ण का पुत्र था अतएव ''जिनसेन द्वारा उल्लिखित श्रीवल्लभगोविन्द भी हो सकते हैं और ध्रुव भी।'' उनका निजी ख्याल यह भी है कि इस समय ध्रुव को राजा मानना ठीक होगा। किन्तु इसके लिये हेतु सिवाय इसके और कुछ नहीं दिया जाय कि यदि ध्रुव का राज्य 783 ई. के भी पश्चात माना जाय तो उनके राज्य के लिये केवल लगभग आठ वर्ष ही शेष रह जाते हैं, अब कि उनकी अनेक विजयों से जान पड़ता है कि उनका राज्य कुछ अधिक रहा होगा। इस हेतु में न तो कोई बल है और न इस बात का कोई भी प्रमाण उपलब्ध है कि गोविन्द द्वितीय का राज्य शक सवंत् 705 से पूर्व समाप्त हो चुका था। यदि ध्रुव का राज्यरोहण शक संवत् 705 व 706 में भी माना जाये तो भी उनके राज्य के दश वर्ष प्राप्त होते हैं क्योंकि उनका उल्लेख शक संवत् 715-16 तक पाया जाता है और उनके पुत्र जगत्तुंग का प्रथम ताम्रपत्र शक संवत् 716 का प्राप्त होता है।

किन्तु यदि यह मान भी लिया जाये कि हरिवंश पुराण का वह उल्लेख ध्रुवराज ही सूचक है तो इससे केवल इतना ही अनुमान हो सकता है कि शक संवत् 705 के लगभग ध्रुवराज सिंहासनारूढ हुये थे। किन्तु इससे दो वर्ष पूर्व ही शक संवत् 703 में उनके पुत्र जगत्तुंगदेव के राज्य होने की तो कोई संभावना ही नहीं पाई जाती। यह बात सच है कि ध्रुवराज अपने जीवनकाल में ही अपने ज्येष्ठ पुत्रों को छोड़ कनिष्ठ पुत्र गोविन्द राज को युवराज बनाया था और उसका अभिषेक भी अपने जीते जी कर देने का प्रयत्न किया था। किन्तु जैसा कि डॉ. अल्तेकर ने इस विषय का खूब ऊहापोह करके कहा है एक तो अभी तक के उपलब्ध प्रमाणों पर से यह निर्णय करना ही कठिन है कि क्या सचमुच ध्रुव ने अपने जीते जी अपने पुत्र का राज्याभिषेक कर दिया था और दूसरे यदि यह ठीक भी हो तो यह बात उसके राज्य के अन्तिम काल में अर्थात् शक संवत् 715 के लगभग ही घटित हो सकती है, न कि राज्य के प्रारंभ में व उससे भी पूर्व शक 703 में ही।

जगत्तुंग गोविन्द तृतीय का कोई उल्लेख राजा के रूप में शक सं. 716 से पूर्व का किसी ताम्रपट में पाया जाता है और न किसी ग्रंथ में। इससे 11-12 वर्ष पूर्व शक संवत् 705 मे उनके पिता ध्रुवराज के भी सिंहासनारूढ होने का निश्चय नहीं है। तब शक संवत् 703 (वि. सं.838) में वीरसेन द्वारा जगत्तुंगदेव के राज्य का उल्लेख किया जाना सर्वथा असंभव प्रतीत होता है। जब तक इस एक प्रधान बात के प्रबल ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत न किये जायें तब तक बा. ज्योतिप्रसाद जी की शेष कल्पनाओं के विचार में समय व शक्ति लगाना निष्फल है।

हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के सम्बन्ध में मेरा स्पष्टीकरण

❊ लेखक–क्षुल्लक गणेशप्रसाद जी वर्णी, न्यायाचार्य ❊

जब से हरिजन मन्दिर-प्रवेशचर्चा चली कुछ लोगों ने अपने स्वभाव या पक्षविशेष की प्रेरणा से हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के विधि-निषेधसाधक आन्दोलनों को अनुचित प्रोत्साहन दिया। कुछ लोगों को जिन्हें आगमक अनुकूल किन्तु अपनी यथेच्छा के प्रतिकूल विचार सुनाई दिये, उन्होंने कहना आरंभ किया कि ''वर्णीजी हरिजनमन्दिर प्रवेश के पक्षपाती हैं'' इतना ही नहीं दलविशेष और पक्षविशेष का आश्रय लेकर अपनी स्वार्थ साधना के लिये, यथा तथा आगम प्रमाण भी उपस्थित करते, हुये मेरे प्रति भी जो कुछ मन में आया ऊटपटांग कह डाला, इससे मुझे जरा भी रोष नहीं, परन्तु उन सम्भ्रान्त जनों के निराकरण के लिये स्पष्टीकरण आवश्यक है, यद्यपि इसमें न तो पक्षपाती बनने की इच्छा है न विरोधी बनने की। परन्तु आत्मा की प्रबल प्रेरणा सदा यही रहती है कि जो मन में हो वचनों से कहो, यदि नहीं कह सकते तब तुमने अब तक धर्म का मर्म ही नहीं समझा, माया छल, कपट, वाक्प्रपंच आदि वंचकता के इन्हीं रूपान्तरों के त्यागपूर्वक जो वृत्ति होगी वही धार्मिकता भी कहलायगी। यही कारण है कि इस विषय में कुछ लिखना आवश्यक प्रतीत हुआ।

हरिजन और उनका उद्धार- अनन्तानन्त आत्माएं हैं परन्तु लक्षण सबके नाना नहीं एक ही हैं। भगवान् उमास्वामी ने जीव का लक्षण उपयोग कहा है, भेद-अवस्था प्रमुख हैं, अवस्था परिवर्तित होती है एक दिन की बालक की अवस्था परिवर्तित होते होते आज वृद्ध अवस्था को प्राप्त हो गये हैं यह तो शरीर परिवर्तन हुआ, आत्मा में भी परिवर्तन हुआ। एक दिन ऐसा भी था जो दिन में दश बार पानी और पांच बार भोजन करने भी संकोच करते थे आज एक बार ही भोजन और जल लेकर संतोष करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सामग्री अनुकूल प्रतिकूल मिलने पर पदार्थ में तदनुसार परिणमन होते रहते हैं। आज जिनको हम नीच पतित या घृणित जाति के नाम से पुकारते हैं उनकी पूर्व अवस्था को वर्णव्यवस्था प्रारंभ होने के समय को सोचिए और आज की अवस्था से तुलनात्मक अध्ययन कीजिये, उस अवस्था से इस अवस्था तक पहुंचने के कारणों को यदि विश्लेषण किया जाये तो यही सिद्ध होगा कि बहुसंख्यक वर्ग की तुलना में उन्हें उनके उत्थान में साधक अनुकूल कारण नहीं मिले, प्रतिकूल परिस्थितियों ने उन्हें बाध्य किया, फलतः 60 प्रतिशत हिन्दू जनता से 20-25 प्रतिशत इस जाति को विवश दुर्दिन देखने का दुर्भाग्य हुआ, उनकी सामाजिक राजनैतिक आर्थिक एवं दयनीय दशा पर सुधारकों को तरस आया, क्योंकि उनकी समझ में यह अच्छी तरह आ चुका था कि यदि उनको सहारा न दिया गया तो कितना ही सुधार हो, कितना ही धर्म प्रचार हो, राष्ट्रयीता का यह कालाकलंक धुल न सकेगा। वे सदा के लिये हरिजन (जिनके लिये हरि का सहारा हो और सब सहारों के लिये असहाय हों), ही रह जावेंगे। यही कारण था कि हरिजनों के उद्धार के लिये गांधी जी ने अपनी सत्य साधुता का उपयोग किया, विश्व के साधु सतों से जोरदार शब्दों में आग्रह किया, धर्म किसी की पैतृक संपत्ति

नहीं है, यह स्पष्ट करते हुये उन्होंने हरिजन उद्धार के लिये धर्म किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं, यह स्पष्ट करते हुये उन्होंने हरिजन उद्धार के लिये सब कुछ त्याग दिया, सब वह कार्य किया, दूसरों को भी ऐसा करने का उपदेश दिया। हमारे आगम में गृद्ध पक्षी को व्रती लिखा है, मृत्यु पाकर कल्पवामी देव होना भी लिखा है, यही नहीं किन्तु रामचन्द्र जी के भ्रातृ-मोह को दूर करने में इसका निमित्त होना भी लिखा है।

आधुनिक युग में हरिजनों का उद्धार स्थितिकरण कहा जा सकता है। धर्म भी हमारा पतित पावन है, यदि हरिजन पतित ही है तो हमारा विश्वास है कि जिस जैनधर्म के प्रबल प्रताप से यमपाल चाण्डाल जैसे सद्गति के पात्र हो गये हैं उससे इन हरिजनों का उद्धार हो जाना कोई कठिन कार्य नहीं है।

वैश्य कोन, शूद्र कौन- जैन दर्शन सम्पादक ने मेरे लेख पर शुद्रों के विषय में बहुत कुछ लिखा है, आगम प्रमाण भी दिये हैं, आगम की बात को मैं सादर स्वीकार करता हूँ परन्तु आगम का अर्थ जो आप लगावें वही ठीक हैं, वह कैसे कहा जा सकता ? श्री 108 कुन्दकुन्द स्वामी ने तो यहां तक लिखा है।

तं एयत्तविहत्त दाएहं अप्पणो सविहवेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्किज्ज छलं ण घेत्तव्वं।।

उस एकत्वविभक्त आत्मा को मैं आत्मा के निज-विभव द्वारा दिखलाता हूँ, जो मैं दिखलाऊँ तो उसे प्रमाण स्वीकार करना और जो कहीं पर चूक-भूल-जाऊँ तो छल नहीं ग्रहण करना।

आगम में लिखा है जो अस्पर्श शूद्र से स्पर्श हो जावे तब स्नान करना चाहिये, अस्पर्श क्या अस्पर्श जाति में पैदा होने से हो जाता है ? तब तीन वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य में-पैदा होने से सभी को उत्तम हो जाना चाहिये। परन्तु देखा यह जाता है कि यदि उत्तम जाति वाला निंदा काम करता है तब चाण्डाल गिना जाता है, उससे लोग घृणा करते हैं। गांधी जी के हत्यारे गौडसे का उदाहरण नया ही है। घृणा की वो बात ठीक ही है लोग तो पंक्ति भोजन और सामाजिक कार्यों में सम्मिलित नहीं करते, वे मनुष्य नीच जाति में उत्पन्न होते हैं परन्तु यदि वह धर्म को अंगीकार कर लेता है तो उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, उसे प्रामाणिक व्यक्ति माना जाता है। यह तो यहाँ के मनुष्यों की बात है किन्तु जहां न कोई उपदेष्टा हैं और न मनुष्यों का सद्भाव है उस स्वयंभूरमण द्वीप समुद्र में असंख्यात तिर्यंच मछली मगर आदि जलचर स्थलचर जीव भी व्रती होकर स्वर्ग के पात्र हो जाते हैं, तब कर्म भूमि के मनुष्य व्रती होकर यदि जैन धर्म पालें तब आप क्या रोक सकते हैं ? आप हिन्दू न बनिये यह कौन कहता है ? परन्तु हिन्दू जो उक्त कुल वाले हैं वे यदि मुनि बन जावें तब आपको क्या आपत्ति है ? हिन्दू शब्द का अर्थ मेरी समझ से सम्बंध नहीं रखता जैसे भारत का रहने वाला भारतीय कहलाता है इसी तरह देशविशेष की अपेक्षा यह नाम यहां नया प्रतीत होता है। जन्म से मनुष्य एक सदृश उत्पन्न होते हैं किन्तु जिन को जैसा सम्बन्ध मिला उसी तरह उनका परिजन हो जाता है। भगवान आदिनाथ के समय तीन वर्ण थे, भरत ने

ब्राह्मण वर्ण की स्थापना की यह आदिपुराण से विदित होता है। इससे सिद्ध है कि इन तीन वर्ण में से ही अलग हुये, मूल में तीन वर्ण कहां से आये, विशेष ऊहापोह से न तो आप ही अपने को वैश्य सिद्ध कर सकते है और न शूद्र कौन थे यह निर्णय ही आप दे सकते हैं।

शूद्रों के प्रति कृतज्ञ बनिये- जैनदर्शन सम्पादक ने आगे लिखा है कि आचार्य महाराज दयालु हैं , तब क्या वह शूद्र उनकी दया के पात्र नहीं है। लोग अपनी त्रुटि को नहीं देखते लोगों का जो उपकार शूद्रों से होता है अन्य से नहीं होता, यदि वे एक दिन को भी कूड़ा-घर शौचालय आदि स्वच्छ करना बन्द कर दें तब पता लग जायेगा। परन्तु उनके साथ आप जो व्यवहार करते हैं यदि उसका वर्णन किया जाये तो प्रवाद चल पड़े। वे तो आपका उपकार करते हैं परन्तु आप पंक्ति भोजन जब होती है तब अच्छा अच्छा माल अपने उदर में स्वाहा कर लेते हैं और उच्छिष्ट पानी से सिचिंत पत्तलों को उनके हवाले कर देते हैं। अच्छे अच्छे माल तो आप खा गये और सड़े गले या आने काने पकड़ा देते हें उन विचारों को इस पर ही हम आर्षपद्धति की रक्षा करते हैं बलिहारी इस दया की, धर्म धुरन्धरता को !!

शूद्र भी धर्मधारण कर व्रती हो सकता है- यह तो सभी मानते हैं कि धर्म किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं चतुर्गति के जीव सम्यक्त्व उपार्जन की योग्यता रखते हैं भव्यादि विशेषण से सम्पन्न होने चाहिये। धर्म वस्तु स्वतः सिद्ध है और प्रत्येक जीव में हैं, विरोधी कारण पृथक होने पर उसका स्वयं विकास होता है और उसका न कोई हर्ता है और न दाता ही है। इस पंचम काल में उसका पूर्ण विकास नहीं होता, चाहे गृहस्थ हो चाहे मुनि हो। गृहस्थों में ही सभी मनुष्यों में व्यवहार धर्म का उदय हो सकता है यह नियम नहीं कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ही उसे धारण करें शूद्र उससे वंचित रहें। गृद्ध पक्षी मुनिचरणों में लेट गया। उसके पूर्व भव मुनि ने वर्णन किये, सीता रामचन्द्र जी को उसकी रक्षा का भार सुपुर्द किया, जहां कि गृद्धपक्षी शुद्ध हो जावे, वहां शूद्र शुद्ध नहीं हो सकते यह बुद्धि नहीं समझ आती। यदि शूद्र निंद्यकार्यों को त्याग देवें और मद्यादि खाना छोड़ देवें तब वह व्रती हो सकता है मंदिर आने की स्वीकृति देना न देना आप की इच्छा पर है परन्तु इस धार्मिक कृत्य के लिये जैसे आप उनका बहिष्कार करते हैं वैसे ही कल्पना करो यदि वे धार्मिक व्रत के लिये आपका बहिष्कार कर दें या असहयोग कर दें तब आप क्या करेंगे ? सुनार गहना न बनावे, लुहार लोहे का काम न करे, बढ़ई हल न बनावे तो लोधी कुरमी आदि खेती न करें, धोबी वस्त्र प्रक्षालन छोड़ देवें, चर्मकार मृत पशु न हटाये, बसोरिन सौरी का काम न करें। भंगिन शौचगृह शुद्ध न करें, तब संसार में हा हा कार मच जायेगा, हैजा, प्लेग, चेचक,बाय जैसे भयंकर रोगों का आक्रमण हो जायेगा, अतः बुद्धि से काम लेना चाहिये, उनके साथ मानवता का व्यवहार करना चाहिये जिससे वह भी सुमार्ग पर आ जायें । उन के बालक भी अध्ययन करें तब आपके बालकों के सदृश वे भी बी.ए., एम.ए. वैरिष्टर हो सकते हैं , संस्कृत पढ़ें तब आचार्य हो सकते हैं फिर जिस तरह आप पंच पाप का त्याग कर व्रती बनते हैं यदि वे भी पंच पाप त्याग दें तब उनहें व्रती होने से कौन रोक सकता है ? मुरार में एक भंगी प्रतिदिन शास्त्र सुनने आता था करने आता था

संसार से भी होता था, मांसादि का त्यागी था, शास्त्र सुनने में कभी भूल करना उसे सहन न था।

धर्म किसी की पैत्रिक सम्पत्ति नहीं- आप लोगों ने यह समझ रक्खा है कि हम जो व्यवस्था करें वही धर्म है। धर्म का सम्बन्ध आत्मद्रव्य से है न कि शरीर से। हां यह अवश्य है कि जब तक आत्मा असंज्ञी रहता है तब तक वह सम्यग्दर्शन का पात्र नहीं होता, संज्ञी होते ही धर्म का पात्र हो जाता है, आर्ष वाक्य है कि चारों गति वाला संज्ञी पचेन्द्रिय जीव इस अनन्त संसार के घातक सम्यग्दर्शन का पात्र हो सकता है, वहाँ पर यह नहीं लिखा कि अस्पर्श शूद्र या हिंसक सिंह या व्यन्तरादि या नरक के नारकी इसके पात्र नहीं होते, जनता को भ्रम में डालकर हर एक को बावला और अपने को बुद्धिमान कर देने को शक्तिमान नहीं। आप जानते हैं संसार में जितने प्राणी हैं सभी सुख चाहते हैं और सुख का कारण धर्म हैं, उसका अंतरंग साधन तो जिन में है फिर भी उसके विकास के लिये बाह्य साधन की आवश्यकता है जैसे घटोत्पत्ति मृतिका से ही होती है और फिर कुम्भकारादि बाह्य साधनों की आवश्यकता अपेक्षित है, स्व अंतरंग साधन तो आत्मा में ही है फिर भी बाह्यसाधनों की अपेक्षा रखता है। बाह्य साधन देव गुरु शास्त्र हैं। आप लोगों ने यहाँ तक प्रतिबन्ध लगा रक्खा है कि अस्पर्श शूद्र को मन्दिर आने का भी अधिकार नहीं है, उनके आने से मन्दिर में अनेक प्रकार के विघ्न होने की संभावना है। यदि शान्तभाव से विचार करो तब पता लगेगा कि उनके मन्दिर आने से किसी प्रकार की हानि नहीं अपितु लाभ ही होगा। प्रथम तो जो हिंसा आदि महापाप संसार में होते हैं यदि ये अस्पर्श शूद्र जैन धर्म को अंगीकार करेंगे तब यह पाप अनायास ही कम हो जायेंगे। आपकी दृष्टि में ये भले ही न हों, परन्तु यदि दैवात् जैन हो जावें तब आप क्या करेंगे ? चाण्डाल को भी राजा का पुत्र चमर ढोलते देखा गया ऐसी योंही श्रीसमन्तभद्रस्वामी ने रत्करण्डक श्रावकाचार में लिखा हैं-

सम्यग्दर्शनसम्पन्नतामपि मातंगदेहजम्।
देवाः देवं विदुर्भस्मगूढागारान्तरौजसम्।।

आत्मा में ऐसी अचिन्त्य शक्ति है जिस तरह आत्मा अनन्त संसार के कारण मिथ्यात्व करने में समर्थ हैं उसी तरह अनन्त संसार के बन्धन काटने में भी समर्थ हैं। आप विद्वान हैं जो आपकी इच्छा हो सो लिख दें। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि यदि कोई अन्य व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करे तो उसे रोकने की चेष्टा करें, आपकी दया तो प्रसिद्ध है, हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं। आप सप्रमाण यह लिखिये कि अस्पर्श शूद्रों को चरणानुयोग की आज्ञा से धर्म करने का कितना अधिकार है, तब हम लोगों का यह वाद जो आपको अरूचिकर हो शांत हो जावेगा। श्री पूज्य आचार्य महाराज से ही इस व्यस्था को पूछकर लिखिये जिसमें व्यर्थ विवाद न हो। केवल समालोचना से काम न चलेगा शूद्रों के विषय में जो कुछ भी लिखा जावे सब सप्रमाण ही लिखा जावे। कोई शक्ति नहीं, जो किसी के विचारों का घात कर सके, निमित्त तो अपना काम करेगा उपादान भी अपना ही काम करेगा।

बन्दर घुड़की से काम नहीं चलेगा- एक महाशय श्री निरंजनलाल ने जैनमित्र अंक 20 में

तो यहां तक लिखा कि ''तुम्हारा क्षुल्लक पद छीन लिया जावेगा।'' मानों आपके ही हाथ में धर्म की सत्ता आ गई है। यह 'संजद' पद नहीं जो मन चाहा हटवा दिया, शास्त्र परम्परा या आगम के विच्छेद करने में जरा भी भय नहीं किया। जैनदर्शन के सम्पादक ने जो लिखा उसका प्रत्युत्तर देना मेरे ज्ञान का विषय नहीं, क्योंकि मैं न तो आगमज्ञ हूँ और न कोई सबका ज्ञाता परन्तु मेरा हृदय यह कहता है कि मनुष्य पर्याय वाला जो भी चाहे, वह कोई जाति का हो, कल्याण मार्ग का पथिक हो सकता है, शूद्र भी सदाचार का पात्र है। हां, यह अन्य बात है कि आप लोगों द्वारा जो मन्दिर निर्माण किये गये हैं उनमें उन्हें मत आने दो और शासकवर्ग भी आपके अनुकूल ऐसा कानून बना दें , परन्तु जो सिद्ध क्षेत्र हैं, कोई अधिकार आपको नहीं जो उन्हें यहाँ जाने से रोक सकें। मन्दिर के शास्त्र भले ही आप अपने समझ कर उन्हें न पढ़ने दें, परन्तु सार्वजनिक शास्त्रागार, पुस्तकालय, वाचनालयों में तो आप उन्हें शास्त्र पुस्तक समाचारपत्रादि पढ़ने से मना नहीं कर सकते। यदि वह पंच पाप छोड़ देवें और रागादिरहित आत्मा को पूज्य मानें, भगवान अरहन्त का स्मरण करें, तब क्या आप उन्हें ऐसा करने से रोक सकते हैं ? जो इच्छा हो सो करो।

मुझे जो यह धमकी दी है कि ''पीछी कमण्डल छीन लेगें।'' कौन डरता है ? सर्वानुयायी मिलकर चर्या बन्द कर दो, परन्तु धर्म में हमारी जो अटल श्रद्धा है उसे आप नहीं छीन सकते। मेरा हृदय आपकी इस बन्दर घुड़की से नहीं डरता। मेरे हृदय में दृढ़ विश्वास हूँ कि अस्पर्श शूद्र सम्यग्दर्शन और व्रतों का पात्र है। मन्दिर आने जाने की बात आप जानें। या जो भी पूज्यआचार्य महाराज कहें उसे मानो। यदि अस्पर्श का सम्बन्ध शरीर से है तब रहे, इसमें आत्मा को क्या हानि है ? और यदि अस्पर्श का सम्बन्ध आत्मा से है तब जिसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया वह अस्पर्श कहां रहा ? मेरा तो यह विश्वास है कि गुण स्थानों की परिपाटी में जो मिथ्यात्व गुणस्थानवर्ती है वह पापी है। तब चाहे वह उत्तम वर्ण का क्यों न हो, यदि मिथ्यादृष्टि है तब परमार्थ से पापी ही है। यदि सम्यक्त्वी है तब उत्तम आत्मा है। यह नियम शूद्रादि चारों वर्णों पर लागू है। परन्तु व्यवहार में मिथ्यादर्शन-सम्यग्दर्शन का निर्णय बाह्य आचरणों से है अतः जिसके आचरण शुभ है वे ही उत्तम कहलाते हैं, और जिनके आचरण मलिन हैं वे जघन्य कहे हैं। तब तक उत्तम कुलवाला यदि अभक्ष्य भक्षण करता है, वेश्यागमनादि पाप करता है उसे भी पापी जीव मानो और उसे मन्दिर मत आने दो, क्योंकि अपने आचरण से ही व्यक्ति पतित अस्पर्श या सदाचारी है। यदि सदाचारी है तब वह आपके मत से व श्रीआचार्य महाराज की आज्ञा से भगवान के दर्शन का अधिकारी भले ही न हो, परन्तु पंचम गुणस्थानवाला अवश्य है। पाप त्याग की ही महिमा है। केवल उत्तम कुल में जन्म लेने से ही व्यक्ति उत्तम हो जाता है ऐसा कहना दुराग्रह ही है। उत्तम कुल की महिमा सदाचार से ही है, कदाचार से नहीं। नीच कुली भी मलिनाचार से कलंकित है। उसमें मांस खाते हैं, मृत पशुओं को ले जाते हैं आपके शौचगृह साफ करते हैं, इसी से आप उन्हें अस्पर्श कहते हैं। सच पूछा जाये तो आपको स्वयं स्वीकार करना पड़ेगा, कि उन्हें अस्पर्श बनाने वाले आप ही हैं। इन कार्यों से यदि वह परे हो जायें तो क्या आप उन्हें तब भी अस्पर्श मानते जावेंगे ? बुद्धि में नहीं आता कि आज एक भंगी यदि ईसाई हो जाता

है ओर वह पढ़ लिखकर डॉक्टर हो जाता है तब आप लोग उसकी दवा गट गट पीते हैं या नहीं ? फिर क्यों उससे स्पर्श कराते हैं ? आप से तात्पर्य बहुमत जनता से है। आज जो व्यक्ति पाप कर्म में रत हैं वे यदि किसी आचार्य महाराज के सान्निध्य को पाकर पापों का त्याग कर देवे तब क्या धर्मातमा नहीं हो सकते ? प्रथमानुयोग में ऐसे बहुत से दृष्टांत हैं। व्याघ्रों ने सुकौशल स्वामी के उदर को विदारण किया और वही श्री कीर्तिधर मुनि के उपदेश से विरक्त हो समाधिमरण कर स्वर्ग लक्ष्मी की भोक्ता हुई। अतः किसी को धर्म सेवन से वंचित रखने के उपाय रचकर पाप के भागी मत बनो।

हम तो सरल मनुष्य हैं आपकी जो इच्छा हो कह लो आप लोग ही धर्म के ज्ञाता और आचरण करने वाले रहो। परन्तु ऐसा अभिमान मत करो कि हमारे सिवाय दूसरे कुछ नहीं जानते। '' पीछी कमण्डल छीन लेंगे।'' इससे हमें भय ही क्या है क्योंकि यह तो बाह्य चिह्न हैं इनके कार्य तो कोमल वस्त्र और अन्य पात्र से भी हो सकते हैं । पुस्तक छीनने का आदेश नहीं है। इससे प्रतीत होता है कि पुस्तक ज्ञान का उपकरण है वह आत्मोन्नति में सहाई है, उस पर किसी का अधिकार नहीं। तथा आपने लिखा कि आचार्य महाराज से प्रायश्चित लेकर पद की रक्षा करो। यह समझ में नहीं आता । जब हमें अपने आचरण में आत्मविश्वास की बात सोचना भी अनावश्यक प्रतीत होती है। जैन दर्शन की महिमा तो वो ही आत्मा जानता है जो अपनी आत्मा को कषाय भावों से रक्षित रखता है। यदि कषाय वृत्ति न गई तब बाहर मुनि आचार्य कुछ भी बनने का प्रयत्न करे सब एक नाटकीय या स्वांग धारण करना ही है। वह दूसरों का तो दूर रहे अपना भी उद्धार करने के लिये पत्थर की नौका सदृश है।

कविता

शिरपुर नगरिया

संस्कार फीचर्स

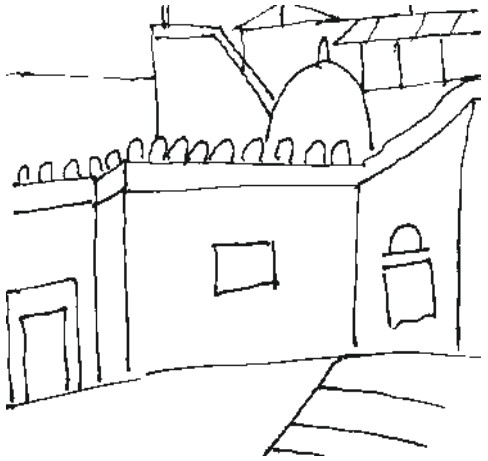

अंतरीक्ष पारस सावलिया
पारस प्रभु की शिरपुर नगरिया
वामा सुत प्रभु तारनहारे
अश्वसेन के राज दुलारे
तुमने दिखायी शिवपुर डगरिया
पत्र टिके न कभी अधर में
फिर भी प्रभु तुम मुक्त गगन में
रिम झिम प्रभु अभिषेक बदलिया
अतिशय मय प्रभु रूप दिगम्बर
काम विजय कर छोड़ा अम्बर
ज्ञान सुधामृत पूर्ण नगरिया

संयम स्वास्थ्य योग

शून्य मुद्रा और स्वास्थ्य

शून्य मुद्राः - मध्यमा (बीच) अंगुली को अंगूठे की गद्दी पर रखें, ऊपर से अंगुठे को हल्का सा दबाने से शून्य मुद्रा बनती है।

लाभः -

1. आकाश तत्त्व यदि बढ़ जाये तो इस मुद्रा के अभ्यास से लाभ होता है।
2. कान दर्द में लाभप्रद है।

सूर्य मुद्राः - अनामिका (सबसे छोटी अंगुली के पास वाली) को अंगूठे की जड़ से लगाएँ व हल्का दबाव दें, सूर्य मुद्रा बनती है। इस मुद्रा को वज्रासन में करें।

लाभः -

1. शरीर का वजन कम करती है।
2. थायराईड ग्रंथि स्वस्थ्य होती है।
3. मानसिक तनाव कम होता है।

प्राण मुद्राः - कनिष्ठिका व अनामिका (सबसे छोटी अंगुली व उसके पास की अंगुली) के सिरे अंगुठे से मिलाने पर प्राण मुद्रा बनती है बाकी दोनों अंगुलियाँ सीधी रहती हैं।

लाभः -

1. इस मुद्रा के अभ्यास से प्राणशक्ति तेजी से बढ़ती है।
2. इसके नियमित अभ्यास से मनुष्य बहुत शक्तिशाली बन जाता है।
3. रक्त- संचार तेजी से होता है।
4. इसके नियमित अभ्यास से रोग निरोधक शक्ती बढ़ती है।
5. स्नायविक थकान दूर होती है।
6. आँखों के समस्त रोग दूर होते हैं।
7. थकान में लाभ होता है।
8. भूख प्यास की तीव्रता कम होती है।

जल्लीकट्टू पशु क्रूरता का अमानवीय त्यौहार

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

तमिलनाडु राज्य में जल्लीकट्टू के नाम से मकर संक्राति के दिन त्यौहार मनाने के नाम पर बैलों के साथ क्रूरता पूर्ण व्यवहार की प्राचीन परंपरा पिछले लगभग 2000 वर्ष से जारी है। कोरोना महामारी के चलते इस बार गाइड लाइन का पालन किया गया। आयोजनों में 150-150 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। आयोजन स्थल पर क्षमता से 50 प्रतिशत दर्शकों को अनुमति दी गई। तमिलनाडु राज्य सरकार के अनुसार तमिलनाडु के इतिहास में पहली बार कोई खिलाड़ी गंभीर घायल नहीं हुआ।

किसी खिलाड़ी की मौत नहीं हुई। बैलों को भी ज्यादा क्षति नहीं हुई। हर वर्ष होने वाले इस खेल में खिलाड़ी की मौत हो जाती थी या अनेक गंभीर घायल हो जाते थे। इस अमानवीय खेल को हम हमारी सांस्कृतिक विरासत मानकार जारी रखें यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आम आदमी के चिंतन का विषय होना चाहिये। पुरानी वर्षों से चली आ रही परंपराओं का क्या आज औचित्य है इस पर भी विचार होना अति आवश्यक है।

हमें यह भी जानना चाहिये कि जल्लीकट्टू क्या है। जल्लीकट्टू में एक बैल को बड़े मैदान में खुला छोड़ा जाता है। खिलाड़ी उस बैल के कूबड़ से लटकाकर कुछ दूरी तक जाने का प्रयास करते हैं। बैल की कूबड़ पर सींग पर रूपयों का थैला बंधा होता है और विजेता को यह थैला पुरुस्कार में मिलता है। इस खेल को रोचक बनाने बैल को अनेक अमानवीय यातनाएं दी जाती है। भाला चुभाया जाता है पूंछ मरोड़ी जाती है। इसके पूर्व उसकी आंखों में मिर्ची पावडर डाला जाता है। बैल को शराब भी पिलाई जाती है। बैल को उसकी नाक में पड़ी रस्सी के सहारे घसीटा जाता है। उस वदहवास क्रोधित बैल पर जीत हासिल कर जश्न मनाया जाता है। क्या यह अमानवीय कृत्य निरीह पशु पर क्रूरता पूर्ण व्यवहार हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत कही जा सकती हैं?

पशु क्रूरता रोकने की पवित्र भावना से सर्वोच्च न्यायालय ने सन् 2014 में जल्लीकट्टू सहित पशु क्रूरता से जुड़े अन्य खेलों रेखला, अंबाला और मंजूविरत्थू पर प्रतिबंध लगा दिया था। तब से यह मांग की जा रही थी कि इन खेलों से प्रतिबंध वापस लिया जाये, भारत सरकार ने सन् 2016 में एक अध्यादेश जारी कर कुछ प्रतिबंधों के साथ इस खेल को खेले जाने की अनुमति दे दी। इस अध्यादेश को समाज सेवी पशु अधिकार कार्यकर्त्ताओं द्वारा उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी। उच्चतम न्यायालय ने उक्त अध्यादेश पर रोक लगा दी। इस रोक के बाद तमिलनाडु राज्य विधानसभा ने पशु क्रूरता अधिनियम 1960 मे कुछ संशोधन कर जल्लीकट्टू को वैध घोषित कर दिया।

जनवरी 2017 में चेन्नई के मरीना समुद्र तट पर लाखों लोग जल्लीकट्टू पर लगे प्रतिबंध के विरोध में आंदोलन करते हुये मैदान में उतर आये। आंदोलनकारियों में भारी संख्या में युवक आगे आये। कॉलेज के विद्यार्थी और बुद्धिजीवी प्रमुख रूप से आगे आये। आंदोलन में जो भाषण दिये उनमें अनेक मुद्दे उठाये गये और जोर शोर से कहा तमिल संस्कृति और गौरवशाली परंपरा पर हमला किया जा रहा है। यह भी कहा गया जल्लीकट्टू हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत है। जल्लीकट्टू को जारी रखने की तमिलों की मांग आज विचारणीय प्रश्न है। हमारे देश में सती प्रथा और अछूत प्रथा

हिन्दू संस्कृति के अनुसार उचित कही जा रही थी। दूसरी ओर हिन्दू राष्ट्रवादी यह मानते हैं जल्लीकट्टू एक हिन्दू प्रथा है। और लम्बे समय से चली आ रही इस प्रथा पर प्रतिबंध हिन्दू संस्कृति और धर्म में अनुचित हस्तक्षेप हैं।

आम जनता की भावनाओं को समझकर निर्णय लेना राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार का परम कर्त्तव्य माना जाता है। जल्लीकट्टू के मामले में राज्य सरकार और केन्द्र का दृष्टिकोण समझ से परे प्रतीत होता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जारी एन डी ए सरकार स्वयं को गोवंश रक्षक कहती है। इसी सरकार ने जल्लीकट्टू को वैध घोषित करने अध्यादेश जारी किया। सुप्रसिद्ध धर्म निरपेक्ष विचारक नेहा दाभाडे ने इस विषय पर लिखा है जल्लीकट्टू का मुद्दा बहुसंख्यकवाद से जुड़ा भी है।

क्या सरकारों के लिये यह उचित है कि वे किसी भी ऐसी मांग के आगे झुक जायें , जिसका समर्थन समाज के अधिकांश लोग करे रहे हों, भले ही वह मांग कितनी भी अनुचित या गैर कानूनी क्यों न हों ?

जल्लीकट्टू का समर्थन वास्तव में उस हिंसक पशु क्रूरता, प्रतिगामी संस्कृति का भाग है जिसमें मनुष्यों और निरीह पशुओं के साथ क्रूरता मनोरंजन का एक साधन है। क्रूरता कभी किसी संस्कृति के गौरव का आधार नहीं हो सकती। गौरवपूर्ण संस्कृति तो वह होती है जो समानता व करूणा पर आधारित हो। एक ओर भाजपा गोवंश की रक्षा की ओर संकल्पित है। देश के विभिन्न राज्यों मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा आदि भाजपा शासित राज्यों में बैल के वध पर प्रतिबंध है। वहीं दूसरी और केन्द्र सरकार जल्लीकट्टू जैसे क्रूरता से परिपूर्ण खेल को जारी रखने सहमत है। यह दोहरा चरित्र है। इस खेल में बैल ऐसी वस्तु बन जाता है उसे तरह तरह की यातनाएं देकर नियंत्रण पाया जाता है। जल्लीकट्टू और इससे जुड़ी हिंसक संस्कृति, गांधी के समानता व स्वतंत्रता के मूल्यों के समर्थन में चलाये गये अहिंसक आंदोलन और पेरियार जाति प्रथा विरोधी संघर्ष के विरूद्ध है।

कविता

अरे आँख खोलो अंधेरा नहीं है

ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी

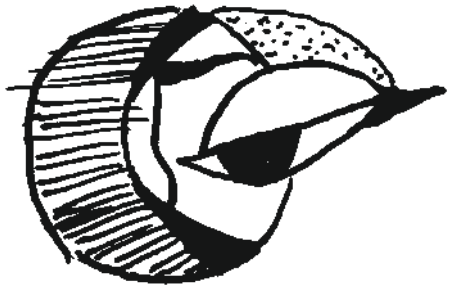

अरे आँख खोलो अंधेरा नहीं है।
बिना आंख खोले सबेरा नहीं है॥
भोगों की निंदिया आँखों में छाई।
सपनों की दुनिया बसेरा नहीं है॥
व्यसनों की नागिन जहरीली घूमें।
व्यसन से बड़ा तम घनेरा नहीं है॥
समय स्वर्ण होता इसे मत गमाओ।
विद्या से बड़के उजाला नहीं है॥
मिले संत चोखे जीवन समझलो।
जब तक कि यम ने पुकारा नहीं॥

आहारदान की महान परम्परा

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

भारतीय संस्कृति में पर्व, त्योहारों और व्रतों का अपना एक अलग महत्व है। ये हमें हमारी सांस्कृतिक परंपरा से जहां जोड़ते हैं वहीं हमारे आत्मकल्याण में भी कार्यकारी होते हैं।

अक्षय तृतीया का दिन अपने आप में कई गाथाओं को समेटे हुये हैं। यह दिन अन्य दिनों से बहुत खास रहता है। अक्षय फल मिलता है।

अक्षय तृतीया या आखा तीज वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है। इसी कारण इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है। वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है, किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में मानी गई है। हिन्दू परंपरा में अक्षय तृतीया का अत्यधिक महत्व है वहीं जैनधर्म में भी इसका खास महत्व है। इस दिन जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभेदव (आदिनाथ) ने राजा श्रेयांस के यहां इक्षु रस का आहार लिया था, जिस दिन तीर्थंकर ऋषभदेव का आहार हुआ था। उस दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी। उस दिन राजा श्रेयांस के यहां आहार सामग्री, अक्षीण (कभी खत्म न होने वाली) हो गयी थी। अतः आज भी श्रद्धालु इसे अक्षय तृतीया कहते हैं।

दान की परंपरा की शुरुवातः जैन परंपरा के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन दान की परंपरा की शुरुवात हुयी थी। जैन परंपरा में इस पर्व का बड़ा महत्व है। इसी कारण इसे विशेष श्रद्धाभाव से मनाया जाता है। जैनधर्म में दान का प्रवर्तन इसी तिथि को माना जाता है, क्योंकि इससे पूर्व दान की विधि किसी को मालूम नहीं थी। अतः अक्षय तृतीया के इस पावन पर्व को देशभर के जैन श्रद्धालु हर्षोल्लास व अपूर्व श्रद्धा भक्ति से मनाते हैं। इस दिन श्रद्धालुजन व्रत-उपवास रखते हैं। विशेष पूजा अर्चना करते हैं तथा दानादि प्रमुख रूप से देते हैं। जहाँ से इस परंपरा की शुरुआत हुई ऐसे हस्तिनापुर में भी इस दिन विशाल ओयाजन किये जाने की परंपरा है। इस दिन श्रद्धालु व्रत, उपवास रखकर इस पर्व के प्रति अपनी प्रगाढ़ आस्था दिखाते हैं।

शास्त्रों में बताया गया है कि अक्षय तृतीया के पावन दिन दान करने से बहुत अधिक महत्व होता है। दान करने का फल कई गुना अधिक मिलता है।

ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारंभ किये गये कार्य अथवा इस दिन को किये गये दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं। तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया॥
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः। तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव॥

जैन परंपरा में अक्षय तृतीया मनाये जाने का कथानकः जैन परंपरा में अक्षय तृतीया मनाये जाने का जैन शास्त्रों में वर्णन किया गया है।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में विजयार्ध पर्वत से दक्षिण की ओर मध्य आर्यखण्ड में कुलकरों में अंतिम कुलकर नाभिराज हुये। उनके मरुदेवी नाम की पट्टरानी थी। रानी के गर्भ में जब जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव आये तब गर्भकल्याणक उत्सव देवों ने बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्म कल्याणक मनाया। फिर दीक्षा कल्याणक होने के बाद ऋषभदेव ने छः माह तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिये ऋषभदेव भगवान के अनेक ग्राम नगर शहर में पदविहार किया, किन्तु जनता व राजा लोगों को आहार की विधि मालूम न होने के कारण भगवान को धन, कन्या, पैसा, सवारी आदि अनेक वस्तु भेंट करना चाहती थी, भगवान ने यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुंच छः माह की तपश्चरण योग धारण कर लिया। अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिये चर्या मार्ग से ईर्यापथ शुद्धि करते हुये ग्राम, नगर में भ्रमण करते-करते कुरुजांगल नामक देश में पधारे। वहां हस्तिनापुर में कुरुवंश शिरोमणि महाराज सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांश नाम का एक भाई था उसने सर्वार्थसिद्धि नामक स्थान से चयकर यहां जन्म लिया था।

एक दिन रात्रि के समय सोते हुये उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये। उन स्वप्नों में मंदिर, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, चंद्र, सूर्य, समुद्र, आग, मंगल द्रव्य यह अपने राजमहल के समक्ष स्थित हैं ऐसा उस स्वप्न में देखा तदनंतर प्रभात बेला में उठकर उक्त स्वप्न अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहे, तब ज्येष्ठ भ्राता सोमप्रभ ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जबाव दिया - हे राजन ! आपके घर श्री ऋषभदेव भगवान पारणा के लिये पधारेंगे, इससे सबको आनंद हुआ।

इधर भगवान ऋषभदेव आहार (भोजन) हेतु ईर्या समितिपूर्वक भ्रमण करते हुये उस नगर के राजमहल के सामने पधारे तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष ही मानो अपने सामने आया है, ऐसा सबको भास हुआ। राजा श्रेयांस को भगवान ऋषभदेव का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में श्रीमती वज्रसंघ की अवस्था में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार दिया था उसका जाति स्मरण हो गया। अतः आहारदान की समस्त विधि जानकर श्री ऋषभदेव भगवान को तीन प्रदक्षिण देकर पड़गाहन किया व आहार कक्ष में ले गये।

प्रथम दान विधि कर्ता ऐसा वह दाता श्रेयांस राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमतीदेवी व ज्येष्ठ बंधु सोमप्रभ राजा अपनी लक्ष्मीपती आदि ने मिलकर श्री भगवान ऋषभदेव को सुवर्ण कलशों द्वारा इक्षुर रक्ष का आहार दान किया गया जो तीन खण्डी (बंगाली तोल) इक्षुरस (गन्ना का रस) तो अंजुल में होकर निकल गया और दो खण्डी रस भगवान के पेट में गया।

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव की आहारचर्या निरन्तराय संपन्न हुई। इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने अत्यंत हर्षित होकर पंचाश्चर्य (रत्नवृष्टि, गंधोदक वृष्टि, देव दुदुभि, बाजों का बजना व जय-जयकार शब्द होना) वृष्टि हुई और सभी ने मिलकर अत्यंत प्रसन्नता मनाई।

आहारचर्या करके वापस जाते हुये ऋषभदेव भगवान ने सब दाताओं को अक्षय दानस्तु

अर्थात् दान इसी प्रकार कायम रहे, इस आशय का आशीर्वाद दिया, यह आहार वैशाख सुदी तीज को सम्पन्न हुआ था।

जब ऋषभदेव निरंतराय आहार करके वापस विहार कर गये उसी समय में अक्षय तीज नाम का पुण्य दिवस (जैनधर्म के अनुसार) का शुभारंभ हुआ। इसको आखा तीज भी कहते हैं।

अक्षय तृतीया व्रत, विधि एवं मंत्र- यह व्रत परम्परा के अनुसार वैशाख सुदी तीज से प्रारंभ होता है। उस दिन शुद्धतापूर्वक एकाशन (एक समय शुद्ध भोजन) करें या 2 उपवास या 3 एकाशन करें।

इसकी विधि यह है कि व्रत की अवधि में प्रातः नैत्यिक क्रिया से निवृत्त होकर शुद्ध भावों से भगवान की दर्शन स्तुति करें। पश्चात् भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का अभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजा भगवान आदि तीर्थंकर (ऋषभदेव) की पूजा एवं पंचकल्याणक का मण्डल जी मंडवाकर मण्डल जी की पूजा करें। तीनों काल (प्रातः मध्याह्न, सायं) निम्नलिखित मंत्र जाप्य करें-

मंत्र- ओम् ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री आदिनाथतीर्थंकराय नमः।

प्रातः साय णमोकार मंत्र का शुद्धोच्चारण करते हुये जाप्य करें। व्रत के समय में गृहादि समस्त क्रियाओं से दूर रहकर स्वाध्याय, भजन, कीर्तन आदि में समय यापन करें। व्रत अवधि में ब्रह्मचर्य से रहें। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांच पापों का अणुव्रत रूप से त्याग करें। क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों को शमन करें। व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करें। मुनि , आर्यिका, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें। इस प्रकार शुद्धतापूर्वक विधिवत रूप से व्रत करने से सर्व सुख की प्राप्ति होती है तथा साथ ही क्रम से अक्षय सुख अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आरोग्य जीवन बिताने के लिये भी यह उपयोगी है। संयम जीवनयापन करने के लिये इस प्रकार की धार्मिक क्रिया करने से मन को शान्त, विचारों में शुद्धता, धार्मिक प्रवृत्तियों में रूचि और कर्मों को काटने में सहयोग मिलता है।

अमिट हो गयी हस्तिनापुर की पहचानः- वैशाख माह की सुदि तृतीया का जैन धर्म में विशेष महत्व है। हस्तिनापुर का इस तिथि से विशेष संबंध है। अक्षय तृतीया के दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने निराहार तपस्या के बाद प्रथम बार यहीं पर आहार ग्रहण किया था और उसी दिन से हस्तिनापुर की पहचान अमिट हो गई।

धर्मतीर्थ और दानतीर्थः- भगवान ऋषभदेव धर्मतीर्थ के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर थे तो राजा श्रेयांस दानतीर्थ के प्रवर्तक प्रथम दातार थे। इस हस्तिनापुर नगर से ही दानतीर्थ का प्रवर्तन हुआ। अतः यह नगर उसी समय से पुण्यभूमि बन गई है। भरतक्षेत्र में दान देने की प्रथा उस समय से प्रचलित हुई और दान देने की विधि भी राजकुमार श्रेयांस से ही प्रगट हुई। दान की इस विधि से भरत आदि राजाओं को और देवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। देवों ने आकर बड़े आदर से राजा श्रेयांस की पूजा की। महाराज भरत ने भी श्रेयांस के मुख से सारी बातों को सुनकर परम प्रीति को प्राप्त किया और राजा सोमप्रभम तथा श्रेयांस कुमार का खूब सम्मान किया। इसी कारण इस अक्षय तृतीया का जैन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व समझा जाता है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्धार

❊ ब्र. अशोक भैया, लिधोरा ❊

विद्यासागर विश्ववंघ श्रमणं, भक्तया सदा संस्तवे
सर्वोच्चं यमिनं विनम्यपरम, सर्वार्थसिद्धि प्रदम्।
ज्ञान-ध्यान- तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वश्रियम्
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं सत्यं शिवं सुन्दरम्॥

ज्ञान-ध्यान-तप- लीन विश्व के आश्रयभूत, सत्य-शिव-सुन्दर स्वरूप विशाल हृदयी सर्व अर्थ रूप सिद्धि प्रदान सर्वश्रेष्ठ प्रेमी विश्ववंध, मूर्तिमान श्रमण श्री विद्यासागर जी महाराज की हमेशा भक्तिपूर्वक संस्तुति करता हूँ, नमोस्तु करता हूँ।

आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्धार विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करूँ उससे पहले मान सरोवर के राजहंस तीर्थस्वरूप संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के श्री चरणों में नमन करता हुआ सर्वप्रथम तीर्थ के विषय में अपना गन्तव्य स्पष्ट करना चाहूंगा।

तीर्थ शब्द संस्कृत की ''तृ प्लवनतरणयोः'' धातु से धक् प्रत्यय होकर बना है इसका अर्थ संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार मार्ग, सड़क, रास्ता या नदी में उतरने का स्थान (घाट) माना गया है, अर्थात् ऐसा दिव्य। पवित्र स्थान जहां डूबकर या डुबकी लगाकर पार उतरने या उतारने का काम किया जाता है, तीर्थ कहलाता है इसीलिये जहाँ लोग करते हैं या तारे जाते हैं, जहाँ से भवसमुद्र से पार होते हैं या किये जाते हैं वह स्थान विशेष तीर्थ कहलाता है, अतः तीर्थ को तरण स्थल के साथ-साथ तारणस्थल (पार उतारने वाले स्थान) के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाले सभी धर्मों में तीर्थों की मान्यता है, (वेद व्यास ने महाभारत के वन पर्व 82/17 में कहा है) ''तीर्थाभिगमनं पुण्य यशैरविविशिष्यते'' अर्थात् तीर्थ यात्रा पुण्य कार्य है। यह सूत्रों से भी बढ़कर है स्कन्दपुराण के काशीखण्ड में तीर्थ को व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया है-

दानतीर्थं -दमस्तीर्थं, संतोषं तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्य परं तीर्थं तीर्थं च प्रिय वादिता॥

दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है, ब्रह्मचर्य परम तीर्थ है, और प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है। (स्कन्दपुराण काशीखण्ड 6/31)

यही कारण है कि हर सम्प्रदाय के अपने तीर्थ हैं, तो उनके किसी महापुरुष अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के स्मारक के रूप में जाने जाते हैं, और प्रत्येक धर्म के धर्मानुयायी तीर्थयात्रा-वन्दना के लिये बड़ी तन्मयता, श्रद्धा, भक्ति भाव से जाते हैं तथा आत्मशांति की प्राप्ति के लिये तत्पर रहते हैं, इसी वजह से तीर्थस्थान, शांति, कल्याण व पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के परम धाम माने जाते हैं।

जिनागम में तीर्थ की अवधारणा- मुक्त जीवों के चरण कमलों से स्पर्शित ऊर्जयन्त, शत्रुञ्जय, लाटदेश, पावागिरि आदि तीर्थ हैं, वे तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों के स्थान हैं। ये जितने भी तीर्थ इस पृथ्वी पर वर्त्त रहे हैं, वे सब कर्मक्षय का कारण होने से वन्दनीय हैं।

''मुक्तमुनिपाद स्पृष्टं तीर्थ ऊर्जयन्त-शत्रुञ्जय-लाटदेश-पावागिरि तीर्थंकर पंचकल्याणक स्थानानि चेत्यादिमार्गे यानि तीर्थानि वर्तन्ते तानि कर्मक्षय कारणानि वन्दनीयानि। (बोध पाहुड़ टीका 27/93/7)''

जैन परम्परा के प्राचीन ग्रंथों में तीर्थशब्द के पर्याय के रूप में 'क्षेत्रमंगल' पारिभाषिक का प्रयोग भी होता है, जिसका अर्थ है जिस क्षेत्र में जाने से अहंकार, दंभ, मोह, ममत्वबुद्धि का गलन होता है, समाप्ति, क्षरण होता है, वह स्थान विशेष क्षेत्र मंगल कहलाता है। षट्खण्डागम में गुण- परिणत- आसनक्षेत्र अर्थात् जहाँ पर अनेक विभूतियों के द्वारा योगासन, वीरासन, आदि अनेक आसनों के माध्यम से अनेक प्रकार के योगाभ्यास व जितेन्द्रियता आदि गुण प्राप्त किये गये हों, ऐसे क्षेत्र विशेष- परिनिष्क्रमण क्षेत्र, केवलज्ञानोत्पत्ति क्षेत्र, और निर्वाण क्षेत्र आदि को क्षेत्र मंगल कहते हैं इनके उदाहरण ऊर्जयन्त, गिरनार, चंपा, पावा आदि नगर क्षेत्र हैं -

''तत्क्षेत्र मंगलगुण परिणतासन परिनिष्क्रमण- केवल-ज्ञानोत्पत्ति परिनिर्वाण क्षेत्रादिः। तस्योदाहरणम्- ऊर्जयन्त-चंपा-पावानगरादिः।''

समाधिशतक ग्रन्थ में भी- संसार समुद्र से तरनतारण कराने वाले, पार उतारने वाले को तीर्थ कहा गया है-

''संसारोत्तरण हेतु भूतत्त्वात तीर्थम्'' (समाधिशतक टीका 2/222/24)

श्रुत और धर्मकथा को भी तीर्थ की उपमा दी गई है-

''सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं-श्रुत धर्मतीर्थ कहा जाता है। (मूल आराधना 5/57)

आचार्य जिनसेन ने भी आदिपुराण में लिखा है-

''संसाराब्धेरपारस्य तरणे तीर्थ मिष्यते।
चेष्टितं जिननाथानां तस्योक्तिः तीर्थसंकथा॥''

जो इस भव-सागर से पार करे, वही तीर्थ है, ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र देव का चरित्र ही हो सकता है, तथा उस चरित्र के कथन को ही तीर्थ संकथा कहा जाता है।

बात इतनी ही नहीं आचार्य जिनसेन ने तो धवलाकार की मान्यता को आगे बढ़ाते हुये मुक्ति के उपायभूत, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्र को ही तीर्थ के रूप में प्रस्तुत किया है, क्योंकि वे ही तीनों मिलकर मोक्षमार्ग बनते हैं व मुक्ति के साक्षात् साधन के रूप में प्रस्तुत होते हैं- यथा- **''मुक्त्युपायो भवेत्तीर्थम् (आदिपुराणं 2/39/ भाग-1)''**

धवलाकार कहते हैं कि धर्म का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र है, चूंकि इनसे संसार-सागर से तरते हैं, इसलिये इन्हें तीर्थ कहा है, धवलाकार के ही शब्दों में-

''धम्मोणाम सम्मद्दंसण-णाण-चरित्ताणि / एदेहिं संसारसायरंतरंति त्ति/ एदाणि तित्थं (ध. 8/3, 42/9, 2/7)

तीर्थ सर्वोदयी और सभी का कल्याण करने वाला है यह उद्घोषणा आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने युक्त्यनुशासन ग्रंथ में की है- ''सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव''- हे प्रभु।

आपका यह सर्वोदय तीर्थ सबका कल्याण करने वाला है। इनके अतिरिक्त कुछ स्थलों की मान्यता, किसी मंदिर या मूर्ति में चमत्कार के कारण भी हो गई हैं, जो न निर्वाण क्षेत्र हैं और न अन्य कल्याणक क्षेत्र ही, किन्तु जनश्रुति में आश्चर्यकारक कार्यों के कारण ऐसे क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों के रूप में जाने जाते हैं।

जैनदर्शन में तीर्थों की इस अवधारणा रूप चर्चा से दो स्वरूप हमारे सामने उभरकर आते हैं- **1. विचार तीर्थ का 2. स्थावर तीर्थ का**

विचारतीर्थ वह है, जो हमारी भाव शुद्धि कराकर सीधे मोक्ष तक ले जाता है, इसीलिये जैन परम्परा में रत्नत्रय धर्म को भी तीर्थ की उपमा, जैनाचार्यों ने दी है, और इस धर्म तीर्थका प्रवर्त्तन करने वाले तीर्थंकर भगवन्त होते हैं, आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र आदि ग्रंथों में अनेक स्थलों पर इसका स्पष्ट उल्लेख किया है।

निर्दोष धर्मतीर्थ का प्रवर्त्तन करने वाले धर्मनाथ भगवान को गणधर देव ने सार्थक नाम वाला कहा है। **''धर्मतीर्थमनघं प्रवर्त्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान्''** (स्वयंभूस्तोत्र श्री धर्मनाथ भगवान श्लोक 1)

मल्लिनाथ भगवान की स्तुति करते हुये कहा है- मल्लिजिनेन्द्र का जो अपना तीर्थ था, श्रुत या शासन था वह भी संसार समुद्र से भवभीत प्राणियों को पार उतरने के लिये अग्रश्रेष्ठ मार्ग था, इन्हीं कारणों से मैं उनकी शरण को प्राप्त होता हूँ। **''तीर्थमपि स्वं जनन समुद्र, त्रासित सत्त्वोत्तरण पथोऽग्रम्॥** (स्वयंभूस्तोत्र- मल्लिनाथ भगवान श्लोक -4) अतः भावविशुद्धिदायक, मोक्षमार्ग प्रदायक, कर्मक्षयकारक, रत्नत्रय धर्मरूप विचारतीर्थ को जंगम और गतिमान तीर्थ की उपमा भी दी जा सकती है।

इससे इतर तीर्थंकरों के कल्याणक स्थलों, सिद्ध भूमियों अतिशय युक्त स्थलों, श्रुत रूप धर्मतीर्थ और समीचीन कथा रूप वचन स्थावर तीर्थ के रूप में स्वीकार किये जा सकते हैं। इसका स्वरूप इस प्रकार से प्रतिपादित कर सकते हैं- 1. ये तीर्थस्थल स्वयं पवित्र होते हैं। 2. और जो इनके संपर्क में आता है, उसे पवित्र कर देते हैं। 3. छोटे बाबा आचार्य श्री बड़े बाबा के प्रति समर्पण भाव -श्रमण संस्कृति के उन्नायक के युगदृष्टा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बीसवीं सदी के प्रभावशाली आचार्य हैं। 10 अक्टूबर 1946 की शरद पूर्णिमा को सदलगा-बेलगांव कर्नाटक में जन्मे विद्याधर ने मात्र 22 वर्ष की उम्र में आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज राजस्थान के अजमेर नगर में मुनि दीक्षा प्राप्त कर चार वर्ष की अल्प अवधि में 22 नवम्बर 1972 को अपने गुरुवर द्वारा प्रदत्त आचार्य पद से अलंकृत हो। 1 जून 1973 को गुरुवर ज्ञानसागर जी महाराज की समाधि संल्लेखना के बाद नसीराबाद (राजस्थान) से ग्राम नगर और तीर्थक्षेत्रों पर समाज में हित-मित-प्रिय उपदेशों से आचरण बोध जागृत करते हुये विहार कर रहे हैं। आपके इस प्रवास से जर्जरित उपेक्षित तीर्थों का उद्धार तो हुआ ही संघ की अभिवृद्धि भी हुई।

आचार्य भगवन् ने सन् 1976 में बड़े बाबा के पहली बार दर्शन किये और बड़े बाबा के हो गये, एक टक बड़े बाबा को निहारते हुये बड़े बाबा को अपने मन मंदिर का देवता बना लिया और एक मन संकल्प संभवतः कर लिया कि बड़े बाबा के इस मंदिर का जीर्णोद्धार ही नहीं, वरन इस तीर्थ का ही उद्धार हो जाये और बड़े बाबा बड़े मंदिर में अपने आसन पर पा जायें। इस संकल्प पूर्ति के लिये आचार्य भगवन् ने कुण्डलपुर में सन् 1976, 1977, 1989, 1992 और 1995 में पांच चातुर्मास सम्पन्न किये।

इसी बीच 1996 में जबलपुर-दमोह में आये भूकम्प के झटके से बड़े बाबा मंदिर में जगह-जगह दरारें आ गईं और आचार्य श्री का मन बड़े बाबा को जल्दी से जल्दी जीर्ण-शीर्ण ध्वंस होते हुये पुराने मंदिर से निर्माणाधीन नये मंदिर की वेदिका पर विराजमान करने के लिये सजग हो गया परन्तु ''श्रेयांसि बहुविघ्नानि'' की युक्ति चरितार्थ हुई, और अपने ही लोगों के द्वारा आये व्यवधान से कार्य की गतिमन्द हो गई, चिन्ता होना स्वाभाविक है किन्तु यह भी स्मरण में रहना चाहिये कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समय भी रावण जैसे विघ्नकर्ता थे, किंतु इससे श्रीराम की श्रेष्ठता बढ़ती गई और प्रमाणित होती गई। शायद इसी तरह जब -जब कुंडलपुर के बड़े बाबा और छोटे बाबा के कार्य क्षेत्र में रोड़े अटकाने के तुच्छ प्रयास किये गये बड़े बाबा की प्रभुता और छोटे बाबा की कीर्ति बढ़ती ही गई। इतनी बढ़ी कि विश्व के मानचित्र में कुंडलपुर तीर्थक्षेत्र शब्द महत्त्वपूर्ण स्थान पर अंकित हो गया। इसी बीच सन् 2001 में बड़े बाबा का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। जिसमें सात दिन में 35 लाख लोगों ने कुंडलपुर पहुंचकर नये मंदिर को अपना समर्थन दिया। और 2003 से 2004 तक नये मंदिर का काम तीव्रगति से जारी रहा।

आचार्य भगवन् के 30 वर्षों का संकल्प उस समय पूरा हुआ जब बुन्देलखण्ड के बड़े बाबा और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रत्येक श्रद्धालु की अनंत आस्था के केन्द्र बिन्दु श्री आदिनाथ भगवान (बड़े बाबा) को प्राचीन जीर्ण-शीर्ण मंदिर से गगन बिहार कराते हुये पाषाण निर्मित्त निर्माणाधीन मंदिर की विशाल भव्य वेदिका पर विराजमान किया। 17 जनवरी 2006 मंगलवार को बड़े बाबा को नये सिंहासन पर विराजमान करने की यह अद्भुत घटना इंसानों का कार्य कतई नहीं हो सकता, कुछ दैविक शक्तियों ने इस कार्य को अंजाम दिया होगा। यह पवित्र कार्य कैसे सम्पन्न हुआ, यह रहस्य सिर्फ स्वयं बड़े बाबा या छोटे बाबा परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ही जानते हैं।

किन्तु आचार्य भगवन की 30 वर्ष के मनः संकल्पपूर्ति और उस समय के दृश्य से अभिभूत हृदय की उदान्त भावनाओं का प्रवाह आँखों में आई अश्रुधार से सहज ही लगाया जा सकता है, जिस घटनाद्वय के साक्षी हजारों लोग बने। बड़े बाबा के विराजमान होने के बाद 18 जनवरी 2016 को अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा था जैस सतयुग में हनुमान ने छाती चीरकर भगवान श्री राम को प्रकट किया था, वैसे ही जैन समाज ने कुंडलपुर के बड़े बाबा की भक्तिकर सिद्ध कर दिया है कि बड़े बाबा उनके दिल में बसते हैं।

बड़े बाबा मन्दिर का जीर्णोद्धार पन्ना के राजा छत्रसाल के आर्थिक सहयोग से सन् 1957

में ब्रह्मचारी नेमीसागर के द्वारा किया गया, ऐसे अनेक लोगों के द्वारा अनेक बार जीर्णोद्धार कर बड़े बाबा को संरक्षित किया गया। परन्तु आचार्य भगवन् की दिव्यदृष्टि ने यह जान लिया था कि बड़े बाबा कि अतिशयकारी प्रतिमा को बचाने के लिये तथा उसके संरक्षण का पाषाण निर्मित नवीन जिनालय में विराजमान करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है, तब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जीर्णोद्धार जो कि अल्पकालिक संरक्षण की प्रक्रिया शैली का विचार न कर तीर्थोद्धार- दीर्घावधि के लिये स्थायी प्राचीन नागरशैली में निर्मित- विशाल गर्भगृह, दो मंजिला विशाल गुणमंडप, श्रृंगार चौकी, विशाल परिक्रमा , सिंहद्वार, मानस्तंभ और रियेक्टर पैमाने पर आठ मैग्नीट्यूड गति के भूकम्प को सह सकने वाली तकनीक से इस भूकम्पनिरोधी मंदिर के निर्माण का विचार किया, और वह विचार 17 जनवरी 2006 को बड़े बाबा के विराजमान के साथ गतिमान हुआ और मंदिर निर्माण की प्रक्रिया सतत जारी है।

निर्माण कार्य को देखकर बड़े बुद्धिजीवी, विद्वान्, वास्तुविद् यह कहने लगे कि 6वीं 7वीं सदी के बड़े बाबा की प्रतिमा का संरक्षण तो इस निर्माणाधीन महाप्रसाद से ही होगा।

आचार्य भगवन् की इस दूरदर्शिता के कारण सही अर्थों में वे तीर्थ जीर्णोद्धारक के साथ-साथ तीर्थोद्धाक के रूप में स्थापित हो गये। आचार्य भगवन् ने मात्र कुण्डलपुर ही नहीं , अपितु सैकड़ों स्थानों को तीर्थ स्वरूप प्रदानकर उस स्थावर तीर्थ का तो उद्धार (संरक्षण) किया ही, वहाँ बसने वाली समाज के भव्य जीवों के उद्धार (कल्याण) का पथ प्रशस्त किया है। अतः वे अनन्तशः अनन्तकाल के लिये वन्दनीय हैं।

4. आचार्य श्री द्वारा स्थापित अन्य तीर्थ- आचार्य भगवन् श्री विद्यासागर जी महाराज ने शास्त्र वर्णित किंतु तीर्थ चिह्न रहित सिद्धोदय (नेमावर) और सर्वो दय (अमरकंटक) जैसे स्थानों पर उत्तुंग-भव्य-रमणीय पाषाण निर्मित विशाल जिनालयों तथा अष्ट धातु और पाषाण निर्मित्त जिनबिम्बों की स्थापना कर इन्हें तीर्थस्वरूपता प्रदान की। साथ ही यह स्थान जनविहीन न हों इस भावना से इन तीर्थों पर सतत संयम साधना, स्वाध्याय, ध्यान, तप, जाप पूजा-पाठ जैसे कर्मक्षय के साधनों के साथ आत्मकल्याणकारक ब्रह्मचर्याश्रयों की स्थापना का मंगल आशीष प्रदान किया साथ ही जनसेवा के कार्य हथकरघा और विकलांग सेवा केन्द्रों की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण उपक्रमों को शुभाशीष प्रदान किया।

इसके अलावा बीनाबारहा/ रामटेक/पिसनहारी मढ़िया जबलपुर/ तीर्थक्षेत्र चन्द्रगिरि डोंगरगढ़/ भगवान शीतलनाथ की चार कल्याणक से पावन भूमि भद्दलगिरि विदिशा स्थित शीतलधाम/पनागर/बहोरीबन्द/ बँधाजी/ कुण्डलगिरि (कोनी जी)/ रहली (पटनागंज) / खजुराहो / सिद्धक्षेत्र नैनागिरि/ मुक्तागिरि/ तारंगा/ पुण्योदय तीर्थक्षेत्र हांसी (हरियाणा) / जैसे अनेक तीर्थ हैं। इसके साथ-साथ अल्प श्रावक संख्या वाली समाज सिलवानी और टढ़ा (केसली) जैसे स्थानों पर पाषाण निर्मित विशाल गगनचुम्बी जिनालयों की स्थापना कर आने वाली शताधिकढ़ियों में आगत भव्यात्माओं के जीवन-उद्धार जीवन कल्याण का महानतम

कार्य प्रशस्त किया है।

इसके अलावा आचार्य भगवन् ने लगभग अठ्ठावन पंचकल्याणकों में सान्निध्यता प्रदान कर सहस्राधिक जिनबिम्बों को परमात्म स्वरूप देकर भव्यजीवों को श्रावक धर्म पूजा और दान का सौभाग्य देकर आत्मविशुद्धि पुण्य संचय और कर्मक्षय का सुअवसर प्रदान किया।

5. सर्वोदयी तीर्थ- आचार्य श्री विद्यासागरजी- आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज ने विचारतीर्थ के माध्यम से अनेक जनोद्धारक कार्य सम्पन्न किये हैं। जिसमें वर्तमान में 120 मुनि, 172 आर्यिकायें, 124 एलक-क्षुल्लक के रूप में कुल 416 दीक्षाएँ प्रदान कर रत्नत्रय धर्मरूप विचार तीर्थ की स्थापना कर आत्मोद्धार का पथ प्रशस्त किया विदित इतिहास में ऐसा एक भी प्रसंग प्राप्त नहीं होता जिसमें किन्हीं आचार्य भगवन् के मंगल आशीष की छांव तले इतनी बड़ी संख्या में बाल ब्रह्मचारी शिष्य समुदाय मुनि आर्यिका, एलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी भाई, ब्रह्मचारिणी विदुषी बहनें, घर में रहकर व्यवसाय नौकारी के साथ-साथ संयम सांधना करने वाले हजारों भव्यात्मा रत्नत्रय धर्म धारणकरके या करने की भावना रखते हुये धर्म प्रभावना और आत्मकल्याण कारक साधनों में संलिप्त हैं।

आचार्य भगवन् ने नैतिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा बनाने वाला हिन्दी, संस्कृत, काव्य, साहित्य का सृजन कर आपने मां भारती के भंडार को समृद्ध किया है।

चिन्तन साधना में प्रसूत ''मूकमाटी'' महाकाव्य सा अमृत फल पाकर साहित्य जगत स्वयं धन्य है, मूकमाटी महाकाव्य का लेखन कार्य 25 अप्रैल 1984 बुधवार जबलपुर में प्रारंभ हुआ और 11 फरवरी 1987 बुधवार को ही नैनागिरि में पूर्ण हुआ।

मूकमाटी का अनुवाद मराठी, बंगला, अंग्रेजी, कन्नड़, गुजराती आदि भाषाओं में हो चुका है।

मूकमाटी के ऊपर भारत और विदेश के 283 संस्कृत-हिन्दी जैन-जैनेतर विद्वानों ने अपने समीक्षात्मक विचार लिखे हैं जो कि लगभग 1000 समीक्षायें पी.एच.डी. शोध प्रबंध सहित मूकमाटी मीमांसा भाग- 1,2,3 में भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है।

मूकमाटी महाकाव्य भारत के अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शमिल है।

मूकमाटी महाकाव्य में आचार्य श्री जी ने धार्मिक, साहित्यक, सामाजिक, राजनैतिक नारी के कर्त्तव्य आदि विषयों पर काव्यात्मक शैली में लिखा है। और इसमें पात्र बनाया है मूकमाटी को, कंकर, पत्थर आदि को एवं पद दलित चेतना, आरक्षण, पूंजीवाद, आतंकवाद, शोषण, वर्गभेद, समाजभेद, आर्थिक विषमता, यशोलिप्सा, भ्रष्टाचार, आदि समकालीन अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं विद्रूपताओं के प्रति शंखनाद करके ''सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं'' की युक्ति को चरितार्थ कर श्रुत रूप धर्मतीर्थ की स्थापना कर सम्पूर्ण मानवमन की विकृत अवधारणा दूरकर सम्यर्क मार्ग प्रदाता तीर्थोद्धारक भगवन् के रूप में साहित्यकारों में ध्रुव नक्षत्र के

रूप में अवस्थित हैं। इस प्रकार कदम और कलम का फासला जिन्होंने लगभग खत्म कर दिया है । जिह्वा और जीवन में जिनके ऐक्य स्थापित हो चुका है, ऐसी विश्व की विरल विभूति विराग मूर्ति आगम धर आचार्य श्री में अनुकंपा और अनुशाासन की जीवंतता है।

सर्वोदयी भावना से अनुप्राणित आचार्य श्री जिनशासन की, अहिंसा को सेवा और करूणा से जोड़कर लोक चेतनावाही बन रहे हें। मानवता के मसीहा आचार्य श्री सचमुच ही इस युग के अद्वितीय धर्म प्रभावक/ धर्म तीर्थोद्धारक हैं। साहित्य, साधना, संघ, संस्कृति और समाज के संवर्धन में बहुआयामी दिशा निर्देश आशीष और योगदान देकर आज आचार्य श्री जन-जन के गुरु बने हुये हैं ।

आचार्य भगवन् के मंगल आशीष से सम्पूर्ण भारत वर्ष में **'' सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव''** की भावना को साकार करते हुये जनकल्याणकारी स्वास्थ्य शिक्षा अर्थकारी, और आत्मकल्याणार्थ अनेक प्रकल्प चल रहे हैं -जिनमें से मुख्य रूप से-

1. ब्राह्मी विद्या आश्रम जबलपुर- सागर- जिसमें अनेक विदुषी बहिनों ने शिक्षा संस्कार ग्रहण कर गुरुवर के पावन कर कमलों से दीक्षा ले रत्नत्रय धर्मतीर्थ को धारणकर आत्मोद्वार का पथ प्रशस्त किया / कर रही हैं।

2. भाग्योदय- मानवसेवा का चिकित्सा संस्थान आरोग्य तीर्थ भाग्योदय सागर जहाँ सर्व सुविधायुक्त वार्ड, नर्सिंग, कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज, डी.एम.एल. टी, एम.आर.आई व सीटी स्कैन, पैथलेव आदि की सुविधा युक्त।

3. हथकरघा- विकास, स्वरोजगार, शुद्धिता, भारतीय वस्त्रों को बढ़ावा देते हुये देश के 35 स्थानों में 1000 से अधिक संयमाभिमुख भाई-बहनों को प्रशिक्षण दिया गया है।

4. प्रतिभास्थली- ज्ञान संस्कारों से ओतप्रोत प्रतिभास्थली में बी.एड. व स्नातकोत्तर उपाधि, उच्च शिक्षा सम्पन्न, बाल ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा जबलपुर, रामटेक, डोंगरगढ़, इंदौर, ललितपुर आदि इन तीन स्थानों पर लगभग 2500 बालिकाओं को साथ-साथ खेल, नृत्य, सिलाई, कम्प्यूटर, हथकरघा आदि की शिक्षा दी जाती है।

5. दयोदय (गौशाला)- जीवदया, करूणा का अप्रतिम उदाहरण दयोदय नाम से संचालित 130 गौशालाओं में एक लाख से ऊपर पशुधन शरण व संरक्षण को पा रहा है।

6. शांतिधारा दुग्ध योजना- बीना बारहा (सागर) में 500 देशी गिर गायों का पालन कर व्रतियों के योग्य शुद्ध दूध व घी की उपलब्धता में सराहनीय योगदान देना।

7. प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान- जबलपुर/दिल्ली में स्थापित इन संस्थानों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर नीति-न्याय पूर्वक शासकीय कार्यो मे सहभागिता देना।

8. पूरी मैत्री जबलपुर- अशुद्ध डिब्बा बंद खाद्य सामग्री से लोगों को बचाकर मर्यादित सामग्री से, और छने हुये जल से निर्मित खाद्य सामग्री को समाज, जनता को उपलब्ध कराने की महत्वपूर्ण जबाब देरी से दे रही है।

9. निःशुल्क स्वास्थ्य केन्द्र- अतिशय क्षेत्र बहोरीबन्द कटनी में श्री शांतिनाथ विद्यासागर आरोग्य केन्द्र की स्थापना जिसमें लाखों गरीब मरीज निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ ले चुके हैं।

10. पाठशाला- मध्यप्रदेश व अन्य प्रांतों में लगभग 350 जैन पाठशालाओं में लगभग 25000 बालक/बालिकाओं को धार्मिक ज्ञान/ जैन कुलाचार/ जैन संस्कार और जिन पूजा प्रशिक्षण आचार्य भगवन के मंगल आशीष से प्रदान किये जा रहे हैं ।

11. जब राजा श्रेयांस दान देने से दान तीर्थ प्रवर्तक हो सकेहैं, तब आचार्य श्री तीर्थ उद्धार करने से तीर्थ उद्धारक क्यों नहीं हो सकते ?

12. पूर्णायु- भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद द्वारा अहिंसक औषधियों द्वारा जनकल्याण।

इन्हीं आत्म कल्याण, जन कल्याण, देश-समाज और तीर्थो संरक्षण जैसी उदात्त भावनाओं के कारण आचार्य भगवन् विचार तीर्थ और स्थावर तीर्थ के संगमस्थल के रूप में प्रतिमान के रूप में नजर आते हैं, तभी तो मन बरबस बोल उठता है-

गर आचार्य श्री विद्यासागर जी, संयम का रूप नहिं धरते,
वे अपनी काया से जग का, कायाकल्प नहिं करते।
तो मानवता मान नहीं पाती, ये जीवित मंत्र नहिं होते
ओर भारत-गारत बन जाता, जो ऐसे संत नहिं होते होते।।
तभी तो लाखों मानव मन गुरुवर को चुनौती देते हैं-
और शरदपूनम के चंदा गुरुवर, तुमको अपना मानें ।
मेरे मन की बगिया में, इक बार खिले तो जानें।।
इन श्रद्धा देवता के श्री चरणों में जो स्वयं विचार तीर्थ,
जंगम तीर्थ, गतिमान तीर्थ है मेरा कोटिशः प्रणाम...
साधु नहीं ये चलते-फिरते, तीरथ समान है।
गुरु विद्यासागर जी को मेरा शत् - शत् प्रणाम हैं।

अंतिम निवेदन- तीर्थों का विकास, समृद्धि व पुनरूद्धार हमारी वैयक्रिक, सामाजिक व पारमार्थिक जरूरत है, पर उनका विकास करते समय इस बात का निरन्तर ध्यान रखना चाहिये कि हमारे तीर्थ केवल स्थावर क्षेत्र ही न रहें, बल्कि उनमें स्थापित मंदिर व उनमें स्थापित जिनबिम्ब व उनका परिकर ज्ञान-विज्ञान विचारों और कलाओं के केन्द्र के रूप में भी रहे। औरों के विचार शुद्धि, भावशुद्धि के परम केन्द्र रहे हैं। हम आज जिन तीर्थों का विकास कर रहे हैं, उनमें स्थावर रूप को तो पोषण लगभग हो रहा है। जैसे पिच्छी, कमण्डलु, जहाज, तीन लोक, कमला, पर्वत के आकार के जिनालय लेकिन उनमें ज्ञान-विज्ञान, विद्याओं, कलाओं व विचार केन्द्र का पोषण लगभग नगण्य है, लेकिन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा निर्मापित स्थावर तीर्थ में पुरातन संस्कृति शैली, नागर शैली, और ज्ञान विज्ञान-विद्या कौशल का समावेश देखा जा सकता है।

जबकि विचार तीर्थ में तो साक्षात ज्ञान-विज्ञान, विचार-आचार शुद्धि आप देख ही रहे हैं। उसी के फल स्वरूप आज आचार्य भगवन् चारित्र की वसुधा पर एक कीर्तिस्तम्भ की भांति अचल, अडिग स्थित हैं।

पर एक वेदना है आचार्य भगवन् के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव पर हम मात्र संस्मरण सुनाते रह जायें या उनका गुणगान करते-करते यह संयम वर्ष सम्पन्न हो उसके पूर्व विचार तीर्थ, रत्नत्रय तीर्थ पर जो आक्षेप आ रहे हैं पत्र, फेसबुक, वाट्सअप, आदि मध्यमों से उनकी शुद्धिकरण का स्तंभ खोजना होगा। जैसे स्थावर तीर्थों पर सभी देवों की बढ़ती प्रवृत्ति धातक है वैसे ही विचार तीर्थ पर बढ़ती शिथिलाएँ भी भविष्य के शोध कर्त्ताओं के लिये घातक प्रमाण के रूप आचार्य भगवन के तीर्थकर्त्ता के रूप में प्रश्नचिह्न लगा सकती हैं निश्चित आचार्य भगवन हमारे आराध्य श्रद्धा के देवता हैं, और हमें ही इस बारे में विचार करना होगा। ताकि हमारे आराध्य युगों-युगों तक निष्कलंक आराध्य के रूप में दुनियां मानस पटल पर अंकित रह सकें।

अभी तक पढ़े गये सभी लेख आचार्य भगवन तीर्थोद्धार इस संज्ञा को सार्थक करने वाले बीज का ही विस्तार हो।

इस आलेख के लिखने में धवल ग्रंथराज, आदिपुराण, मूलाराधना, अष्टपाहुड़ के रचियता महान आचार्यों के ग्रंथों दिगम्बर जैन मुनि-मुनि श्री समतासागर जी कुण्डलपुर का सच, श्रमण परम्परा के महाश्रमण, जैनेन्द्र विद्वान कोश, स्कन्दपुर महाभारत और प्रो. वृषभदास को एक लेख के सहयोग के लिये कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

कविता

सहज में मिलाये

संस्कार फीचर्स

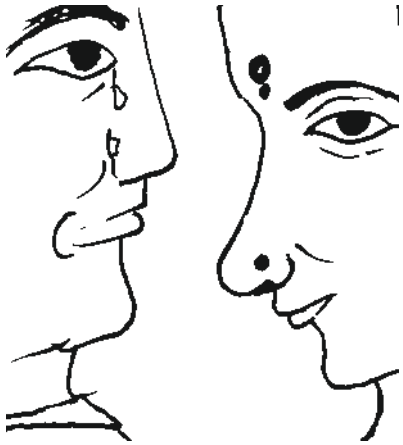

गहन साधना के लिये पसीना तुम यही बहाओ
गरम रेत में तुम नया पुष्प खिलाओ
श्रम की सुगंधी महकेगी दशों दिशा में
सफलता का चंदा खिलेगा निशा में
ऊंगेगा स्वाभिमान का सूरज तपन सब मिटेगी
जलन भी मिटेगी हथकरघा की शान भी बढ़ेगी
स्वावलम्बी भारत आत्मनिर्भर बनेगा
खादी महिमा का कपड़ा स्वर्ण सा दमकेगा
आओ हम सब मिलकर सहकारिता निभाएँ
धर्म कर्म संयोग सहज में मिलायें

बाबा की सीख

दो भवन क्यों

❊ अशोक पाटनी, आर.के.मार्बल्स ❊

जब मैंने अपना बंगला बनाया तो उसमें बहुत सारे आर्किटेक्ट, और इंजिनियर से सलाह ली। उनकी सलाह के बाद नक्शा भी पास करा लिया। हम सभी भाईयों ने मिलकर नक्शे पर खूब विमर्श करके भवन का काम शुरु कर दिया। भवन का निर्माण होने के बाद उसे कई लोग देखने आये। सब लोगों ने बंगला, भवन की खूब तारीफ की। इस बंगले के दो अर्पाटमेन्ट थे। उनमें बहुत समानता थी। दोनों के एक से किचन, दोनों के एक से बेडरूम, हॉल, स्टोररूम सभी बराबर थे। एक दिन हमारा मन हुआ। जब सब लोगों ने इस बंगले को देख लिया है। तो क्यों न बाबा को भी दिखाया जाये। हम बाबा को लेकर बंगला दिखाने गये। बाबा ने सब देखने के बाद कहा बेटा अशोक बंगला तो बहुत अच्छा बना लेकिन बंगले के दो हिस्से बनवाकर एक बात जरूर गलत हो गई है। कि जब भी थोड़ा सा भी विवाद होगा। तो इस बंगले के दोनो हिस्से सबको अलग-अलग करने में न्योता देंगे। इससे अपने परिवार में जल्दी फूट पड़ेगी। यह तुमने अच्छा काम नहीं किया है। बाबा की इस बात को सुनकर में उस समय तो कोई ज्यादा विचार नहीं कर पाया परन्तु जब रात में सोने के पहले मुझे बाबा की बात पर गहराई से सोचने का अवसर मिला तब मैंने सोचा बाबा की बात में दम तो है। जिस नगर में एक ही जिनालय होता है वहाँ की समाज कितनी भी लड़-झगड़ ले परन्तु एक हो जाती है। इसी तरह से अगर बंगले का एक ही अर्पाटमेन्ट होता तो निश्चित तौर पर किसी को भी अलग होने का अवसर कम मिलता। दूसरे दिन में सुबह उठकर सबसे पहले बाबा के कक्ष में गया। बाबा से क्षमा मांगकर मैंने कहा बाबा अब क्या किया जाये। तो बाबा ने कहा सब मिलकर रहो। मन एक से रखो सब ठीक हो जायेगा।

चलो देखें यात्रा

पैठण (प्रतिष्ठानपुर)

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर मंदिर एक है। मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथ की यहां बड़ी मान्यता है। जैन एवं जैनेतर बड़ी संख्या में प्रत्येक शनि अमावस्या में महामस्तकाभिषेक देखने आते है। मंदिर दो मंजिला है। क्षेत्र गोदावरी के निकट ऊँचाई पर है। मूलनायक के अतिरिक्त 50 मूर्तियां है। स्कूल संचालित है।

मार्गदर्शन: औरंगाबाद में पैठण 55 किमी. है। कचनेर यहां से 35 किमी है। कुंथलगिरि 150 किमी, जटवाडा 62 किमी, एलोरा 80 किमी, जिंतूर 180 किमी।

नाम एवं पता- श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, पैठण जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 431107, फोन : 02431-223149 मो. 9404000418 प्रबंधक: श्री राजेश जैन सिंघई मो. 09226576897, सम्पर्क सूत्र श्री विलास पहाड़े- 0942204497

सुविधायें- सुविधायुक्त 35 एसी कमरे तथा 2 हॉल हैं। भोजन सशुल्क अनुरोध पर उपलब्ध है।

पर्यटन- पर्यटक स्थल है। यहां का संत ज्ञानेश्वर उद्यान बांध दर्शनीय है। पूर्व में पैठन-प्रतिष्ठानपुर- सात वाहन राजाओं की राजधानी रहा है। एकनाथ महाराज की जन्मस्थली है। बांध के नीचे बना गार्डन दर्शनीय है। पांचालेश्वर -32 एवं मानस हेवरा 55 किमी है।

कविता

पर्वत पर्वत जंगल जंगल

एलक श्री सिद्धांतसागरजी

पर्वत पर्वत जंगल जंगल नये तराने गाये जा
जियो ओर जिने दो सबको वीर देशना सुनाये जा।
नाच नाच के झूम झूम के सच्ची बात बता देना
न ऊधौ का कुछ भी देना न माधव से कुछ लेना
जीवन का है राग सुहाना धर्म अहिंसा गाये जा
हमें किसी से भीति नहीं है हमें किसी से प्रीति नहीं
पैसों को पशु काटे जाते यह भारत की रीति नहीं
लाल किले की प्राचीरो से करूणा गीत सुनाये जा
खून सनी मुद्रा को पाने गौ माता को काटा जाता
अत्याचार पशु पर होते मन क्यों विरोध नहीं कर पाता
सोते धर्मी प्रेमीजन को चादर खींच जगाये जा।

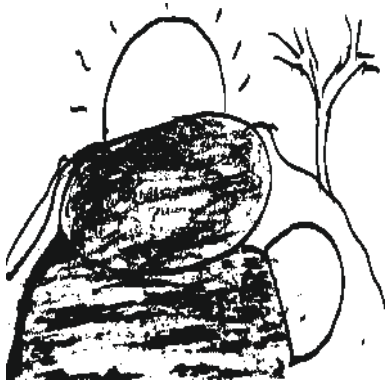

आगम दर्शन

कार्तिकेय अनुप्रेक्षा एक परिचय

यह अनुप्रेक्षा नामक ग्रंथ स्वामी कुमार ने श्रद्धापूर्वक जिनवचन की प्रभावना तथा चंचल मन को रोकने के लिये बनाया। ये बारह अनुप्रेक्षाएँ जिनागम के अनुसार कही हैं, जो भव्य जीव इनको पढ़ता, सुनता और भावना करता है, वह शाश्वत सुख को प्राप्त होता है।

स्वामी कार्तिकेय प्रतिभाशाली, आगम-पारगामी और अपने समय के प्रसिद्ध आचार्य हैं। द्वादशानुप्रेक्षा में कुल 489 गाथाएँ हैं। इनमें अध्रुव, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ, और धर्म इन बारह अनुप्रेक्षाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

अध्रुवानुप्रेक्षा में समस्त वस्तुओं की अनित्यता बतलाते हुये वस्तुस्वरूप सामान्य विशेषात्मक कहा है। अशरण भावना में बताया हैं कि मरण करते समय प्राणी की कोई शरण नहीं। संसार अनुप्रेक्षा में बताया है कि संसार-परिभ्रमण का कारण मिथ्यात्व और कषाय है। एकत्वानुप्रेक्षा में बताया गया हैं कि जीव अकेला ही उत्पन्न होता है। अन्यत्वानुप्रेक्षा में शरीर से आत्मा को भिन्न अनुभव करने का वर्णन किया है। आस्त्रावानुप्रेक्षा में आस्त्रव के स्वरूप, कारण, भेद उसके महत्व के चिन्तन का वर्णन आया है।

संवारानुप्रेक्षा में संवर के स्वरूप और कारणों का विवेचन किया है। निर्जरानुप्रेक्षा में बताया है कि जो अहंकार रहित होकर तप करता है। उसी के निर्जरानुप्रेक्षा होती है। लोकानुप्रेक्षा में लोक के स्वरूप और आकार प्रकार का विस्तार से वर्णन है। बोधिदुर्लभ भावना में आत्मज्ञान की दुर्भलता पर प्रकाश डाला गया है। धर्मानुप्रेक्षा में धर्म का यथार्थ स्वरूप अतीन्द्रिय बतलाया है।

स्वामी कार्तिकेय की रचना-शक्ति शिवार्थ और कुन्दकुन्द के समान है। विषय को सरल और सुबोध बनाने के लिये अमानो का प्रयोग पद-पद पर किया गया है। इस ग्रंथ की अभिव्यंजना बड़ी ही सशक्त है। ग्रंथकार की छोटी सी गाथा में बड़े -बड़े तथ्यों को संजोकर सहज रूप मे अभिव्यक्त किया है। भाषा सरल और परिमार्जित है। शैली में अर्थ सौष्ठव, स्वच्छता, प्रेषणीयता, सूत्रात्मकता अंलकारात्मकता समवेत है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

अप्रैल 2023

ये निशानी

प्रथम-

पाषाणों के परिस्करण से
बन बैठा स्मारक सुंदर
कला निखारी उपल खंड में
बना दिया स्तूप तंग मंदर
दर्शनीय साँची भारत का
इसकी कोई न दिखती शानी
त्याग और तप को बतलाती
संत साधना की ये निशानी

श्रीमती अनीता जैन, इंदौर

द्वितीय-

सुंदर यह स्तूप है कहे तपस्या रानी।
सांची मुक्ति रूप है त्याग की ये निशानी

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

ठहर गया मैं जिसे देखकर
छायी मन है रानी
साँची का स्तूप निराला
उन्नत कला पूर्ण ये निशानी

श्रीमती पदमा जैन, अहमदाबाद

वर्ग पहेली क्र. 282
अप्रैल 2023 के विजेता

प्रथम : श्रीमती आशा जैन, इंदौर
द्वितीय : कु. कल्पना जैन, भोपाल
तृतीय : श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश
(3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

अनिरुद्ध-ईर्ष्या

शक्तियाँ वही हैं जो कि दोनों लोकों में हित करने वाली हों।

लिलङ्घयिषवोऽन्योन्यं वर्द्धन्तेऽस्याखिला गुणाः।
समानं वर्द्धमानानां स्पर्द्धा केन निषिध्यते॥

इनके गुण इस प्रकार बढ़ रहे हैं ये मानो परस्पर में एक दूसरे का उल्लंघन ही करना चाहते हों। सो ठीक है क्योंकि एक साथ बढ़ने वालों की ईर्ष्या को कौन रोक सकता है।

ततो यौवनमालम्ब्य कामोऽप्यस्मिन् कृतास्पदः।
सम्प्राप्य साधवः स्थानं नाधितिष्ठन्ति के स्वयम्॥

तदनन्तर यौवन प्राप्त कर कामदेव ने भी उनमें अपना स्थान बना लिया सो ठीक ही है क्योंकि ऐसे कौन सत्पुरुष हैं जो स्थान पाकर स्वयं नहीं ठहर जाते॥

दिव्यश्रीर्मानुषी च श्रीः समप्रेमप्रतोषिते।
सुखं विद्धतुस्तस्य मध्यस्थः कस्य न प्रियः॥

समान प्रेम से संतोषित दिव्य लक्ष्मी और मानुष्य लक्ष्मी दोनों ही उन्हें सुख पहुँचाती थीं सो ठीक ही है क्योंकि मध्यस्थ मनुष्य किसे प्यारा नहीं होता।

निरङ्कुशं न वैराग्यं यादृग्ज्ञानं च तादृशम्।
कुतः स्यादात्मनः स्वास्थ्यमस्वस्थस्य कुतः सुखम्॥

जब तक यथेष्ट वैराग्य नहीं होता और यथेष्ट सम्यग्ज्ञान नहीं होता तब तक आत्मा की स्वरूप में स्थिरता कैसे हो सकती है ? और जिसके स्वरूप में स्थिरता नहीं है उसके सुख कैसे हो सकता है।

केरियर

इंटीरियर से बनो धनाढ्य

इंट्रीरियर डिजाइनर का कार्य बड़े भवनों, इमारतों हवाई जहाजों, मकानों, उद्योगों जहाज व व्यावसायिक काम्पलेक्स के डिजाइन तैयार करना है। उसे भीतरी व बाहरी सज्जा का ज्ञान होना आवश्यक है।

डिजाइनर का प्रशक्षिण व पाठ्यक्रम- डिजाइनर का पाठ्यक्रम करने के लिये छात्र को (10+2) बारहवीं कक्षा में कुल 60 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। तथा उसने विज्ञान व अंगेजी विषयों के साथ बारहवी कक्षा पास की हो। यदि 10वीं में 65% अंक पाये हैं। तो भी वे प्रवेश के लिये फार्म भर सकते हैं।

अन्य योग्यताएं-इंटीरियर डिजाइनर के अन्दर कलात्मकता तथा कल्पनात्मकता का पूर्ण विकास होना चाहिये। उसमें इस बात की योग्यता होना चाहिये कि वह अपनी बात दूसरे को समझा सके और दूसरे लोग उसके लिये कार्य की ओर आकर्षित हो।

कोर्स यहां से करें- इंटीरियर डिजाइन का 5 वर्षीय 'प्रोफेशनल कोर्स' भारत में केवल एक स्थान पर उपलब्ध है-स्कूल ऑफ इंटीरियर डिजाइन सेंटर फॉर एनवारनमेण्टल प्लानिंग एंड टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी रोड़ नवरंगपुरा अहमदाबाद 380009

उपर्युक्त संस्था में विभिन्न प्रकार के डिप्लोमा कोर्स भी उपलब्ध हैं। इंटीरियर डिजाइन का 5 वर्ष का प्रोफेशनल पाठ्यक्रम है, जिसमें 10 सेमेस्टर होते हैं। यहां के पाठ्यक्रम भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली व अन्य नगरों में अनेक संस्थाएं भी इंटीरियर डिजाइन में डिप्लोमा कोर्स कराती हैं।

भविष्य: इस पाठ्यक्रम को करने के पश्चात् छात्र अच्छी कम्पनी व संस्थाओं में अच्छा वेतन प्राप्त कर सकते हैं।

छोटी संस्थाओं में 10 से 15 हजार व अच्छी संस्थाओं में 15 से 25 हजार से अधिक रूपये मासिक वेतन प्राप्त किया जा सकता है। यह छात्र की योग्यता पर निर्भर करता है।

■1 अप्रैल

- अमेरिका बवंडर से आठ लोगों की मृत्यु हुई कई घर मलबे में बदले।

- बद्रीनाथ धाम में बारिश और बर्फबारी हुई।

- जार्जिया राज्य में हिन्दू विरोधी कट्टरता पर कानून बना।

■ 2 अप्रैल

- भारत के पूर्व क्रिकेटर सलीम दुर्रानी का निधन हुआ वे 88 वर्ष के थे।

- इजरायल ने सीरिया पर हवाई हमला किया हमले में ईरान के एक सलाहकार की मौत हुई 5 सैनिक घायल हुये।

- मसूरी से देहरादून जाती बस 50 मीटर गहरी खाई में गिरी। 2 यात्री की मौत हुई।

■ 3 अप्रैल

- पी.ओ.के. असेंबली में शारदा पीठ कॉरिडोर के लिये प्रस्ताव पारित हुआ।

- भारत सरकार वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं को हल करने के लिये।

- सी.बी.आई. के हीरक जयंती समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा लोकतंत्र में भ्रष्टाचार सबसे बड़ी बाधा है।

■ 4 अप्रैल

- गंगटोकः सिक्कम के नाथूला में भीषण हिमस्खलन से 7 पर्यटकों की मौत हुई तथा 350 को बचाया गया 80 वाहनों को सुरक्षित निकाला।

- भारतीय भारोत्तोलक संजीता चानू पर राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी ने 4 साल का प्रतिबंध लगाया।

- चीन ने भारतीय पत्रकारों को देश छोड़ने को कहा वहाँ कुल 4 भारतीय पत्रकार थे।

■ 5 अप्रैल

- सुप्रीम कोर्ट ने मलयाली न्यूज चैनल वन पर केन्द्र सरकार द्वारा लगाया प्रतिबंध हटाया।

- सुपर -30 के संस्थापक आनंद कुमार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पद्मश्री से सम्मानित किया। आपके कोचिंग से 480 में से 422 आई.आई.टी में चयनित हुये।

- किंगचार्ल्स की पत्नी कैमिला को पहली बार अधिकारिक रूप से क्वीन की उपाधि मिली।

■ 6 अप्रैल

- कनाडा में ओटारिया प्रांत में एक बार फिर मंदिर में तोड़ फोड़ हुई। और भारत

विरोधी नारे लिखे गये।

- जापान का आर्मी हैलीकाप्टर लापता हुआ जिसमें 10 लोग सवार थे।

- 195 दिन बाद कोरोनो के 5335 नये मामले मिले।

■ 7 अप्रैल

- आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री किरण रेड्डी भाजपा में शामिल हुये।

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने काजिरंग राष्ट्रीय उद्यान में गज उत्सव का उद्घाटन किया।

- मुम्बईः मलाड इलाके में बनी पूर्व मंत्री असलम शेख की फिल्म स्टूडियो पर बी.एम.सी ने बुलडोजर चलवाया।

■ 8 अप्रैल

- राष्ट्रपति द्रोपदि मुर्मू ने सुखोई-30 लड़ाकू विमान से उड़ान भरी।

- उत्तर कोरिया ने पानी के भीतर हमला करने वाले एटमी ड्रोन का परीक्षण किया।

- 16 लाख की इनामी महिला सहित दो नक्सलियों ने आत्म समर्पण दक्षिण बस्तर क्षेत्र में किया।

■ 9 अप्रैल

- अकोलाः बालापुर के पारस बाबू जी महाराज संस्थान केंटीन सेट पर झाड़ गिरने पर 7 की मौत 30 घायल हुये।

- बिहार की पूर्व मंत्री गायत्री देवी का निधन हुआ । आप नवादा जिले के गोविंदपुर से विधायक बार बार चुनी गईं।

- कांगो में आतंकी हमला हुआ 20 लोगों की मौत हुई।

■ 10 अप्रैल

- ग्रीस-मल्टा के बीच 400 प्रवासियों से भरा जहाज भटक गया । ईंधन खतम हुआ पानी भर रहा है।

- राकांपा और टी.एम.सी का राष्ट्रीय दल का दर्जा छीन लिया गया।

- गृहमंत्री अमित शाह ने अरूणाचल प्रदेश के अंतिम गांव का दौरा किया और कहा सूई की नौक के बराबर भारत की भूमि पर कोई कब्जा नहीं कर सकता।

■ 11 अप्रैल

- राजस्थान के कांग्रेस के नेता सचिन पायलट सरकार के विरोध में 1 दिन के लिये अनशन पर बैठे।

- सुप्रीम कोर्ट ने तमिलनाडु में आर.एस.एस. की रैली निकालने की इजाजत दी।

■ 12 अप्रैल

- विठंडा- सैन्य छावनी में गोलीबारी होने से 4 जवान शहीद हुये 2 दिन पहले इंसास रायफल 28 गोलियां गायब हुई थीं।

- कोलकाता- गंगा नदी (हुगली) के नीचे पहली बार मेट्रो ट्रेन दौड़ी।

- दिग्गज उद्योगपति केशव महिन्द्रा का निधन हुआ वे 99 वर्ष के थे।

■ 13 अप्रैल

- झांसीः गैंगस्टर अतीक के बेटे असद

अहमद और शूटर गुलाम अहमद को पुलिस ने मुठभेड़ में मार गिराया।

- पाकिस्तान में स्वीडन ने अपना दूतावास बन्द किया।

- विनायक सावकर के पोते सत्यकी ने राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का मामला दर्ज किया।

■ 14 अप्रैल

- सी.बी.आई ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पूंछताछ के लिये बुलाया।

- आतंकवाद विरोधी दस्ते की इकाई ने एक 46 युवक वर्षीय को गिरफ्तार किया इसने मुम्बई में 3 आतंकी घुसने की अफवाह उड़ाई थी।

- हैदराबाद में 125 फिट ऊंची अम्बेडकर की स्टेच्यू का उद्घाटन हुआ।

■ 15 अप्रैल

- पुणे- मुम्बई हाइवे पर तेज गति से दौड़ रही बस 200 फिट गहरी खाई में गिरि 13 लोगों की मौत हुई 29 घायल हुये।

- जर्मनी ने तीन परमाणु बिजाली केन्द्र प्लांट बन्द किये अब वह एटोमिक एनर्जी से मुक्त हुआ।

- विश्व युद्ध में शामिल भारतीय सैनिक जगमसिंह और मानसिंह के चित्र निर्यात पर बैन लगाया।

■ 16 अप्रैल

- गैंगस्टर अतीक अहमद और अशरफ अहमद के शवों से 13 गोलियों का पोस्टमार्टम में पता लगाया।

- राजस्थान की नंदिनी गुप्ता फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड 2023 की विजेता बनीं।

- खार्तूमः सूडान के सैन्यबल और अधसैन्य बल में संघर्ष हुआ भारतीय समेत 56 लोगों की मौत हुई 595 घायल हुये।

■ 17 अप्रैल

- नई दिल्लीः राष्ट्रपति द्रौपति मुर्मू ने राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस को संबोधित किया राष्ट्रीय पंचायत पुरुस्कार प्रदान किये गये।

- पुणेः जिले चिंचवड़ पीपरी में होर्डिंग गिरने से 5 लोगों की मौत हुई 2 लोग घायल हुये।

- अमेरिकी नौसेना ने ताइवान में अपना पहला युद्धपोत भेजा।

■18 अप्रैल

- धुलियाः एक मोमबत्ती फेक्ट्री में आग लगी चार महिलाओं की मौत हुई।

- नक्सली ढेर हुआ तथा दो नक्सली गिरफ्तार हुये यह मुठभेड बीजापुर सुरक्षाबल के साथ हुई।

- पाकिस्तान में सीमावर्ती शहर तुरखम में भूस्खलन होने से मलबे में 20 ट्रक दबे दो अफगान नागरिक की मौत।

■ 19 अप्रैल

- दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर जी.एन.सांई बाबा को बरी करने

वाले बंबई हाइकोर्ट के आदेश को रद्द किया। नक्सलियों से संबंध रखने का आरोप है।

- पूर्व विधायक अमन मणि त्रिपाठी को बसपा से निकाला गया।

- न्यूयार्क के पहले अश्वेत जज 7 रॉवर विलसन मुख्य जज बने।

■ 20 अप्रैल

- 2002 के दंगे मामले में हत्याकांड के सभी आरोपियों को विशेष अदालत ने बरी किया।

- कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा मोदी उपनाम को गई टिप्पणी को लेकर सत्र न्यायालय ने राहुल गांधी की अर्जी खारिज कर दी।

- श्रीनगरः राजौरी चौकी के पास सेना के ट्रक पर आतंकी हमला ड्रोन से हुये इस हमले में 5 जवान शहीद हुये।

■ 21 अप्रैल

- सूडान में गृहयुद्ध जारी रहा 5 लाख लोग घरो में कैद हुये। 3000 भारतीय भी फंसे।

- लंदनः डिप्टी पी.एम. डोमिनिका राव ने डराने धमकाने के आरोप में इस्तीफा दिया।

- पंजाब सरकार ने यू.पी. के माफिया को बचाने के लिये वकीलों की 55 लाख फीस देने से मना किया ये फीस कांग्रेस मंत्री से देने को कहा।

■ 22 अप्रैल

- असम की यूथ कांग्रेस पूर्वाध्यक्ष अंकिता दत्ता को कांग्रेस पार्टी से निकाला।

-जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक को सभा करने से पुलिस ने रोका तो वे खाप पंचायत नेताओं के साथ आरके पुरम थाने पहुँचे।

- राहुल गांधी ने 12 तुगलक लेन स्थित अपना अधिकारिक बंगला खाली किया।

■ 23 अप्रैल

- पाकिस्तान की शह पर पंजाब में आतंक फैलाने की साजिश रचने वाले अमृतपाल ने समर्पण किया । पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने 1500 स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई शुरु करने के लिये 200 करोड़ का बजट दिया।

- सूडान में फंसे भारतीयों को बाहर निकालने के लिये भारत ने दो विमान और युद्धपोत भेजा।

■ 24 अप्रैल

- टाटा समूह के मानद चैयरमैन रतन टाटा को आस्ट्रेलिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान आर्डर ऑफ आस्ट्रेलिया से सम्मानित किया गया।

- पाकिस्तान मूल के लेखक तारेक फतेह का निधन हुआ वे 73 वर्ष के थे । आप कनाडाई लेखक स्तंभकार थे।

- ढाकाः बांग्लादेश के नये राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन बने।

■ 25 अप्रैल

- पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल का निधन हुआ वे 95 वर्ष के थे।

-दिनाजपुरः (पं. बंगाल) नाबालिग लड़की से दुष्कर्म का विरोध करते हुये भड़के एक समूह ने थाना फूंका।

- बाम्बे हाईकोर्ट ने अपने एक अहम फैसले में कहा कि जानवरों को लाठी से डराना मारना क्रूरता के अंतर्गत है।

■ 26 अप्रैल

- छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के नक्सल प्रभावित इलाके बारूदी सुरंग में विस्फोट होने से 10 जवान शहीद हुये।

- सूडान में फंसे 530 भारतीयों को भारतीय वायुसेना ने सुरक्षित निकाला।

- कलेक्टर जी कृष्णैया के हत्याकांड के आरोपी बाहुबली आनंद मोहन की रिहाई से आइ.ए.एस. संगठन नाराज हुआ।

■ 27 अप्रैल

- पाकिस्तान की तरफ से आये नार्कोड्रोन को बी.एस.एफ के जवानों ने मार गिराया।

- कानपुरः सड़क पर ईद की नामज पढ़ी जाने पर 1700 लोगों पर एफ आई आर दर्ज हुई।

- लाहौर जा रही एक्सप्रेस ट्रेन के एक डिब्बे में आग लगने से 3 बच्चों समेत 7 लोगों की मौत हुई।

■ 28 अप्रैल

- अभिनेत्री जिया खान की आत्महत्या को उकसाने के आरोप से सूरज पंचोली को विशेष अदालत ने बरी किया।

- रूस ने यूक्रेन पर 23 मिसाइलें दागीं 3 बच्चों सहित 16 लोगों की मौत हुई।

- पूर्वी बुर्किनो फासो में सेना की टुकड़ी पर हमला हुआ 33 सैनिकों को मौत तथा 12 घायल हुये।

■ 29 अप्रैल

- गाजीपुर के एम.पी.एम . एल.ए कोर्ट ने माफिया मुख्तार अंसारी को 10 साल और बसपा सांसद अफजल को गैंगस्टर कानून के तहत जेल की सजा सुनाई।

- नौ सेना के रिटायर्ड कमांडर अभिलाष टॉमी ने गोल्डन ग्लोब रेस पूरी की वे रेस पूरी करने वाले पहले भारतीय हैं।

- पोलैंड ने रूस की स्कूली इमारत को जब्त किया।

■ 30 अप्रैल

- सात्विक साई राज और चिराग सेट्टी ने एशिया बैड मिंटन चैम्पियनशिप में गोल्ड जीतकर इतिहास रचा।

- लुधियानाः जहरीली गैस लीक होने से 11 लोगों की मौत हुई। चार अस्पताल में भर्ती हुये।

- मौसम के कारण चार धाम की यात्रा रोकी गई।

इसे भी जानिये

विदेशी पुरुस्कार का स्वरूप

पुरुस्कार सम्मान	पुरुस्कार प्रदान करने वाले	पुरुस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
बुकर पुरुस्कार	बुकर मेकोब्तल के. एवं पब्लिशर्स एसोशिएशन	अंग्रेजी में ब्रिटिश, आयरिश एवं कॉमनवेल्थ के लेखकों के सर्वश्रेष्ठ कथा साहित्य पर	1969	21,000 पौंड
डेविड कोहेन पुरस्कार	ब्रिटिश आर्ट कौसिंल	ब्रिटेन का सर्वोच्च साहित्यिक पुरुस्कार	-	48,000 पौंड
कॉनवेल्थ राइटर्स पुरुस्कार	राष्ट्रमंडल सम्बंध परिषद	यूरेशिया (एशिया व यूरोप) के कॉमनवेल्थ देशों के लेखकों को सर्वश्रेष्ठ रचना पर	1987	10,000 पौंड
ग्रौकू पी ओलम्पिक गोल्ड आर्डर	अकादमी ग्रोकू फ्रांस अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति	फ्रांस का सर्वोच्च साहित्यिक पुरुस्कार ओलम्पिक आंदोलन के विकास एवं समृद्धि की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास		
जेसी ओवेंस ग्लोबल पुरुस्कार	इंटरनेशनल अमेच्योर एथलेटिक फेडरेशन	खेल के क्षेत्र में असाधारण एवं स्थायी योगदान हेतु हर दूसरे वर्ष	1993	
राइट लिवलीहुड पुरुस्कार	राइट लिवलीहुड सोसाइटी (लंदन आधारित)	वैकल्पिक नोबेल पुरुस्कार के रूप में प्रसिद्ध, पर्यावरण एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिये	1980	20 लाख क्रोनर

दिशा बोध

निरुपयोगी धन

1. जिस आदमी ने अपने घर में ढेर की ढेर सम्पत्ति जमा कर रखी है, पर उसे सदुपयोग में नहीं लाता, उसमें और मुर्दे में कोई अन्तर नहीं है; क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं उठाता।
2. वह कंजूस आदमी, जो समझता है कि धन ही संसार में सब कुछ है और इसलिए बिना किसी को कुछ दिये ही उसे जमा करता है, वह अगले जन्म में राक्षस होता है।
3. जो लोग धन के लिए सदा ही हाय-हाय करते रहते हैं, पर यशोपार्जन करने की परवाह नहीं करते; उनका अस्तित्व पृथ्वी के लिए केवल भार-स्वरूप है।
4. जो मनुष्य अपने पड़ोसियों के प्रेम को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता, वह मरने के पश्चात् अपने पीछे कौन-सी वस्तु छोड़ जाने की आसा रखता है ?
5. जो लोग न तो दूसरों क़ो देते हैं और न स्वयं ही अपने धन का उपयोग करते हैं, वे यदि करोड़पति भी हों, तब भी वास्तव में उनके पास कुछ भी नहीं है।
6. संसार में ऐसे भी कुछ आदमी हैं जो धन को न तो स्वयं भोगते हैं और न उदारतापूर्वक योग्य पुरुषों को प्रदान करते हैं; वे अपनी सम्पत्ति के लिए रोग-स्वरूप हैं।
7. जो अधिक आवश्यकता वाले को दान देकर उसकी आवश्यकता को पूर्ण नहीं करता; उसकी सम्पत्ति उस लावण्यमयी ललना के समान है, जो अपने यौवन को एकान्त निर्जन स्थान में व्यर्थ गँवा देती है।
8. जिसे लोग प्यार नहीं करते उस आदमी की सम्पत्ति गाँव के बीचों बीच किसी विष-वृक्ष के फलने के समान है।
9. धर्माधर्म का विचार न रखकर और अपने को भूखों मारकर जो धन जमा किया जाता है, वह केवल दूसरों के ही काम आता है।
10. उस धनवान् मनुष्य की क्षीणस्थिति, जिसने दान दे कर अपने खजाने को खाली कर डाला है और कुछ नहीं, केवल जल बरसाने वाले बादलों के खाली हो जाने के समान है। वह स्थिति अधिक समय तक नहीं रहेगी।

कहानी

कमला की कहानी

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

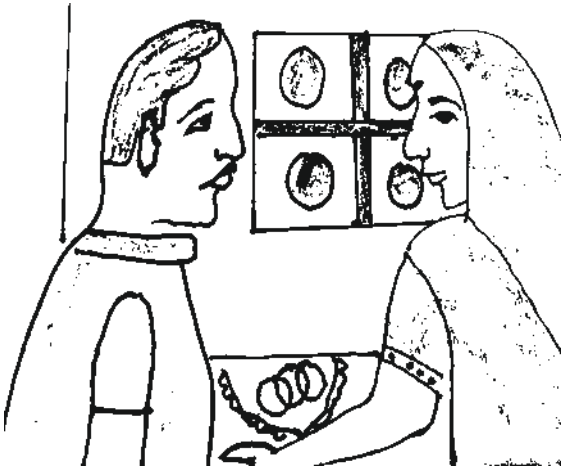

आगरा के सेंट्रल जेल के मुख्यद्वार पर सरिता बैठी हुई थी । उसकी गोद में उसका बेटा शशांक बार बार रो रहा था । वो उसे चुप कर रही थी परंतु वह चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था सरिता ने उसे हिलने डुलाने झूलाने सब करने का प्रयास किया। उसने दूध का बोतल कई बार उसके मुँह में डाली लेकिन वह न तो दूध पी रहा था और न ही वह चुप हो रहा था। सरिता की परेशानी उस बात पर और बढ़ गयी थी कि ऊपर से धूप बहुत तेज हो रही थी और झाड़ की छाया थी बेंच छोटी थी सरिता क्या कर सकती थी । सरिता ने अपने बच्चे को ले करके थोड़ा घूमना टहलना शुरु किया । बादलों की आसमान से छाया हुई लेकिन वह छाया थोड़ी देर बाद चली गई। तब तक वह बच्चा रोने से चुप रहा किन्तु जब वह छाया पुनः समाप्त हो गया तो फिर रोने लगा। सरिता बच्चे से कहती है बेटे तेरे ऊँपर से जब तेरे पापा की ही छाया जेल में चली गयी है तो अब तू किस छाया की बात सोच रहा है। अब तो यह छाया आनी जाती थी। जब सरिता अपने बच्चे को दुलार पुचकार रही थी कि तभी बच्चे की एक बार फिर झलक उछल पड़ी और बच्चे ने शांत होकर के अपनी मां को देखा और मां को देख करके बच्चे की मां भी कुछ आस्वथ्य हुई और तभी आवाज आई कि तरुण से मुलाकात करने जो लोग आये हैं वो भीतर आ जायें । सरिता ने अपने हाथ का बैग उठाया और तरूण से मिलने चली गयी । तरुण को जेल से बाहर लाया गया और गेट पर बैठा दिया था। तरुण ने सरिता से कहा तुम ठीक तो हो न सरिता के आँखों से आंसु बह रहे थे वह बोली मैं ठीक हूँ ये कैसे कह सकती हूँ क्यूंकि जब तुम नहीं तो फिर साथी

के बिछड़ने के बाद जहां पति न हो, स्वामी न हो वहाँ पर कैसे ठीक हो सकती हूँ ।

तब तरुण ने कहा अब मेरी आशा ही छोड़ दो क्योंकि अब मुझे कोई बचाने वाला नहीं है । मेरे लिये अब मालूम होना चाहिये की फांसी की सजा घोषित हो चुकी है । जब फांसी की सजा घोषित हो तब तुमसे मिलने की पुनः कैसे सोच सकता हूँ । सरिता ने कहा क्या आज की मुलाकात हमारी आखरी है ? यह मुलाकात आखरी तो नहीं कह सकता हूँ परन्तु अब हमारे सम्बंध सुधर तो नहीं सकते है। सरिता ने कहा सुधरना भी नहीं चाहिये। गहरी सांस लेकर तरूण ने कहा हमारी तुम्हारी किस बात की लड़ाई थी । सरिता ने कहा हमारी लड़ाई बिलकुल नहीं थी लेकिन तुमने हमारी नानी की जब जान ले ली पैसों के लिये। तुम कहते तो मैं पैसे तुमको दिलवा सकती थी । मेरे पास बहुत सारे साधन थे लेकिन तुमने मेरी नानी को सोने की अंडा देने वाली समझ करके और एक बार में ही पूरा सोना निकलने की कोशिश कर ली थी जबकि सोना तो नहीं मिला और उलटा रहने के लिये जेल का ये कमरा मिला । अब तुम इसमें रहोगे और मैं तुम्हारे नाम पर रोती रहूंगी। तरुण ने कहा सचमुच में सरिता वह दिन कैसे था मैं कह नहीं सकता हूँ मेरे अंदर जूनून क्यूँ सवार हो गया मैं कह नहीं सकता हूँ । मैंने ज्यादा मदिरा पी ली थी इसलिये नशे में जो कुछ होना था हो गया पर तेरी नानी को मारना तो नहीं चाहता था। सरिता ने कहा पैसा कुछ ऐसा ही होता है।

जिस पर आदमी अपने सारे नाते को भूल जाता है। तुमने शराब का नशा किया, तुम पर पैसे का नशा चढ़ा था। देखो सरिता मैं तुमसे एक बात कह देना चाहता हूँ जिस बात पर मैं रोज रोना रोता हूँ उस बात पे फिर रूलाना चाहते हो, मैंने पैसे के लिये नहीं की किन्तु हत्या शराब के नशे में किया हूँ ये सब तुम्हारे लिये आज क्यों सोच आ रही है । तरूण को फिर आँखों से आंसु आ गये और रोने लगा। सरिता ने कहा अब इन घरियाली आंसु बहाने से कुछ नहीं होता है । मैंने उस समय कहा था कि तुम सबसे पहले जो शेयर का काम कर रहे हो और जल्दी करोड़पति बनना चाहते हो ये सपना तुम्हारा ठीक नहीं है । मैं आधी रोटी, सुखी रोटी खा सकती हूँ। परंतु मैं जल्दी करोड़पती बनने की बात नहीं सोच पाती हूँ लेकिन तुमने शीघ्रता से करोड़पति बनने की बात सोची और ये करोड़पति बनने की बात बहुत सारे लोग सोचते हैं और सोच करके वो कुछ ऐसे काम करते हैं या तो वे लॉटरी लगाने लगते हैं या शेयर बाजार में घुस जाते हैं या तो फिर वो किक्रेट के सट्टा में चले जाते हैं।

तभी तरुण बोले सरिता मैं चारों में गया हूँ। मैंने सट्टा भी लगाया, शेयर बाजार में भी लगाया सबकुछ किया। सचमुच में मेरी यह आकांक्षा थी मेरी बीबी करोड़पति की बीबी कहलाये । मैंने जो कुछ भी किया तेरे लिये किया अपने लिये नहीं । सरिता ने कहा तुम

जो कुछ बोल रहे हो वो सिर्फ तुम मुझे भावुक करने की बात कर रहे हो। मैं अब भावुक होने वाली नही हूँ क्यूँकि मैं सब जानती हूँ कि मैंने कितने बार तुमसे कहा था कि करोड़पति बनना तो सही रास्ते से चल करके बनना चाहिये। बहुत सारे लोग सही रास्ते से चल करके करोड़पति बने। क्या रिश्वत खा करके भ्रष्टाचार कर करके कोई अधिकारी करोड़पति बन पाया है। पैसा आता है जैसे वैसे ही चला जाता है। खैर मैं तुम्हें प्रवचन देने नहीं आई हूँ मैं तो तुमसे मिलने आई हूँ। मैंने जब अखबार में पढ़ा कि तुम्हें फांसी हो गई है तो मुझे बहुत खुशी हुई क्यूंकि मैं अपनी नानी का बदला अवश्य लेना चाहती थी और नानी के बदले के लिये मैंने जो अपने बयान दिये हैं वह बयान बहुत काफी हैं। तरुण बोला यदि तुम्हें बदला ही लेना था तो मुझे जिन्दा रखके बदला लेती तो बहुत अच्छा होता क्यूंकि मैं तब पल-पल रोता अपने किये पर पछताता तो सच्चा बदला होता फांसी लग जाने बाद जब मैं मर जाऊंगा तो रो तो नहीं सकता हूँ सरिता बोली मैं ये सब नहीं जानती हूँ क्यूंकि मुझे वो दिन याद है जब मैंने तुम्हें तुम्हारा हाथ पकड़ा था जब हमारी वो कुसु म नाम की नौकरानी ने भी पकड़ा तो वो भी लहू लुहान हो गई थी, तुम्हारे पैर पड़े थे कि देखो बुजुर्ग माँ है, और बुजुर्ग माँ को मारा नहीं जाता है पर तुमने सिर्फ एक ही बात ठान ली थी कि वह मुझे पैसा दे और कितना चाहिये था मुझे पता नहीं की तुम जब देखो तब नानी माँ से पैसे ही तो मांगा करते थे और वह तुम्हें पैसे दे दिया करती थी लेकिन वह भी परेशान हो चुकीं थी आखिर वह तुम्हें कितने बार पैसे दे वह विचारने वाली बात थी लेकिन आपने ऐसा बिलकुल भी नहीं सोचा की एक कल्पवृक्ष जिससे हमेशा जो मांगते हैं वो मिलता है लेकिन वह कल्पवृक्ष को काट देने से कुछ भी मिलना बंद हो जाता है। एक खेत में लगे हुये चने के पौधे की भाजी होती है वह पत्ते की भाजी हमेशा निकलती रहती हैं तो वह हमेशा मिलती रहती है जब वह पूरा पेड़ उखाड़ करके फेंक देते हैं तो फिर कुछ भी नहीं मिलता है।

खैर जो भी हो मुझे खुशी इस बात की है कि तुम्हें फांसी हो रही है। तुम मेरे पति उस दिन से नहीं रहे जिस दिन से तुमने मेरी नानी मां की हत्या की। चिढ़ करके और गुस्से में तरूण ने बोला फिर तुम मुझसे मिलने आयी ही क्यों। तरूण की बात सुन करके सरिता ने कहा मैं तुम्हें उलाहना देने आयी हूँ और यह बताने आई हूँ कि तुमने जो कुछ भी किया है वह अच्छा कार्य नहीं किया है और ऐसे कार्य आज कोई दूसरा भी न करें उसके लिये मैंने बयान दिया था। मैं चाहती तो तुम्हें बचा सकती थी क्योंकि मजिस्ट्रेट साहब ने मुझे स्पष्ट कहा था कि तुम जो बोलेगी तुम्हारे बोलने पर ही इनकी जिंदगी टिकी है क्योंकि जो चश्मदीद गवाह है वो तुम और कुसुम हो। कुसुम ने तो मौन ले लिया था और कुसुम ने ये कहा की मेरे घर जमाई हैं और इन घरजमाई

को मैं हमेशा मानती आयी हूँ उसने उस समय तुम्हारे पैर भी पड़े थे जब तुम आकर सोफे पर पड़े थे। और नानी तुम्हारे लिये चाय भी लाई थी। नानी आपकी पसंद का मीठा भी लाई थी। आपके पसंद का नाश्ता भी लाई थी और तुमने नाश्ता भी किया था। तुमने अपने जेब से शराब की बोतल निकाली और पीने लगे तब नानी ने कहा था कंवरसाहब ये तुम ठीक नहीं कर रहे हो, तुम्हें अगर शराब पीना ही था तो और कहीं पिया करो मेरे घर न पिया करें। मेरे पास आकर छोटे नाती के सामने और जिसका नाम शशांक रखा है चन्द्रमा जैसा होता है उसके सामने तो मत पिया करो और तुमने कहा था नानी माँ बहुत हो गया मुझे आप पीने से रोका मत करो क्यूंकि मुझे ये शराब बहुत अच्छी लगती है अगर तुम मुझे रोकोगी तो मैं पिऊंगा और नहीं रोकोगी तब भी मैं पिऊंगा। क्यूंकि मैंने एक बार इसे मुंह से लगा लिया है तो फिर मैं इसे छोड़ नहीं सकता हूँ। नानी माँ ने कहा तुम्हें कसम मेरी है जो तुम मेरे यहाँ पियो क्यूंकि कंवरसाहब इस शराब ने न जाने कितने लोगों को बर्बाद कर दिया है। कितने लोग यह गटकते हुये मर गये हैं कि कोई मुझे छुड़ा दे इस बोतल की कैद से। कितने लोग शराब के कारण से अपने बच्चों को अनाथ बना देते हैं बर्बाद हो जाते हैं अच्छे से अच्छे रहीस मिट गये है तुम मुझे अगर अपनी नानी मानते हो तो आज से तुम कसम खा लो की मैं शराब नहीं पिऊंगा। पर तुमने क्या कहा था तुम्हें याद है क्या तुम जियो या मरो मैं शराब तो पिऊंगा ही और तुमने बोतल खोलने की कोशिश की थी। नानी ने वह शराब की बोतल पकड़ ली थी और ये कहा था कंवरसाहब मई मैं ये शराब की बोतल नहीं छोड़ सकती हूँ या तो मैं जिन्दा रहूंगी तो पिने नहीं दूंगी और जब मर जाऊंगी तो तब तुम पी सकते हो।

तब तुमने उसी गुस्से में और गुस्सा तुम्हारा झूठा था, सच बताओ बोलो ना, की तुम्हारा गुस्सा झूठा था तब तरुण ने आँखों के आंसू पोंछते हुये बोला सच कहती हो सरिता तुम की वह गुस्सा मेरा झूठा बनावटी था। शराब पीना मेरा बहाना था मुझे तो नानी को मारना ही था सच बात थी। बस यही मैंने गवाही दी है कि तुम इरादा करके आये थे कि घर से मेरे कितने बार तुम लड़े थे की नानी जब तक जिन्दा रहेगी तब तक मैं करोड़पति नहीं बन सकता हूँ। नानी की करोड़ों की जायदाद किस काम की ? क्या करेगी वह ? ये तुम कितने बार मेरे से झगड़ा किया ये अच्छा रहा की तुमने नानी को मारने से पहले मुझे नहीं मार पाये अन्यथा तुम मुझे भी मार सकते थे परन्तु नानी की जायदाद पर कोई हक नहीं था लेकिन मेरी माँ सुनीता का हक जरूर था लेकिन मेरी माँ सुनीता ने साफ कह दिया था कि कंवरसाहब मैं माँ के जिन्दा रहते इससे कुछ नहीं लुंगी मेरे नानाजी इस दुनिया को छोड़कर चले गये और नाना की खून पसीने की कमाई बैंक में रखी थी और जिसमें तुम दस्तखत कराना चाहते थे और तुम

दस्तखत करवा चुके थे और चोरी छुपे करवा चुके थे तुम मरने के बाद करवा भी लेते लेकिन एक बात ध्यान रखना तुमने सिर्फ पैसे के लिये ही नानी को दुनिया से अलविदा क दिया और ये तुम्हारा बहुत बड़ा पाप है और इस पाप के लिये तुम्हें कभी भी माफ नहीं करूंगी। इसलिये मैंने गवाही दी है और नानी की आत्मा स्वर्ग में जरूर मेरे लिये कह रही होगी की मेरी एक नातिन थी जिस नातिन ने सच्चाई को सबके सामने रख दिया। तरुण बोला आज भी मैं सचमुच में जेल में सोचता रहता हूँ कि मैंने तो गलती तो बहुत बड़ी की है परन्तु इतनी बड़ी भी नहीं की मुझे फांसी की सजा दी जाये। सरिता ने गहरी सांस ले करके कहा कि तुम अपने पाप का अब प्रायश्चित करो ताकि तुम अपने प्रायश्चित के आंसु बहा करके एक पाप कटा सको क्यूंकि जब जब आंख से आंसु बहे है तब तब मन निर्मल हो जाता है रोना भी एक बहुत अच्छी चीज होती है आप रोये तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा मैं सोचूंगी जो इस जनम में ही अगर तुम्हारे पाप कट गये तो उस जनम में तुम्हें कोई अच्छा स्थान मिल सकता है लेकिन वैसे तुम्हें स्वर्ग मिलने वाला तो नहीं हैं यह भी जानती हूँ। सरिता की बात सुन करके सूखे हुये आंसुओं के साथ तरूण ने कहा कि अब शायद मुलाकात का समय समाप्त होने वाला होगा अभी कोई आने वाला ही होगा जो आपको और मुझे अलग अलग कर देगा तो सरिता ने कहा हम तो उस दिन ही आपसे अलग हो चुके हैं क्यूंकि जिस दिन आपके मन में पैसे की दरिंदगी आई थी और पैसा ही सिर्फ आपके साथ था और उस दिन ही मैंने कहा था कि काश मैंने तुमसे तलाक ले लिया होता क्यूंकि तुमने दहेज में भी पैसे की मुराद भी रखी थी और मुझे कितना प्रताड़ित किया दहेज के लिये और परिवार न टूटे इसलिये मैंने तुम्हारे कोई भी कहीं भी कोई बात घर से बाह नहीं जाने दी और बोली तुमने प्रताड़ित किया था कि नहीं किया था ? और तरुण ने शिर हिलाते हुये सरिता की बात को स्वीकार कर लिया।

और सरिता की बात को स्वीकार करते हुये सच में सरिता अब मैं जिंदगी के आखरी पड़ाव में खड़ा हूँ और मुझे तो फांसी होना निश्चित है और तुम्हारा खुश होना भी निश्चित है। तब सरिता ने कहा कि मैं एक ही बात सोच रही हूँ कि किसी को गोली मारने से बदला नहीं लिया जा सकता है काश मेरे पास पिस्तौल होती तो उस समय मैं तुम्हें गोली मार देती। पर यह दिन नहीं आया नहीं तो मैं भी अभागन आज जेल में होती। मुझे बचा लिया अच्छी दुआ देने वाले ने और न अब आखरी अपने सपने को देखिये। जब सरिता और तरुण की पति पत्नी की चर्चा चल ही रही थी कि इतने में पहरेदार आया और बोला चहिये उठिये अब आपका समय समाप्त हो चुका है। सरिता ने तभी कहा ॐ शांति भगवन इनको सद्बुद्धि दे, पाप इनके धुले और ये स्वर्ग में जा करके अच्छी स्थिति प्राप्त करें। ॐ शांति, ॐ शांति।

हमारे गौरव

आचार्य आर्यानंदी

ज्ञान, ध्यान, तप में रत श्रमण संस्कृति की रक्षा तथा प्राचीन तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा व संवर्धन के लिये आचार्य श्री आर्यनन्दी जी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। आपका जन्म 28 फरवरी 1907 को महाराष्ट्र के मराठवाड़ा संभाग में ठोरकीन ग्राम में हुआ पिता श्री लक्ष्मणराव औ माता श्रीमती कृष्णाबाई ने अपने इस पुत्र का नामकरण किया शंकर। वे दिगम्बर जैसवाल जैन थे।

बालक शंकर ने कक्षा 12 तक शिक्षा प्राप्त की। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से आगे अध्ययन न कर सके। अध्ययन के पश्चात निजाम सरकार के कस्टम ऑफिस में पेशकर के पद पर कार्य करने लगे। सेवाकाल में उन्हें कई प्रलोभन मिले पर वे धर्म और न्याय के पथ पर अडिग रहे। सेवानिवृत्ति के उपरान्त तो धर्मध्यान में संलग्न हो गये।

धार्मिक संस्कार और श्रमणों को संगति ही आपके वैराग्य में निमित्त बनी। वैराग्य भाव से सम्पन्न हो दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि गये। वहां विराजमान आचार्य श्री समन्तभद्र जी महाराज से 13 नवम्बर सन् 1959 को मुनि दीक्षा अंगीकार की। तब से निरन्तर धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय व मनन किया।

मुनि श्री मराठी, अंग्रेजी, ऊर्दु, गुजराती, संस्कृत और हिन्दी भाषा के ज्ञाता थे। मुनि श्री स्वाध्याय प्रेमी, विद्वानों के प्रति अनुरागी थे। आपने अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, मंदिरों के जीर्णोद्धार के ऐतिहासिक कार्य किये। आपने लगभग 30,000 कि.मी की पदयात्रा कर संकल्प को पूर्ण किया।

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में तीर्थरक्षा शिरोमणी आचार्य आर्यनन्दी महाराज का 7 फरवरी 2000 को सांयकाल 7.20 पर सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया।

मन की शुद्धि के लिये आवश्यक कार्य

❊ प्राचार्य डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद ❊

संसार का प्रत्येक प्राणी हर समय कर्म कर रहा है। कर्म के अनुसर कर्म बंध भी कर रहा है संसार में कर्म ही सबसे बड़े बलशाली हैं। क्योंकि ये किसी भी संसारी प्राणी को नहीं छोड़ते। भगवान आदिनाथ स्वामी, पांच पांडवों सहित अनेक तपस्वियों ने भी कर्म के अनुसार फल भोगा। अतः व्यक्ति को बंधनों से मुक्त होने के लिये पुरुषार्थ करना चाहिये। धर्म हमें यह शिक्षा देता है कि हम कर्म बंधनों से मुक्त कैसे हो सकते हैं। कर्म बंधनों से मुक्त होने से पूर्व यदि यह जान लेते हैं कि हमें कर्म बंधन रूप आश्रव को ग्रहण नहीं करना है तो उसका ज्ञान सार्थक हो जाता है।

तत्त्वार्थ सूत्र के छठे अध्याय में यह बताया है कि मन वचन और काय के द्वारा आस्त्रव बंध होता है। अतः सर्वप्रथम मन को संभालना जरूरी है मन दो रूपों में हमारे सामने आता है किसी का मन अच्छा होता है तो किसी का मन बुरा। दोनों स्थितियों के लिये पूर्व उपार्जित कर्मों की प्रमुख भूमिका होती है अतः यदि अशुभ कर्मों से बचना है तो सर्व प्रथम देव पूजा, भगवान की भक्ति करो और यह भावना रखो कि मेरे द्वारा किसी का बुरा (अहित) नहीं हो।

श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है-

असशंय महाबाहो मनो दु रनिग्रहं चलम।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च ग्रह्यते।।

हे अर्जुन ! इसमें संदेह नहीं है कि मन चंचल है और उसे वश में करना कठिन है किंतु अभ्यास तथा वैराग्य के द्वारा मन वश में किया जाता है इसका तात्पर्य यह है कि मन को भी वश में करके परिवर्तित किया जा सकता है इसके लिये दो कार्य जरूरी हैं प्रतिदिन भगवान की भक्ति अर्थात् पूजन, भजन तथा शुद्ध सात्विक भोजन (शाकाहारी भोजन) हम प्रतिदिन सच्चे देव की पूजा कर उनका गुणानुवाद करें। गुणों की आराधना भजन के माध्यम से भी होती है। अतः कुछ लोग भगवान की भक्ति में अभिषेक, पूजन, पाठ करते हैं तो कुछ लोग भगवान की भक्ति के लिये आध्यात्मिक एवं धार्मिक भजनों का सहारा लेते हैं दोनों से मन शुद्ध रहता है या मन की शुद्धि होती है राग, द्वेष, बैर, विरोध छल ईर्ष्या से रहित निर्मल आत्म गुणों की प्राप्ति करना मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिये और यह तभी संभव है जब मन शुद्ध होगा। अतः मन की शुद्धि के लिये सर्वप्रथम वीतराग परमात्मा की भक्ति, भजन, पूजन आवश्यक है।

मन की शुद्धि के लिये बाहरी क्रियाओं में सबसे पहले भोजन शुद्धि पर जोर दिया गया है। कहा गया है - कि जिसका भोजन शुद्ध नहीं उसका मन शुद्ध नहीं। हमारा भोजन शुद्ध सात्विक एवं शाकाहारी हो ताकि हमारा शरीर हृष्ट पुष्ट तथा निरोगी बना रहे। जो व्यक्ति अंडा, मांस, मछली का सेवन करते हैं। उनका जीवन तामसिक होता है तामसिक व्यक्ति का मन शुद्ध नहीं होता है। हिंसा के भाव तामसिक भोजन की उपज है। ऐसे व्यक्ति में हिंसा और जीव दया नहीं

रहती। अतः वह किसी से भी लड़ाई, झगड़े करता है जीव की हत्या करने पर भी उसे पश्चाताप नहीं होता। अतः वह अशुभ कर्म बंध कर दुर्गति का पात्र बनता है अतः भोजन की शुद्धता पर भी ध्यान रखना चाहिये।

आज हमारे देश और समाज का बदलता खान पान चिंता का विषय बनता जा रहा है। जैन समाज भी इससे अछूता नहीं है। रात्रि भोजन का फैशन बढ़ रहा है। अखाद्य और अपेय वस्तुओं में रूचि बढ़ रही है जो चिंता का विषय है। यदि रात्रि भोजन, बिना छना जल काम में लेंगे तो मन शुद्ध कैसे होगा। मन की शुद्धि नहीं होगी तो मोक्ष कैसे प्राप्त होगा। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है-

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं, कल्याण तुम्हारा कैसे हो।

कर्म बंधनों से मुक्त होने के लिये भोजन और भजन दोनों जरूरी है। अतः शुद्ध भोजन रखें ताकि शरीर से तपस्या कर सकें और भजन करें ताकि मन की पवित्रता बनी रहे। दोनों में जब एकरूपता आयेगी तभी मन पवित्र रहकर मोक्ष की शह आसान बनायेगा तथा कर्म बंधनों से भी मुक्ति मिलेगी।

कविता

पंथ मुक्त हो तीर्थ

डॉ. निर्मल शास्त्री

भाव बने निर्मल जब तेरे, पाप ताप का शमन करें।
पंक नहीं पंकज बन करके,
आत्म विकास सदैव धरें ॥1॥
आत्म शुद्ध बनाकर के, किया स्वयं कल्याण।
दिया जगत को तारने, तीर्थ परम स्थान ॥2॥
पुण्य ऋद्धि से है भरा, देता पावन धाम।
निर्मल भाव से यात्रा, करता काम तमाम ॥3॥
दया भरे शांति करें, हरे अमंगल रूप।
ऐसे पुण्य नियोग से, बनता तीर्थ स्वरूप ॥4॥
तीर्थ संस्कृति केन्द्र है, तीर्थ ध्यान के स्रोत।
तीर्थ परम पावन करें, तीर्थ मूल के स्रोत ॥5॥
तीर्थ पुण्य की श्रेष्ठता, हैं पावनता के धाम।
वस्तु व्यवस्था हेतु, करें न काम तमाम ॥6॥
ये इतिहास के रूप हैं, संभाल रखो या आज।
बनते कल प्राचीन हैं, देत पुरातन राज ॥7॥
तीर्थ हमारे प्राण हैं, बने मार्गदर्शक अहा।
इनके संवर्धन करने, का दायित्व है महा ॥8॥
तीर्थ कर्म नाशक रहे, मोक्ष परम रस धाम।
निर्मल तारक तीर्थ हैं, हरे ताप दुष्काम ॥9॥
तीर्थ सुरक्षा लक्ष्य हो, तीर्थ धर्म पहचान।
तीर्थ मार्गदर्शी रहें, ये है अपनी शान ॥10॥
करें बसाहट पास में, लघु उद्योगों का रूप।
शिक्षा उन्नत दे सतत्, तीर्थ सुरक्षा इह रूप ॥11॥
श्रद्धा मन में तीर्थ की, उपकारी हों भाव।
पंथ ग्रंथ का भेद नहीं, उत्तम यही प्रभाव ॥12॥

पंडित प्रवर डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य

❊ सुषमा जैन, भिलाई ❊

बुन्देलखण्ड की पावन-भूमि अपने आँचल में सदा से रत्न समेटे हुये है। यहाँ की हीरे की खदानें विश्व विख्यात हैं। इसी तरह यहाँ की माटी ने हमें कई ऐसे अनमोल जीवन्त रत्न दिये जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बुन्देलखण्ड को ही नहीं वरन् संपूर्ण राष्ट्र को गौरवान्वित किया। एक छोटे से गाँव पारगुंवा (जिला सागर) ने जैन समाज को एक ऐसा ही अनमोल रत्न डॉ. पन्नालाल जी साहित्यचार्य के रूप में दिया। पांच मई 1911 श्रीमान गललीलाल जी के घर में बहुत खुशियाँ थी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जानकी बाई जी ने एक बालक को जन्म दिया नाम रखा गया पन्नालाल। यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करते हुये बचपन से ही पन्नालाल जी में प्रतिभा में दर्शन होने लगे। उन्होंने अपना अध्ययन सदैव मेहनत एवं लगन से किया। प्रारंभ से ही उन्होंने छात्रवृत्ति प्राप्त की जो उनके आगे के अध्ययन में सहायक रही।

सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड में ज्ञानज्योति को प्रकाशित करने वाले आध्यात्मिक संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी के प्रिय शिष्यों में पंडित पन्नालाल जी की गिनती होनें लगी। इस पावन भूमि के लाड़ले सपूत श्री गणेश प्रसाद जी की प्रेरणा से स्थापित ''सतर्क सुधा तरंगणी दिगम्बर विद्यालय'' (मोराजी) में प्रवेश लेकर पंडित जी ने संस्कृत का अध्ययन किया। शास्त्री, काव्य तीर्थ, साहित्याचार्य की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करीं। साहित्याचार्य शब्द तो मानों पंडित जी का दूसरा नाम ही हो गया। अनेक विद्वानों मनीषियों से अध्ययन करने वाले पंडित जी बड़ी ही श्रृद्धा से अपने गुरुजनों का स्मरण करते थे। विद्वान मनीषी श्री पन्नालाल जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय सरस्वती सेवा में लगाया। लगभग बावन वर्षों तक अध्यापक से लेकर प्राचार्य तक अनेक पदों पर हते हुये सागर (मोरा जी) में अध्ययन कराया। साथ ही '' दिगम्बर जैन महिला आश्रम सागर'' में बहुत वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया। आपने लगभग तीन पीढ़ियों को लगातार शिक्षित करने का कार्य इतनी कुशलता से किया कि कई विद्यार्थी संयम के पथ पर अग्रसर हो आत्म साधना में रत हैं। आदरणीय पंडित जी को धर्म गुरुजनों के गुरु कहकर सम्मानित किया जाता रहा, उन्होंने अनेक आचार्य भगवन्तों, मुनिराजों, आर्यिकाओं सहित त्यागी जनों को धर्म ग्रंथों का अध्ययन कराया। और उनके कई शिष्य अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में रहे। उनके सभी शिष्य उन्हें सदैव श्रद्धा से नतमस्तक हो स्मरण करते हैं। पंडित जी ने संस्कृत एवं हिन्दी को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया। जिनेंन्द्र देव के 1008 नामों का वर्णन 1008 पदों की रचना कर जिनेन्द्र देव को नमन किया। जैनागम का काई भी विषय आपकी लेखनी से अछूता नहीं रहा। सन् 1973 में पंडित जी को ''महाकवि हरिचन्द्र'' एक अनुशीलन विषय पर सागर विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी. की उपाधि से विभूषित किया गया। डॉ. पन्नालाल जी ने सम्यक्त्व चिन्तामणि, जीवंधर चम्पू, श्रीपाल चरित सहित 19 मौलिक कृतियों का सृजन किया। आदि पुराण, उत्तर पुराण, पद्म पुराण, हरिवंश पुराण, स्तुति विद्या, तत्त्वार्थसार, मूलाचार, समयसार (पूज्य वर्णी जी की टीका सहित) सम्यक्त्व कौमुदी, करूणानुयोग दीपक भाग 1-2-3, द्रव्यानुयोग प्रवेशिका, यशोधर चरित, सर्वोपयोगी श्लोक संग्रह, आचार्य शिवसागर स्मृति ग्रन्थ, सागर में विद्यासागर,

सहित 73 ग्रंथों जिनमें कुछ ग्रंथों अनुवाद एवं कुछ ग्रंथों का संपादन किया। आदरणीय पंडित को राष्ट्र एवं समाज द्वारा अनेक अवसरों पर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय सम्मान सन् 1960 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा उनको अद्वितीय साहित्यिक प्रतिभा के लिये सम्मानित किया। सन् 1969 में तत्कालीन राष्ट्रपति महामना श्री वी वी गिरि के करकमलों से आदरणीय पंडित जी को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संभागीय शिक्षक सम्मान समारोह समिति जबलपुर में सम्मानित किया गया। नगरपालिका सागर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मध्यप्रदेश शासन के तत्कालीन उद्योग मंत्री श्री परमानंद भाई पटेल द्वारा सम्मानित हुये। साहित्यिक पुरस्कार '' श्री गणेश वर्णी पुरस्कार'' श्री पंडित जी को उनकी मौलिक कृति ''सम्यक्त्वचिंतामणि'' पर ''श्री महावीर पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। ''विद्यावारिधि पुरुस्कार'' अहिंसा इन्टरनेशनल सोसाइटी सोसाइटी दिल्ली द्वारा ''डिप्टीमल जैन पुरस्कार'' अखिल भारतीय जैन समाज द्वारा सागर में ''अभिनंदन ग्रंथ'' समर्पित किया ''श्रमणभारती पुरुस्कार'' सतना जैन क्लब द्वारा पिसनहारी मढ़िया जबलपुर में '' श्री जगदीशराय प्रतिभा सम्मान'' श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला से भट्टारक भुवन कीर्त्ति स्वामी जी के करकमलों से सागर में '' गोमटेश्वर विद्या पीठ पुरस्कार'' सहित अनेक अवसरों पर आदरणीय पंडित जी सम्मानित हुये।

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि मुझे मेरे बचपन से ही आदरणीय पंडित जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। वह वृक्ष की तरह बड़ा परिवार होते हुये भी पंडित जी सदैव ऐसे विरक्त होकर रहे उन्हें देखकर मुझे पंडित प्रवर श्री दौलतराम जी की छहढाला की यह पंक्ति याद आ जाती है। '' गेही पै गृह में न रचे ज्यों, जल तैं भिन्न कमल है'' आदरणीय पंडित जी ने जीवन के अंतिम पड़ाव में लम्बे समय तक श्री वर्णी गुरुकुल पिसनहारी मढ़िया जबलपुर में मुख्यतः व्रती जनों को अध्ययन कराया। इस बीच मुझे उन से कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सान्निध्य में बैठकर चर्चा करने का अवसर मिला। एक बार उन्होंने गदगद हृदय से वर्णी जी का अपने प्रति स्नेह और वात्सल्य बताते हुये एक संस्मरण सुनाया।

पंडित जी बोले कि जब मैंने अपनी पहली संस्कृत की कविता लिखी और पूज्य वर्णी जी को सुनाई, उन्होंने मेरी कविता सुनकर कुछ नहीं कहा, मैं थोड़ा निराश हो गया। अगले ही दिन मंदिर में हो रही सभा में वर्णी जी बोले भईया बालक पन्नालाल ने संस्कृत में कविता लिखी है आप लोग सुनो। मेरी कविता सुनकर सभी ने बहुत सराहा एवं वर्णी जी ने प्रसन्नता से शुभाशीष देकर मुझे प्रोत्साहित किया।

जनवरी 2001 में जबलपुर मढ़िया जी में ही हम लोगों ने उनके अन्तिम दर्शन किये। उस दिन बहुत देर तक परम पूज्य विशुद्धमति माताजी की चर्चा करते रहे। माताजी अध्ययन काल में महिला आश्रम सागर में उनकी शिष्या रहीं। पंडित जी ने कईबार उनके दर्शन की इच्छा करी पर अस्वस्थ्यता की वजह से न जा पाने की बात भी कही। मैंने सहज ही पूछ लिया कि बब्बा जी अब आपका स्वास्थ्य कैसा है। तो जोर से हँसे और बोले ''हम तो सिद्धों के समान अचल हो गये हैं'' उस हँसी में उनकी न चल पाने की पीड़ा सहज ही झलक उठी। थोड़ी देर रूक कर हँसते हुये बोले- '' नई कभंऊ कभंऊ चल सोउ लेत हैं जब कोऊ चला देते हैं।'' आज जब वे हमारे बीच नहीं है उनके चले जाने से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। उनकी यादें सरल व्यक्तित्व, शिक्षा के क्षेत्र में उनके अवदान और उनकी रचनाओं के माध्यम से उन्हें सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

नवागढ़ पुराक्षेत्र का सर्वेक्षण एवं अन्वेषण

❊ डॉ. बृजेश रावत, लखनऊ ❊

उत्तरप्रदेश का ललितपुर क्षेत्र पाषाणकाल से ही मानव की निवास स्थली रहा है। यहाँ पुरापाषाण कालीन मानव सभ्यता के साक्ष्य प्रचुरता में प्राप्त होते हैं। कालानतर में 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य इस क्षेत्र की महत्ता अनेकानेक जैन मंदिरों के निर्माण से बढ़ गई। 13वीं सदी तक चन्देल शासन काल में यहाँ सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक, धार्मिक स्थापत्य कला, गढ़ एवं किला निर्माण, अनेकानेक तालाब, बावड़ी और मंदिर निर्माण से यह क्षेत्र अत्यन्त उन्नति को प्राप्त हुआ है। जिससे इसकी पहचान विश्व पटल पर होने लगी।

यहाँ के प्रमुख पुरास्थलों में देवगढ़, सीरोन, सीरोनखुर्द, दुधई, चांदपुर, जहाजपुर, बानपुर, नवागढ़, मदनपुर इत्यादि हैं।

नवागढ़ राजस्वग्राम नावई के सर्वेक्षण एवं अन्वेषण हेतु मुझे यहाँ के निर्देशक आदरणीय ब्रह्मचारी जयकुमार जी निशांत का आमंत्रण मिला। तदनुसार मैंने मेरे मित्र डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, शोधार्थी श्री अजितसिंह एवं स्थानीय पुरातत्व प्रेमियों के साथ यहाँ की पुरा सम्पदा एवं पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया।

सर्वप्रथम मन्दिर परिसर स्थित मूल जिनालय एवं उसमें स्थापित भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं एवं नवीन प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का अवलोकन किया। जिनमें प्रतिहार काल, चन्देलकाल एवं वर्तमान काल की प्रतिमाओं को अत्यंत व्यवस्थित ढंग से वेदियों में विराजमान किया गया है। जमीन से 10-12 फुट नीचे भूगर्भगृह (भौंयरा) का जीर्णोद्धार (आधुनीकरण) प्राचीनता का संरक्षण करते हुये कुशलता से किया गया है। ब्र. निशांत जी एवं नवागढ़ समिति को बहुत बहुत बधाई जो उन्होंने प्राचीन संस्कृति को व्यस्थित सुरक्षित एवं संरक्षित किया है।

समिति के पदाधिकारियों ने राजस्व रिकार्ड में इस क्षेत्र को 1347 ईसवी सन् में उल्लेखित बताया है, जो अत्यंत महत्वशाली है। मन्दिर परिसर में एवं विशाल कक्ष में प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं, पुरावशेषों, वास्तुखण्डों एवं वास्तुखण्डों पर उत्कीर्ण कलाशिल्पों को संकलित व संरक्षित किया गया है। सामान्यतः 7वीं सदी से 12वीं सदी तक की विशालकाय, पद्मासन व कार्योत्सर्ग तीर्थंकर प्रतिमाओं के साथ यक्ष-यक्षी, गंगा-यमुना, तोरण, आमलाक शिखर कलश भी संरक्षित गये हैं।

यहाँ के मानस्तंभ एवं सर्वतोभद्र में उपाध्याय बिम्बों के साथ स्वतंत्र रूप से भी उपाध्याय शिलाखण्ड प्रचुरता में संकलित हैं, जिनमे शास्त्र लिये, पिच्छी चिह्न वाले, ध्यान मुद्रा वाले बिम्ब विशिष्ट हैं। एक बिम्ब पर संवत् 1188 तथा मानस्तंभ पर संवत् 1203 अंकित है।

यहाँ प्रचुरता में विभिन्न मुकुटों वाले शीर्षों में राजाओं, महारानियों, सामंतों की प्रमुखता है। विविध वेशभूषा वाले, श्रेष्ठी एवं श्रावकों के पृथक बिम्ब भी संकलित हैं। विभिन्न स्तंभों

कलावशेषों, खासकर धड़ इत्यादि की पहचान से काल निर्धारण दुरुहकार्य है फिर भी इसे निरन्तर अभ्यास, अनुभव एवं ज्ञान से निर्धारण का प्रयास किया गया।

मैं यहाँ के पदाधिकारियों एवं आदरणीय निशान्त जी को बधाई देना चाहता हूँ जो उन्होंने एन.आर.एल.सी. लखनऊ के निर्देशक डॉ. व्ही.बी. खरवड़े एवं श्री के.पी. पाण्डे के निर्देशन में तीन बार प्रशिक्षणार्थियों की टीम बुलाकर इन पुरावशेषों का संरक्षण कराकर सैकड़ों वर्षों के लिये संस्कृति एवं पुरातत्व को सुरक्षित किया है।

यहाँ देश के ख्याति प्राप्त इतिहासविदों पुरातत्त्वविदों एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञविदों को आमंत्रित करके उनके योग्यता अनुसार उनका लाभ लेते हुये उस पुरा पाषाणकालीन क्षेत्र का अन्वेषण एवं सर्वेक्षण कराया गया है। जिनमें डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, कृमिरेट्स प्रोफेसर काशी हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी, डॉ. गिरिराज कुमार आगरा राष्ट्रीय सचिव, रॉक आर्ट सोशायटी ऑफ इंडिया, पं. नीरज जी सतना, डॉ. के.पी. त्रिपाठी, श्री हरिविष्णु अवस्थी इतिहासविद्, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन, श्री महावीर जी प्रशस्तिवाचक, डॉ. ए.पी.गौडे झांसी, डॉ. एस.एस सिन्हा वाराणसी अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ विद्वान् हैं।

प्रागैतिहासिक साक्ष्यों में पाषाणकालीन उपकरण यथा-खुरचनी, बेधक, हस्तकुठार, पेबुल, साइकोलिथ, चॉवर आदि मिट्टी एवं काष्ठ उपकरण, धातु निर्मित्त, खिलौने, सुराही, वर्तन, रथ एवं जीवनोपयोगी सामग्री को प्रचुरता में संकलित एवं संरिक्षत किया गया है जो प्रशंसनीय है।

चंदेल कालीन बावड़ी जिसके जीर्णोद्धार की प्रक्रिया में उसमें अभिलेख, मूर्तिखण्ड, कलाशिल्प, धातु-पाषाण उपकरण तीर्थंकर प्रतिमा भी प्राप्त हुई हैं।

मेरा विश्वास है यदि इस पुरातनक्षेत्र का गंभीरता से अन्वेषण किया जाये तो यहाँ और कई पुरावशेषों कलाशिल्पों के द्वारा जैनधर्म के साथ सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक धरोहर प्राप्त होगी।

ब्र. निशांत जी जैनदर्शन के विद्वान होने के साथ पुरातत्त्व प्रेमी भी हैं। आपने जैनधर्म के साथ पुरातात्त्विक धरोहर को संरक्षित करके महान् उपकार किया है। आपने बताया इस क्षेत्र पर डॉ. अर्पिता रंजन दिल्ली ने शोधकार्य वीर कुंवरसिंह विश्व विद्यालय आरा से सम्पन्न किया है। श्रीमती अर्चना जैन, एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह एवं संजय ऑठिया, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर भी इस क्षेत्र के साहित्य, इतिहास एवं पुरा सम्पदा पर शोधकार्य में संलग्न हैं।

यहाँ एक भव्य संग्रहालय की स्थापना होने जा रही है जिसमें न मात्र जैनधर्म से संबंधित पुरानिधियों का बल्कि पाषाणकालीन उपकरणों एवं जैनेत्तर पुरा सामग्रियों का भी प्रदर्शन पूर्ण मनोयोग से किया जायेगा, जो उनकी धर्म सहिष्णुता का अप्रतिम उदाहरण होगा।

इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग
डॉ. शकुन्तला मिश्रा, राष्ट्रीय पुनर्वास विश्व विद्यालय
लखनऊ (म.प्र.)

कविता

बालयती मनहर काया

(वानवासिका छन्द)

बाल यतींद्रा मन हर काया।
ब्रह्म स्वरूपा विजित कषाया॥
जग कल्याणी परम विरागी।
बोध हमें दो हम सब रागी॥

इन्द्र निहारे सहस्र दृगों से।
तृप्ति न पायी इन नयनों से॥
सूरज चन्दा सब शरमायें।
शुभ्र ज्योत्सना अनुपम पाये॥

जन्म लिया था जब मिथिला में।
पुष्प फलों से तरूवर झूमें॥
बैर तजे थे वनचर प्राणी।
चहुं दिशों में मधुर सुवाणी॥

चन्द दिनों में तप बल जागा।
मोह पिशाची डरकर भागा॥
अक्षय ज्ञानी तिमिर नशा के।
दुःख निवारे भविक जनों के॥

सार्थक नामी प्रभु जिन मल्ली।
काम विजेता अघ मल धोली॥
मंगल दायी पद कमलों में।
ध्यान लगा के स्वरस चखूं मैं॥

क्रमांक-27 वरिष्ठ नागरिक

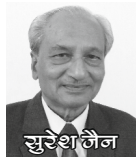

वसीयत के अभाव में उत्तराधिकार का फैसला

लोग अपनी वसीयत इसलिये बनवाते हैं ताकि निधन के बाद उत्तराधिकार को लेकर किसी तरह का कानूनी विवाद न हो तथा उनके उत्तराधिकारी को भी किसी तरह के विवादों में फंसना न पड़े। बहुत कम लोग हैं जो वसीयत बनबाते हैं। आकड़ों के अनुसार भारतवर्ष में केवल 2 प्रतिशत लोग भी वसीयत नहीं बनवाते। केवल अत्यधिक धनाढ्य ही वसीयत बनवाते हैं। क्योंकि उनके विशाल बिजनेस से कई लोग जुड़े हो सकते हैं।

वसीयत न होने के कारण सम्पत्ति पर उत्तराधिकार साबित करना बेहद जटिल, लम्बा वक्त लेने वाला तथा एक महंगी प्रक्रिया साबित हो सकता है। भाई-बहिनों तथा करीबी रिश्तेदारों में सम्पत्ति पर अधिकार को लेकर विवाद शुरु हो सकता है, यह भी हो सकता है कि वसीयत के न होने की वजह से ही किसी व्यक्ति द्वारा सारा जीवन मेहनत से जुटाई सम्पत्ति गलत हाथों में चली जाये।

वसीयत न होने पर सम्पत्ति किसकी होगी- यदि किसी व्यक्ति का निधन वसीयत किये बिना होता है, तो उत्तराधिकार कानून में तय नियमों के अनुसार उसके पारिवारिक सदस्यों के मध्य उसकी सम्पत्तियों का विभाजन होता है।

हिन्दू, जैन, बौद्ध या सिख होने पर- यदि व्यक्ति 4 भारतीय धर्मों हिन्दू, जैन, बौद्ध या सिख धर्म से तालुक रखता है तो उनकी सम्पत्तियों का विभाजन उनके उत्तराधिकारियों के बीच हिन्दु उत्तराधिकार कानून-1956 (Hindu Succession Act 1956) के तहत होता है।

क्लास वन उत्तराधिकारी- इस कानून के तहत क्लास वन उत्तराधिकारी को अन्य उत्तराधिकारियों के मुकाबले प्राथमिकता मिलती है। क्लास वन उत्तराधिकारियों में बेटा, बेटी, विधवा मां, दिवंगत बेटे या बेटी के बेटे, विधवा बहू दिवंगत बेटे के दिवंगत बेटे या बेटी का बेटा, दिवंगत बेटे की विधवा बहू शामिल हैं। वर्ष 2006 मे संशोधन के बाद इस सूची में और परिजन जोड़े गये हैं। जिसमें दिवंगत बेटी की दिवंगत बेटी का बेटा या बेटी, दिवंगत बेटी के दिवंगत बेटे का बेटा, दिवंगत की दिवंगत बेटी की बेटी शामिल हैं।

क्लास टू उत्तराधिकारी- इसमें 1 श्रेणियां है। पिता को श्रेणी एक में रखा गया है जबकि भाई-बहिन, पोती का बेटा या बेटी आते हैं। गौरतलब है कि क्लास टू की दूसरी तथा तीसरी श्रेणी के 4 उत्तराधिकारी क्लास में शामिल हैं। पिता और पोती या नाती के बेटे को क्लास बन में रखा गया है।

गोदली संतान मान्य परंतु सौतेली नहीं- इस कानून के तहत भाई और बहिन की मतलब विधी सम्मत भाई-बहिन हैं। इसमें गोद ली गई संताने भी शामिल हैं लेकिन सौतेली नहीं। मरने

वाले की मौत के बाद पैदा होने वाली संतान भी विधी सम्मत मानी जायेगी। बेटी का विवाहित होना या न होना उसके अधिकार में कोई अंतर पैदा नहीं करेगा।

महिला की वसीयत न होने पर- हिन्दू उत्तराधिकार कानून- 1956 के तहत यदि किसी महिला की मौत अपनी वसीयत किये बिना हो जाती है, तो उसकी सम्पत्ति के बंटवारे का प्रावधान है। इस महिला की सम्पत्ति सबसे पहले बेटे, बेटी और पति में बंटेगी। इनमें उसके दिवंगत बेटे या बेटी की संतानों को भी शामिल किया जायेगा। दूसरे स्थान पर यह बंटवारा पति के उत्तराधिकारियों के बीच होगा। तीसरे स्थान पर महिला के माता-पिता आयेंगे। चौथे स्थान पर उसके पिता के उत्तराधिकारी होंगे।

महिला को विरासत में मिली सम्पत्ति पर उत्तराधिकार- यदि महिला को यह सम्पत्ति या ससुर से विरासत में मिली है, तो महिला की कोई संतान या दिवंगत संतान के बेटे-बेटी न होने पर सम्पत्ति उसके पति के उत्तराधिकारियों के बीच बांटेगी। सम्पत्ति के विरासत में मिलने से मतलब है कि यह सम्पत्ति उस महिला को बिना वसीयत के किसी उत्तराधिकार में मिली हो, न कि किसी वसीयत अथवा उपहार में मिली हो।

समान विभाजन- सम्पत्ति विभाजन के मामलों में कानून के तहत बच्चों में भेदभाव नहीं किया जाता है। जैसे कि ऐसा नहीं हो सकता है फिक्स डिपॉजिट बड़ी बेटी की शिक्षा के लिये दे दी जाये और कार को उसका ज्यादा प्रयोग करने वाले छोटे बेटे को दे दिया जाये। वसीयत न होने पर सम्पत्तियों को उनका समान विभाजन होगा। जहां विभाजन सम्भव न हो जैसे कि कार तो उसे बेचकर मिलने वाली रकम को समान रूप से सभी वारिसों को दिया जायेगा।

मुस्लिम होने पर:- यदि किसी मुस्लिम व्यक्ति का निधन वसीयत के बिना होता है, तो उसके उत्तराधिकारियों का फैसला मुस्लिम पर्सनल लॉ के आधार पर होगा। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वह मुस्लिम धर्म के किस वर्ग से संबधित है। इस्लाम में व्यक्ति अपनी कुल सम्पत्ति में से केवल एक तिहाई की वसीयत कर सकता है। बाकी की दो तिहाई सम्पत्ति को अनिवार्य रूप से वैध बारिसों में विभाजित करना होता है। शरिया कानून के अनुसार, यह विभाजन इस बात पर निर्भर करता है कि वह बोहरी, मैमन, शिया या सुन्नी में से किस वर्ग से संबधित है।

नोट- वसीयत के अभाव में उत्तराधिकार का फैसला एक टेड़ी खीर है। इस अर्टिकल को लिखने से पहले जिन-जिन पुस्तकों का अध्ययन किया उसके हिसाब से बड़े लम्बे चौड़े कानून हैं, तथा बड़ी लम्बी न्याय प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। बड़ी दूर-दूर की रिश्तेदारी को भी उत्तराधिकार में शामिल होने का अधिकार है। इन सब झंझटों से अपने वारिसों को बचाने के लिये, समय रहते अपनी वसीयत जरूर तैयार करवायें व उसे रजिस्टर्ड करवायें।

प्रथम ऋतु स्त्राव में विलम्ब (प्रायमरी ऐमेनोरिया)

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

ऋतु स्त्राव एक सामान्य प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रिया है, यह कोई रोग नही है। इसकी शुरुआत का मतलब कि शरीर का संभावित गर्भावस्था के लिये तैयार होना है। इसके साथ ही यह तन व मन को सौंदर्यता प्रदान करता है व नारीत्व गुण उत्पन्न करता है।

बच्चियों में 12 से 15 वर्ष की उम्र के भीतर स्त्राव होता है किन्तु बदलती जीवनशैली के चलते अवस्था बड़ी हो जाने पर योग्य उम्र हो जाने पर कभी प्रथम बहुत स्त्राव में विलम्ब हेाता है ऐसी अवस्था में इसे प्रथम ऋतु स्त्राव में विलम्ब कहते हैं। इसके रूक जाने से निम्न अनुसार लक्षण दिखाई देते हैं।

लक्षण- 1. बच्चियों के शरीर का रंग तेज और कांतिपूर्ण होने के बदले मैला व फीका हो जाना व शरीर दुबला होना तथा पैरों में सूजन आदि कितने अस्वाभाविक लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

2. किसी-किसी वक्षस्थल पर स्त्री के चिन्ह बिलकुल भी नहीं उभरते सीना समतल रहता है।

3. किसी-किसी की तो मूछों की रेखा व स्वर में परिवर्तन होने लगता है व आवाज भारी हो जाती है।

4. आलस्य, अंगडाई आना, नींद भरी रहना, जी मचलाना, चिड़चिड़ापन या बार-बार मिजाज का परिवर्तन होना।

5. पेट, पीठ, सिर तथा रीढ़ में भयानक दर्द तथा पेल्विक भाग में भारीपन व नीचे की ओर खिंचाव, कलेजा धड़कना, हाथ पैरों में जलन व कभी-कभी बुखार व हरारत होना, भूख न लगना, आँखों में आंसू व जलन होना।

6. किसी-किसी को सभी स्त्रियोचित बाह्य लक्षण बनने के बाद भी ऋतु स्त्राव नहीं होता है तो दर्द, भारी शरीर, नाक से खून आना, सांस फूलना, कमर के पास दर्द, पेट के तल में नीचे की ओर दर्द, जांघों के भीतर दर्द होना।

7. किसी किसी को अन्य अंगों में घाव होकर नाक, आँख, मुंह, गुर्दा आदि अन्य द्वार से रक्तस्त्राव होना, सूजन, मिचली, पान की गडबड़ी, त्वचा रोग व कभी कभी मृगी की तरह अकड़न आदि अनेक बीमारियाँ दिखाई देती हैं।

कारण- 1. भरपूर पोषण युक्त खाद्य पदार्थों युक्त भोजन न मिलने से शारीरिक दुर्बलता होना या किसी रोग के कारण या आलसी आराम दायक जीवन विताना, सख्त कब्ज होना आदि।

2. जीवन शक्ति की कमजोरी से स्नायुकेन्द्रों में इतनी शक्ति नहीं होती कि डिम्बाशय (ओभरी) को इस योग्य बना सके।

3. खांसी, श्वास रोग होना, गले में जख्म, स्वरभंग व गले में दर्द बना रहना।

4. खुली हवा में एकाएक ठंडी हवा लग जाना, बहुत ठंडे पानी में पैर रखकर काम करना।

5. शारीरिक और यांत्रिक विकार की वजह से डिम्बाशय व जरायु का पूरी तरह से विकसित न होना या जरायु का एक दम अभाव, सतीच्छद (Hymen) का न टूटना या छेद न होने के कारण ऋतु स्त्राव बन्द रहता है।

क्रोध, मानसिक तनाव, मद आदि किसी वजह से रूधिर की उत्पति न होना, वेशगत दोष आदि।

सावधानियाँ -1. पौष्टिक भोजन व सहज में पचने वाले दुध, जौ के आटे की रोटी, फाइवर युक्त भोजन, मीठे फल अंगूर, खजूर आम आदि मौसमी फलों का सेवन करना, पर्याप्त मात्रा में पानी पीना।

2. यथा शक्ति परिश्रम करना, सोने व जगने का समय तय करना व सुबह शाम 30-45 मिनिट तक घूमना लाभदायक होता है शुद्ध वायु का सेवन करना, योग करना आदि।

3. गरिष्ठ पदार्थ तथा मसालेदार भोजन का त्याग, चाय काफी अधिक नहीं पीना कोलड्रिंक्स व फास्टफूड पदार्थों का सेवन से परहेज रखना।

4. पैर गर्भ व सूखे रखना, सर्दी लगने से बचना, तलपेट गरम रखना एवं इसके उत्पत्ति के कारण हैं उनके प्रति सचेत रहकर आवश्यक सावधानी रखना।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज से आराम मिलता है किन्तु किसी तरह की यांत्रिक विकार हो ऐलोपैथी पद्धति से विभिन्न प्रकार की जांच व इलाज कराना आवश्यक है।

उक्त कारणों को ध्यान देकर समझ जाना चाहिये की प्रकृति अपना काम करना चाहती है, पर किसी कारण वश वह सफल नहीं हो रही है। यह नहीं समझना चाहिये की स्त्राव न होने के कारण बीमार बल्कि यह ध्यान रखना चाहिये की बीमार होने के कारण उसे रक्त स्त्राव नही हो रहा है। ऐसी अवस्था में बच्चियों के अभिभावकों को मित्रवत व्यवहार करके समझाकर इलाज करना उचित होता है। बच्चियों के व्यवहार में परिवर्तन, उदास रहना गुमसुम होने पर विशेष ध्यान रखना आवश्यक है एवं बच्चियों को अपना समस्या अभिभावकों को निसंकोच बताना चाहिये।

यदि केवल स्वास्थ्य की गड़बड़ी से विलम्ब हो रहा या जांच आदि से दोषों का कारण ज्ञात होने पर होम्योपैथी चिकित्सापद्धति बहुत प्रभावशाली व कम खर्चीली व बिना दुष्प्रभाव रहित रहती है जिनमें प्रमुख रूप से फेरम फास, पल्सेटिला, सीपिया, सल्फर, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, नक्स, नेट्रम म्यूर, चायना, फास्फोरस, कैल्केरियाफास, आर्सेनिक, कोनियम आदि इलाज के पूर्व अनुभवी समर्पित चिकित्सक की देखरेख में इलाज करना चाहिये।

समय पर इलाज व सावधानियाँ से काम हो जाता है।

हास्य तरंग

1. एक व्यक्ति बाल कटवाकर घर आकर पत्नी से कहता है देखो मेरे छोटे-छोटे बाल में तुमसे दस साल छोटा लग रहा हूँ। पत्नि-यदि आप गंजे हो जाते तो बच्चे लगते, तभी उनका बच्चा बोल उठा हाँ मम्मी मुझे खेलने के भाई मिल जाता।

2. एक सहेली दूसरी सहेली से- शादी के बाद घर का खर्च बहुत बच जाता है, हाँ सच है मेरे पति भी शादी के बाद से बहुत कम खाने लगे है।

3. दोस्त- डॉक्टर से आप खुद सिगरेट पीते हो व दूसरों से कहते हो कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। डॉ. यदि मैं नहीं पियेगा तो उसके बुराई कैसे पता चलेगी ? दोस्त तो डॉक्टर साहब पोस्ट मार्डम करने वाले डॉक्टरों को क्या करना पड़ता है।

4. जज साहब जब फैसला लिखते हैं तो उनका चपरासी टेबिल को हिलाता है क्योंकि जजब साहब पहिले बस कन्डक्टर थे।

5. बस दुर्घटना ग्रस्त होकर खाई में गिर गई जिसका ड्राइवर बहादुरी से कूदकर बच गया। पत्रकार ने ड्राइवर से दुर्घटना होने का कारण पूंछा तो ड्राईवर ने कहा-पहिला मोड़ आया, बस मोड ली दूसरा मो आया फिर बस मोड़ ली, तीसरा मोड़ आने के पहिले बस मोड ली थी।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

स्वादिष्ट नूडल्स

❊ सामग्री ❊

चावल का आटा 1 कटोरी
नमक स्वादानुसार
पानी
शिमला मिर्च, लाल, हरी, पीली 1 कटोरी
बीन्स 1/2 कटोरी सब्जियों को लंबा कटकर लेना है।

❊ मसाले ❊

लाल मिर्च की पेस्ट 3 चम्मच, कश्मीरी लाल मिर्च साबुत उसे गर्म पानी में भिगायेंगे फिर पानी अलग करके मिक्सी में पीसे फिर छान कर उसमें नमक और नींबू रस डालेंगे।

नींबू का रस- 1 चम्मच
काली मिर्च 1/4 चम्मच
नमक- सौंठ - 1 चम्मच

❊ विधि ❊

चावल के आटे में नमक डालकर आटा गूंथेगे। फिर गैस पर कढ़ाई रखेंगे उसमें पानी डालेंगे और बड़ा छलनी उल्टा रखेंगे या स्टीमर में स्टीम की प्लेट रखेंगे। फिर चावल के आटे को सेव (भुजिया) बनाने की मशीन में डालकर सेव की तरह स्टीमर पर निकाले और ढंक दे। और 5-7 मिनट स्टीम करें फिर निकाल कर ठंडा कर लें।

एक कढ़ाई में तेल रखें और उसमें बीन्स डालें और पकायें फिर शिमला मिर्च डालें उसे भी पकायें अब इसमें मिर्ची का पेस्ट डालिये नींबू रस, नमक, काली मिर्च पाउडर, सौंठ पाउडर डालें अच्छे से हिलायें व मिलये फिर नूडल्स डालकर मिक्स करें इसे एक बाउल में निकालकर परोसें। तैयार है नूडल्स।

बाल कहानी

धर्मादेवी का दान

राजस्थान भारत देश का कला संस्कृति की दृष्टि से बहुत संपन्न प्रदेश है आन-बान और शान के लिये भामाशाह का नाम सबसे ऊपर रखा जाता है इसी राजस्थान में एक सीकर जिला भी है इस सीकर जिले में छोटा सा गांव गावड़ी है जिस गावड़ी के आस पास आठ गाँव और ढानियां भी हैं आवागमन के साधन कम ही हैं इस कारण से नीम का थाना दूर अस्पताल एक गंभीर मरीजों को पहुँचाना बड़ा कठिन काम होता है इस गाँव के सरपंच शेरसिंह तौमर थे उनके पिता को अचानक अटैक आ गया उन्हें नीम का थाना अस्पताल पहुँचाने के लिये कोई भी एम्बुलेंस नहीं मिली और अंततोगत्वा शेरसिंह के पिता की मृत्यु हो गयी सारा गांव शोक में डूब गया।

जब सूबेदार का अंतिम संस्कार हो रहा था तो गांव के सभी लोग एक ही चर्चा कर रहे थे कि काश एम्बुलेंस मिल जाती तो हो सकता था हमारे सरपंच के पिताजी बच जाते सभी गाँव के लोग मिलकर एम्बुलेंस के लिये चंदा इकट्ठा करने की बात सोच रहे थे तभी शेरसिंह ने कहा कि आप सभी लोग मेरे साथ गाँव में चलें और जिस दिन शोक निवारण की सभा होगी उसी दिन एम्बुलेंस भी होगी शेरसिंह की बात मानकर सभी लोग गाँव में पहुँचे और चबूतरे पर जाकर बैठ गये और उन सभी ने तय किया कि हम मृत्यु भोजन न करके एम्बुलेंस की ही बात करेंगे ताकि कोई भी एम्बुलेंस के अभाव में सूबेदार जैसा हमसे न बिछड़ सके।

सरपंच के पिता सूबेदार का जब शोक निवारण हो रहा था तभी उनकी माँ धर्मादेवी ने कहा कि एम्बुलेंस के लिये कोई चंदा नहीं करना हमारे पास पेंसन व बचत के दस लाख रूपये हैं इस धन से एम्बूलेंस खरीद ली जायें, सब लोगों ने धर्मा देवी के दान की बहुत प्रशंसा की और एक दिन एम्बुलेंस गाव में खड़ी हो गयी।

संस्कार गीत

नारी का सम्मान

मानवता का अनुमान यही नारी के सम्मान
प्रेम और करूणा बसती है
माँ ममता श्रद्धान से

1.
नारी का अपमान जहाँ हो
वहाँ राक्षस बसते हैं
नारी को जो छोटा माने
झूठे उनके रिश्ते है
नारी में है ममता सारी
सृष्टि के अभियान से

2.
हिल मिलकर हम रहना सीखें
रिश्तों का संसार है
हल खोजें हम आपस में ही
यह जीवन व्यवहार है
सच्चे मन से रहना सीखें
नर नारी सम्मान से

3.
मत भेदों का होना निश्चित
मन भेद नहीं बन पायें
तंज कसे न कभी किसी पर
समता मन बस जाये
धैर्य बने साथी अंतर का
तज झूठे अभियान से

बाल कविता

अच्छी भावना

सदा भावना सच्ची रखना
क्षमा सभी को करते रहना
बैर विरोध क्रोध मत करना
मैत्री भाव सभी पर रखना
बदले की नहीं रहे भावना
सहन शीलता धर्म साधना
धीरज से सब बनते काम
करे उतावली बिगडे काम
बदला नहीं किसी से लेना
क्षमा दान बस सबको देना
क्षमा वीर का आभूषण है
क्रोध रंक सबका दूषण है
काम क्रोध का त्याग तुम करना
सदा भावना अच्छी रखना

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

पिण्डरई- आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज के करकमलों से उनकी ही जन्मस्थली पिण्डरई में 30 अप्रैल 2023 को एलक प्रियतीर्थसागर जी महाराज की मुनि दीक्षा हुई । जिनका नाम मुनि श्री प्रियतीर्थसागर जी महाराज रखा गया।

बद्रीनाथ अष्टापद- आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज के करकमलो से ब्र. सुनील भैया विदिशा की एलक दीक्षा 30 अप्रैल 2023 को हुई । जिनका नाम एलक मेरूदत्त सागर महाराज रखा गया।

भागलपुर- मुनि श्री विशल्यसागर महाराज जी के करकमलों से भागलपुर बिहार में ब्र. रामप्यारी देवी सराय अकिल की क्षुल्लिका दीक्षा 24 मई 2023 श्रुत पंचमी के अवसर पर हुई । जिनका नाम क्षुल्लिका धवलश्री माता जी रखा गया।

फिरोजाबाद (उ.प्र.)- आचार्य श्री सुरत्नसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. मनोरमा दीदी की क्षुल्लिका दीक्षा 24 मई 2023 श्रुत पंचमी के अवसर पर हुई। जिनका नाम क्षुल्लिका आदिश्री माता जी रखा गया।

आगामी दीक्षा

डीमापुर (गुवाहाटी)- आर्यिका गरिमामती माताजी के करकमलों से 1 जून 2023 को ब्र. उर्वशी दीदी को आर्यिका दीक्षा दी जावेगी।

समाधिमरण

तिलवारा घाट जबलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्री अनुनयमती माताजी का समाधिमरण 24 मई 2023 को श्रुत पंचमी के दिन तिलवारा घाट जबलपुर में आर्यिका श्री दुर्लभमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

दिल्ली-आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री समत्वसागर महाराज जी का समाधिमरण जागृति एनक्लेव दिल्ली में 21 मई 2023 को हुआ।

सागर-आचार्य श्री विरागमसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री विदेहश्री माताजी का समाधिमरण श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सागर में 12 मई 2023 को हुआ।

पंचकल्याणक सम्पन्न

इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विमलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 26 अप्रैल 2 मई तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर तुलसीनगर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बंडा, ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न हुआ । जिसमें मुनि श्री विमलसागर महाराज जी, मुनि श्री अनंतसागरजी, मुनिश्री धर्मसागर जी का दीक्षा दिवस की अवसर पर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की पुरानी पिच्छी प्राप्त करने वालों का सम्मान किया गया।

इंदौर- मुनिश्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कल्पतरू महातीर्थ का पंचकल्याणक 28 अप्रैल से 3 मई तक प्रतिष्ठाचार्य पवन दीवान के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

इंदौर- मुनिश्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर सेटेलाईट का पंचकल्याणक 10 मई से 15 मई 2023 तक सम्पन्न हुआ।

इंदौर- मुनिश्री आदित्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर अंबिकापुरी का पंचकल्याणक 20 मई से 24 मई 2023 को पं. संजय सरस चिचोली बैतूल के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

श्रुत पंचमी महोत्सव सम्पन्न

इंदौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के 56वें दीक्षा दिवस एवं संस्कार सागर के रजत 25वें वर्ष के उपलक्ष्य में 3 स्वर्ण रथ के साथ 81 रथों का रथ प्रवर्तन स्कीम नं. 78 से प्रारंभ होकर पंचबालयति मंदिर तक मुनि श्री मार्दव सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें रमेश जैन (क्लर्क कॉलोनी), दीपक जैन परदेशीपुरा, वीरेन्द्र जैन, हर्ष जैन, धर्मेन्द्र जैन, आजाद मोदी, प्रदी जी टड़ा, आनंद जैन बजरंगनगर, पाठशाला परिवार, गौरव जैन, भरत जैन, चेतन बाकलीवाल, पुष्पा प्रदीप कासलीवाल, राजकुमार पाटोदी, एम.के. जैन, मनोज बाकलीवाल, राजीव सेठी, धर्मेन्द्र जैन, निशांत जैन, नीरज जैन, अमित जैन, रविन्द्र जैन, अरविन्द जैन, सुरेश जैन बैंकवाले, अभिषेक जैन गढ़ाकोटा, विनोद जैन, जितेन्द्र जैन, राकेश विनायका, अमित कासलीवाल, हंसमुख गांधी, सुशील पांडया, अनिल जैनको, राजू अलवेला, राजेश जैन लारेल, मुलायमचंद जैन, अभय जैन, राजेश जैन, प्रियदर्शी जैन, विकास जैन, प्रिजेश जैन, अक्षय कासलीवाल, नरेन्द्र जैन, राजकुमार जैन, राजेन्द्र जैन जैसीनगर, आर.सी. जैन साहब, डी.के. जैन, अरविन्द जैन, मनोज जैन ट्रस्टी, अनिल पांडया, एम.के.जैन, मनीष जैन बीना वाले, आशीष जैन बीनावाले, सुधीरे जैन पथरिया वाले, विनोद जैन, नीरज बाई, सुरेन्द्र जैन, शीतल जैन, लाभचंद जैन, सुभाष गोध, दिलीप बाकलीवाल, राजकुमार जैन, विकास जैन, अरूण फणीस, नरेन्द्र जैन, निलेश जैन, बाबू जैन, अरविन्द जैन, अभय जैन, अरविन्द जैन, अनुभव जैन, संतोष जैन, अभिषेक जैन अमित जैन, राजेन्द्र जैन, डॉ. शैलेष जैन, आदित्य जैन आदि ने भाग लिया । दोपहर में श्वेताम्बर मत समीक्षा परिप्रेक्ष्य में ऑनलाईन वाक्युद्ध कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें संयोजक ब्र. जिनेश मलैया इंदौर एवं डॉ. मुकेश जैन विमल, तथा संचालन एलक श्री सिद्धांत सागर जी ने किया । तथा डॉ. भागचंद्र जैन भास्कर नागपुर, ब्र. पं. विनोद कुमार रजवांस, ब्र. डी. राकेश जैन सागर, डॉ. जयकुमार जैन,डॉ. संगीता मेहता, ब्र. जयकुमार निशांत, डॉ. श्रेयांश जैन, पं. रतनलाल जी जैन आदि ने भाग लिया।

वर्ग पहेली 284

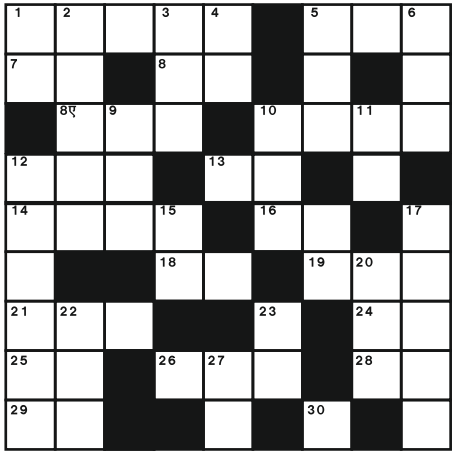

बाये से दाये

1. आचार्य विद्यासागर जी महाराज के गुरु -4
5. पिता -4
7. टेलीग्राम, उच्चस्वर -2
8 बीता हुआ, भूतकाल -3
8ए. वामन, विष्णु का अवतार -2
10. राजस्थान का एक शहर, आचार्य श्री विद्यासागर का दीक्षा शहर -3
12. प्रकृति रूप, साथ उत्पन्न -2
13. यूरिया उर्वरक -2
14. नित्यता, एक अस्त्र -3
15. इच्छानुकूल स्वेच्छा चारिता -2
18. गाड़ी, शकट, गजरथ -3
19. कर्म, कार्य काम -3
21. कार्योत्पत्ति स्रोत, करण उपकरण -3
24. विजय, जीत -2
25. दुःख -3
26. आ.श्री विद्यासागर जी की मां का नाम -3
28. अंधकार अंधेरा -2
29. भाव, तत्त्व रसनेन्द्रिय का विषय -3
30. कौन (संस्कृत) -3

ऊपर से नीचे

1. जानने वाला, ज्ञान करने वाला, ज्ञान का कर्ता -2
2. ऐसी सवारी जिसे मनुष्य खींचता हो -2
3. आकाश, आसमान -3
4. लीन संलीन -2
5. कमल नीरज -3
6. संकट आपत्ति -3
9. भीड़ -3
10. विनय सम्मान (उर्दु) -3
11. सुमेरू पर्वत -2
12. आचार्य विद्यासागर के भ्रातृ शिष्य -6
15. जल, पानी -2
17. आचार्य विद्यासागर जी माँ का नाम आर्यिका पद में -5
20. चाँदी, रूप्य -3
22. थकान, श्रम जन्यकष्ट -3
23. पतिव्रतनारी, देवी -2
27. ठंडापन, मंद का भाव -2

वर्ग पहेली 283 का हल

1 आ	2 चा	3 सां	ग	■	4 ध	र	5 से	6 न
7 ग	त	■	8 ज	9 ह	र	■	10 ना	म
11 म	क	र	■	12 ज	ति	■	■	■
■	■	■	13 त	म	■	14 गो	15 दा	म
16 स	17 मा	चा	र	■	18 व	च	न	■
19 म	न	■	■	20 अ	स	र	■	21 भू
22 वा	व	न	■	23 व	म	■	24 स	त
या	■	25 ग	ह	न	■	26 सा	ह	ब
27 ग	ग	री	■	28 त	ह	■	29 न	ली

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

गमन उडाण

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पुरुस्कार वितरण

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंत्र 2022-23
का पुरुस्कार वितरण दिनांक 24 मई 2023 श्रुत पंचमी को
मुनिश्री मार्दवसागर महाराज जी के सान्निध्य में दिया गया।

प्रथम

श्रीमती पायल जैन, मंडीबामौरा
जिन्होंने 1500 में से 1496 अंक प्राप्त किये।
1,00,000/- रुपये तथा शील्ड
प्रथम पुरुस्कार गजेन्द्र जैन, गिन्नी ग्रुप इन्दौर की ओर से

द्वितीय

श्रीमती माधुरी विकास जैन, सिरोंज
जिन्होंने 1500 में से 1491 अंक प्राप्त किये।
51,000/- रुपये तथा शील्ड
द्वितीय पुरुस्कार आजाद मोदी, मोदी प्रिंटर्स इन्दौर की ओर से

तृतीय

बहन खुशी रजनीश जैन, लटेरी
जिन्होंने 1500 में से 1483 अंक प्राप्त किये।
31,000/- रुपये तथा शील्ड
तृतीय पुरुस्कार नीरज जैन, गजेन्द्र पब्लिकेशन दिल्ली की ओर से

चलो चले... चलो चले...

मुनिश्री
योगसागर जी महाराज

एलक श्री
सिद्धांतसागरजी महाराज

श्री शिरपुर जैन अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान का अतिशयकारी नगर हैं

यह तो दिगम्बरों का निर्विवाद तीर्थधाम हैं
इस तीर्थ की रक्षा के लिये आपकी उपस्थिति एवं यात्रा अहम् भूमिका रखती हैं
अत: आप शिरपुर तीर्थ अवश्य पधारे
माह या वर्ष में एक बार जरूर शिरपुर तीर्थ यात्रा करें।

निवेदक: श्री अंतरिक्ष
पार्श्वनाथ दिगम्बर संस्थान,
शिरपुर जैन एवं
श्री दिगम्बर जैन
सर्वोपयोगी धार्मिक न्यास

प्रतिक्षातुर: श्री दिगम्बर जैन तीर्थ रक्षा संघर्ष समिति एवं श्री अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवक संघ

संस्कार सागर पढ़िए क्लिक पर Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें – 0731–4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/05/2023, पोस्टिंग दिनांक : 03/06/2023